

प्रेमलता

करणीदान बारहठ



सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

© करणीदान बारहठ

प्रथम सम्स्करण अक्टूबर '६६

प्रकाशक
बारहठ प्रकाशन
केफाना
(नोहर थ्रीगगानगर)

वितरक
सूय प्रकाशन मन्दिर
बिस्मो का चौक
बीकानेर ।

मूल्य सात रुपये मात्र

मुद्रक
सत्यम् प्रिन्टर्स मुद्रक प्रिन्टर्स
बिस्मो का चौक,
बीकानेर ।

PREMLATA—A Novel by Karni Din Barhat
PRICE Rs 7 00

सभी सत्य है और सभी असत्य, यथार्थ भी है और
काल्पनिक भी । कितना निकट पहुँच पाया हूँ, यह आप
निर्णय लें ।

—करणीदान बारहठ

लेखक की अन्य कृतिया

• हिंदी साहित्य —

१ कलाई का धागा (उपन्यास)

स्वातन्त्र्योत्तर भारत के राजनीतिक जीवन की कुटिलता एवं धूर्तता का सजीव चित्र—मधुमती उदयपुर।

२ बडवानल (कविता)

सभी कविताओं में व्यवस्था, जीवन स्तर का अन्तर, विज्ञान, शिक्षा की दशा पर गंम धुली अभिव्यक्तियाँ हुई हैं—बानापन बीकानेर प्रकाशना।

• राजस्थानी साहित्य —

१ भर भर कथा

देश प्रेम की भावना की स्फुरणा, नारी जाति की प्रेरणा शक्ति, प्रेम भक्ति और सम्म-मूर्ति का दर्शन—प्रालोचना दिल्ली।

२ भिडियो—

बाल-साहित्य की दृष्टि से बारहठ जी की अपने प्रसार की यह पहली पुस्तक है—शाध पत्रिका उदयपुर।

३ शकुंतला राजस्थानी में महाकाव्य—

मोहिनी और लता को

-

प्रेमलता

प्रेमलता

१

मैं जिस गाव को च्छा करना चाहता हू वह पजाब और राजस्थान की सीमा पर बसा हुआ है ऐमा मैंने यही पर मानूम कर लिया था । नाम है जसपुरा । मुझे अपने नय पद की बड़ी खुशा थी । थोडासा दु ख था कि मैं गहर को छोडकर गाव म जा रहा था । आदेग पत्र लेकर घर आया तो महमूस हुआ कि जिन वस्तुआ से मुझे विशेष प्रेम था उनकी विरक्ति मेरे मन को सतप्त करगी । टबल फन' जिसका मैंने मन वर्षे ही खरीदा था बिजली का रेडियो जा मेरी इस साल की देन थी बिगप हृदय विदारक थी क्याकि गाव म बिजली नही थी । इनसे मिलन वाली चुगियाआ की चिन्ता जागी । किंतु मासिक बतन में पूरे मौ रुपये क अतर न गाव मे जाने को प्रेरित किया । टबल फन तो मैंने अपने एक मित्र को दे दिया । रेडियो बिक नही सका, अत साथ ही ले लिया । अन्य सामान मुझे छोडकर कहा जाता ?

राज कमचारा का सम्मान उसकी बौद्धिक क्षमता से नहीं किन्तु उसके पद की महत्ता तथा बतन स्तर से होता है । इसम भी बतन-स्तर स पद की महत्ता का स्थान ऊचा है । मैं यहां पर साधारण बल्क था जिसका

केवल 'डिस्पैच' का काम दे रखा था किन्तु अब मैं जिस पत्र पर जा रहा था उसके आगे 'आफीसर' तो लगा हुआ था और वेतन में भी अंतर, अतः मुझे खुशी न होने का कारण ही नहीं था।

मेरे सारे सामान आठ दस नग तो हो ही गये थे। मुझे बताया गया कि मुझे भादरा नामक स्टेशन पर उतरना होगा जहाँ से उक्त गांव निकटतम था केवल दस मील दूर। वहाँ से गांव तक बसें जाती है। आगे जाने की असुविधा नहीं है। रात का नाँ बजे वहाँ गाड़ी पहुँची। इस पद की प्राप्ति से मेरे दिमाग की सुई कुछ घूम गई थी। मेरे उठने बैठने तथा धोलने का लहजा भी बदल गया था। कुछ अफसराना सा लहजा ही कहिए आगया था। एक दो दिन में एक ही व्यक्ति में इस प्रकार का अंतर क्यों? यह उस समय मेरे भी समझ में नहीं आया था। भादरा स्टेशन पर गाड़ी ठहरी और मैं उतरा। मैंने आवाज दी 'कुली! कुली! स्टेशन पर कुली कहा? रोगनी भी पूरी नहीं थी। दो तीन मिट्टी के तेल की बत्तियाँ टिम टिमा रही थी। गाड़ी में घुसते हुए एक मुसाफिर ने कहा 'बादजी यहाँ कुली उली नहीं मिलेगा। अपने आप ही सामान ढाना पड़ेगा। आपका सामान कौनसा है? लग्नो मैं मदद कर दूँ। गाड़ी काफी ठहरगी। यहाँ इजिन पानी लेता है। सामान गाड़ी से जैसे तैसे नीचे उतर गया किन्तु यह सामान स्टेशन से बाहर कम जायेगा और कहा जायगा यह चित्ता घर कर गई। मैंने इधर उधर पूछा भी लेकिन कहीं किसी प्रकार का सहारा नहीं मिला। गाड़ी निक्लन के बाद स्टेशन मास्टर का बिगड़ कृपा से मेरा सामान स्टेशन के बाहर धमगाता मैं पहुँचा। छोटे स्थान पर इसान इसान के अधिक निकट जाना है। मैंने स्टेशन मास्टर के आदमी का आठ

आने दिए। घमशाता के पड़ित से एक कमरा लेकर रात बाटी।

सुबह के समय एक टक्की मिल गई और म टक्की स जसपुरा पहुंच गया। टक्की एक लम्बी चौड़ी इमारत के आगे ठहरी जिन पर 'राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जसपुरा' लिखा हुआ था। यह विद्यालय सड़क के गहिनी ओर था और बाईं ओर भी दो चाय की दुकान जिनको यहाँ की भाषा में 'ठावा' कहते हैं। मैंने अपना सामान उतारा। टिकसी वाले ने मेरे से हम आने लिए मेरी टिकट का और दस आने मेरे मामान के। टक्की वाले से रास्ते में सारी जानकारी ले ली थी। उसने मुझे ठावे पर ही सामान रखने की सलाह दी। ठावे वाले ने मुझ ऊपर से नीचे तक दावकर जानने की कोशिश की। उसका पहला प्रश्न था, आप स्कूल मास्टर बन कर आए हा क्या? यह प्रश्न उसके एक दो साल के अनुभव के आधार पर ही था। मैंने नहीं में उत्तर दिया। उसने दूसरा प्रश्न करने की हिम्मत नहीं की। ठावे पर रखी हुई एक बैग के पास सामान व्यवस्थित-सा करके जेब से हमाल निकाला जब की साफ किया और बठ गया। कुछ आराम की सात आई और मैंने एक कप चाय के लिए आडर दिया।

चाय वाले ने पानी बढाया और मेरे सम्बन्ध में जाने की उत्सुकता से एक सवाल और कर लिया, बाबूजी, आप यहीं आए हैं या आगे जाना है? मैं समझता था कि यह मेरे बारे में पूरी जानकारी करना चाहता था, किंतु मने प्रश्न के अनुसार ही उत्तर दे दिया कि मैं यही आया था। पानी की उबला हुआ देखकर उसने पत्ती डाल दी और एक और प्रश्न कर डाला, तो आप कौन से मोहद पर आये हो? यह उसका असली

प्रश्न था जिसका मुझे उत्तर गुरु मे ही देना चाहिए था ।
मैंने कहा 'फिल्ड आफिसर'

यह नाम उसके लिए बिल्कुल नया था । चाय वाला वैसे उन्न
म अधिक नदी था केवल २५-३० वर्ष के बीच म होगा किन्तु उसके
सामने कितने ही महकम और ग्रहलकार आए थे । उसके लिए यह कोई
नई बात नहीं थी । वह इतना ज़रूर जान गया था कि है तो यह
अफसर जसा कि मरे छोड़ते क नाम से पता चलता था किन्तु वह यह
नही समझ सक्ता कि यह अफसर कौनसे महकमे का है ।

उसरी चाय उपन गई । उसने दूध डाल दिया । दूध डालते
ही उसको थोड़ा अवकाश और मिला । उसने इस अवकाश का भी
लाभ उठाना ठीक समझा । एक प्रश्न और कर लिया क्या आप नहर
के महारम म आए है ? मैं इस सवाल से इतना और जान पाया कि
इम गांव म स्कूल के अलावा नहरी विभाग भी था किन्तु मुझे तो चाय
वाले का उत्तर देना था । मैंने उसे बतलाया कि मैं बीमा कम्पनी का
अफसर हूँ । इमी समय मुझे आभास हुआ कि मेरा पत्र नहर रेवेन्यू
तथा पुलिस क से अफसर का सा नहीं है । यह तो ऐसा पद है जिसम
मुझे घर-घर पटुचना है जन-जन को समझाना है और बीमे का
महत्व बताना है । इसलिए अपने काय का यही से प्रारम्भ करना
ठीक मगझ । चाय तयार थी । मैंने प्यासा हाथ म ले लिया और बीमे
की परिभाषा उसका महत्व और उसके सुपरिणामो पर प्रकाश डाला ।
चाय की बुझिया मुझे अपने महत्वपूर्ण काय म प्रेरणा देती रही ।
बीच-बीच म म चाय की भी प्रशंसा करता रहा । मने अपने कौंटरपट'

के लिए हम 'टैक्ट' की भी आवश्यकता समझते ।

'टन् टन् टन्' स्कूल की घटी बजो । घण्टा के बजते ही स्कूल
क छान भाग जैसे मुक्ति से बाह्याद की सहरे साकार हो गये हों ।
छाटे बच्चे बेचने में मस्त हो गए और बड़ों में से कुछ साथे दाव पर
आ गये । कुछ बालकों ने जोड़ा क बहल माग किया ने सिगरेट और
घुपचाप लेकर चलत बन । कुछ छात्र वहीं बैठ गए और चाय बनाने
का आदेश दिया । वे कभी कभी तिरछी नजर से मुन्हे देख भी जान
और साथ में अपना अपना अध्यापकों की समानता भी करत जात । मैं किसी
भी नाम से परिचित नहीं था जब मर लिए तो वह बीकलाहट हो
या । चाय पीने में विद्यार्थियों ने इसनिष्ठा शोभना की कि कुछ ही समय
बाद अध्यापकों के आन की आगवा थी । अध्यापकों के आन से पूर्व ही
छात्र अपने काम से निवृत्त हो गए । जून में ही मुन्हे कुछ पेट काट पड़ने
हुआ करने से ही सायियों की एक टानी नजर आई जो सीधी दाव पर
ही आ रही थी । समीप आने पर सबने प्रत्यक्ष दृष्टि में मर कर
दवा और फिर मर पड़े हुए सामान के ढेर की ओर । मेरा पैर और
कोर क गहरी लिबास और फिर ढेर सा सामान दल कर एक दृष्टि में
ही क यह तो निश्चय में ही चूके थे कि मैं भी उनकी तरह मर
भूमि पर कुछ समय बिताने आया था जिसका आनन्द उन्हें क
अध्यापन की उक्ति में हुआ जो इस प्रकार थी, 'मैं था, मैं था, मैं था'
फने हैं ।' मैं इस उक्ति में समझत में पड़ गया कि मैं था
की नौबत कब आ गई । मेरे इस आन के पछतावे को छात्रों का
आगावे थी जिनको मैं इस सामान के समान ही था था था ।

उनका हमने मुम्बरात चहरे से तो कहीं यह आभास नहीं हा रहा था कि व भी यहा फसे हुए थे, किन्तु इस अट्टहास के नाचे एक लम्बो फनी हुई मुर्नगी की एक परत थी जिसको मैं उस समय नहा देख पाया था क्योंकि वह समूह की मस्तो के नाचे गहरी दबी पडा थी। शाम के घाटर के साथ ये उसी वक पर बैठ गए जिस पर मैं बना था। ठहाने भी मेरे पर प्रश्ना की बौद्धार कर दी। उसस मुझ यह अवश्य प्रतीत हुआ कि मेरे जमे व्यक्ति के ध्यान पर उनके हृदय में कितनी उत्सुकता और प्रमत्तता थी जैसे कि उठो की टोली का एक व्यक्ति उनसे अनजान से विस्तृत हुआ था जिसे उसमें सम्मिलित होने का अवसर मिला हो।

अध्यापक कम में मेरे प्रति पूरा महानुमति हुई। मेरे जिन में अनका प्रश्न था उस छात्र की तरह जो घर बैठकर तयारी करता है जिसका कोई अध्यापक नहीं है और उसका हल के लिए मुद्दर प्रश्न में जाकर किसी कोने में छिपे हुए व्यक्ति गुरु से समाधान का सन्तोष प्राप्त करता है। मैं सभी गुरु एक समय के लिए घर भी गुरु बन गए। मैंने अपने सभी प्रश्नों के उत्तर वा लिए जो सब तरफ सफाई माता के हाथ तक हम नहीं हा पाये थे। मुझ जान हो गया कि यही रहन के लिए वक्ते महान नहीं मिलेंगे। लगभग सभी महान बन्दे थे। पानी की व्यवस्था एक कुण से होना है जो गांव के बीच में है। पानालाने के लिए पाना पाना बोना नीकर मिलना बकल कठिन नहीं किन्तु सम्भव है। रागी स्वयं ही पाना पडेगा। हरी गांव-मज्जी नहीं मिलगी। मन्त्रा का एक दो चुनौतें हैं जहा महा मन्त्रा महाने में एक दो बार मन्त्रा है जिस पर अध्यापकण दूक कर पडन हैं उसमें

से बच कर रह गईं तो मुझे भी मिल जायगी। घोड़ी का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। कोट, पैट पहनना छाड़ ही देना पड़ता है। यदि पहनना है तो वारह मील दूर गहर में घुलवा कर भगवां जाय। बारी या गन्धे रंग का पट पहनने पर बुत्ते पीछे पहने का डर रहता है क्योंकि इस गांव के बुत्ते अभी ग्रामीण हैं जो गहरों जीव के देवन के अभ्यस्त नहीं हुए हैं। डाक सप्ताह में तीन दिन आता है। चिट्ठिया के पहुंचने में दो सप्ताह लगना सामान बात है। डाक वाग्न बाना लाने वाला यदि रुठ जाय तो बड़ी मुमोजन है। तार और पोस्टकार्ड में कोई भेद-भाव नहीं करवा जा रहा। इसमें साम्यवादी आदम ही माना जाता रहा है।

उपर्युक्त कठिनाइयों से मैं अवगत तो हो गया किन्तु मैं गान छोड़न की नहीं सीधी। तात्कालिक उपचार के लिए मुझे सुभाव अवश्य दे दिया गया कि दो छात्र अभी आपके गम भेज दिए जायेंगे जिसकी सहायता से मैं सम्पत्ति के यहाँ पहुँच जाऊँ जिससे कुछ जागे की व्यवस्था में कुछ सहारा मिल सके। यह इस गांव की परम्परा बताई गई।

टन टन, टन टन फिर घण्टी बनी। मेरे चारों ओर की भीड़ एमे उठ गई जैसे कि एक जगह बैठे हुए पनिया में पत्थर फेंक दिया हो। बबल रह गए दो छात्र जिनको मेरे साथ जान मेरा सामान पहुँचाने का वायभार सौंप दिया गया था। देहली छात्री और शहरी छात्रों का अंतर उनकी वर्ग-भूषा तथा भावना से स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था।

बुद्ध सामान उठा लिया गया और मुझे बिना सामान ही चलन का अनुरोध किया गया। सड़क पर आते ही हम गांव का ओर चले। यह गांव का पश्चिमी किनारा था। ज्यादा होने गांव की ओर दृष्टि डाला मुझे एक विनालकाय गगन चुम्बी चारों ओर परकोटे से घिरी हुई इमारत दिखाई दी। मरी जिज्ञासा ने प्रतीक्षा का अवसर नहीं दिया। मैंने छात्रा से इस इमारत के लिए प्रश्न किया। उ होन बताया कि यह गढ़ है। यह रावसाहब का गढ़ है। आज कल रावसाहब यहाँ नहीं रहते हैं। उन्होंने जयपुर में ही अदनी कोठी बनवाली है। उसमें तो केवल उनका दूती मा दो चार गोले गोशिया (नास दासियाँ) रहती है जो दूती ठकुरानी की सेवा मुश्रफा करती है। उस गढ़ का देखकर राजस्थान तथा राजपूता के पुरातन इतिहास का चित्र एकत्र मेरे सामने आ गया। वीर, गौरव का प्रतीक राजपूत भा की आन और गान के लिए प्राण देने वाला राजपूत राणा प्रताप सागा अमरसिंह धृष्टीराज जसा राजपूत, हाटी राणी, महामाया, विरज का त्याग मूर्ति राजपूत जि होने अपना माया बटवाया किंतु माया नहीं भुकाया और फिर मुरा और सुदरी में भूमने वाला राजपूत, अपना रिवाज का बहू बटिया की इज्जत लूनवाना राजपूत प्रजा पर अत्याचार अनाचार करने वाला राजपूत और एक दिन कायस की कलम से समाप्त हो गया यह गौर और वीर का बाना पहनने वाला तलवारी राजपूत। मैं आगे बढ़ता रहा और गन् मरे अधिक समीप आता गया। गन् ऐसा मानूम हो रहा था जमे उसक शगर पर बुनाप की काली काली रेखाएँ अंकित हो गई हैं। यह अटिंग, अजर दुग एक दिन हम मिट्टा में मिल जायगा। कई युगों का जाबिया और लूनान की माटी

मोटी मिट्टी की चादरें इसके ढक लेंगी और बहुत ऊँचा टीला बन जायेगा । फिर इसका खुदाई होगी । इतिहास वाले यहाँ आयेंगे और इसमें से पत्थर निकालेंगे । इसमें दो तरह के पत्थर निकलेंगे । एक पत्थर होगा—लाल मुख जो इसके बगल और ऐश्वर्य की गाथा कहगा और दूसरा पत्थर हागा—काला चूड़ा जो इनके व्यभिचारों का बात बतायेगा और फिर इतिहासकारों को एक डिग्री मिलेगी पी०एच०डी० ।

गड मरे पास स निकल गया और हम उगक थोड़ी ही दूर पर सरपच के घर जा पहुँचे ।

सरपंच का घर प्राचीन तथा अर्वाचीन का सम्मिश्रण था। भीतर के समस्त कमरे प्राचीनता के चोतक थे जिनमें न कहीं सिंढरी, न रोजनदान, नितान्त अंधेरगुफ और बाहर के दो कमरे नवीन ढंग से बने हुए थे जिनमें खिचकिया रोजनदान बरामदा आदि सब कुछ थे। मैं एक दिन बाहर के कमरे में रहा। सामान उसी ढंग से अस्थायी तौर पर एक ढेर के रूप में रखता रहा। खाना सरपंच के घर से आ गया चाय भी आ गई। गोडा बहुत आने जाने वालों से परिचय भी हुआ। सरपंच साहब कहीं बाहर गए हुए थे। मैं ज्योत्सो उन्हीं की प्रतीक्षा में था। मुझे एक ही आशा थी कि वह ही स्थायी तौर पर मेरी व्यवस्था कर देंगे। मैं अकेला बठा बठा ऊब गया था मैंने माप्ताहिक हि दुस्तान का अंक निकाला जो मैंने स्टेशन पर स्टाल में खरीद लिया था पढ़ने लगा। वतने में ही एक बूढ़ी औरत घर के अंदर में आई। उसका हाथ में कुछ ऊन थी जिसकी वह सुलभा रही थी। मुझे चुपचाप पढ़ते देखकर इधर उधर भावने लगी। फिर वह पास एक खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ कि बुढ़िया भी मरे से परिचय करना चाहती थी। उसी मुझ पूछा 'बेटा, कहा से आए हो ?'

मैंने कहा, माँजी, मैं तो गहर से आया हूँ। यहाँ बामा कम्पनी

की प्रकृति पर ।

मन इनकी बात उसने अब प्रश्ना की प्रतीक्षा से पहले ही कह दी ।

बुढ़िया भरे पद का धध नही समझ सकती । वह कुछ साध ही रही थी कि मैंने बीमा पर अपना छोटा-सा व्याख्यान उसी का भाषा में दूँगा बुढ़िया समझ गई । उसने इस सम्बन्ध में दूसरे प्रश्न नही किए । उसने केवल इनका ही कहा कि वह सरपंच की माँ थी । मुझे और भी खुशी हुई और मैंने वह अपनी समस्या प्रस्तुत की, मुझे तो रूने का एक मकान चाहिए ताकि मैं निवृत्त कर रह सकूँ ।

माजी ने मरी समस्या के साथ सारे गाँव में घाने वाले कम-चारियों का समस्या जाँच की बेठा क्या बताऊँ ? यहाँ तो ग्रहणकार बहुत आ रहे हैं । मेरा बेटा दो साल से सरपंच है । रोज एक दो आते ही रहते हैं । सभी कहते हैं कि रहने के लिए मकान दो । इस गाँव में मकान कहाँ ? लोगों के पास पशु बाधने के तोहरे हैं । सभी अप-टू-डेट बाँव आते हैं पेंट पड़ते हैं । इनकी औरतें भी धोती जफर पहनती हैं । सभी-सभी कल परसों खेता में दवाई डालने वाला एक आया था । क्या कहते हैं उसे ? मने बीच ही में बताया, ग्राम सेवक । माजी आगे कहती गई मुझे इनके नाम ही बालने नहीं आते । उसने घर मागा, उसको बड़ी मुश्किल से हरदत्त के घर टिकाया । एक ही कमरा है उसके पास । कुछ दिन पहले वह एक बुखार की भोली देने वाला आया । वह भी यही पास ही रहता है । मास्टर तो पचीसा है । क्या करें बेचारे ? राज भेज देता है । आना भी पड़ता है । पेट भूखा है बेटा, इस पेट का रोना है । बेचारे पाच-पाच सी कोस से आते हैं । सबके लिए कहीं न कहीं

जगह बनती ही गडती है ।'

माजी के चहरे पर कुछ विचारों की रेखाय चित्रित हुई । मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि माजी मरे निम्न ही साग रही थी । वह कुछ सोचती हुई छत की ओर देखने लगी । फिर उसने गम्भीर प्रश्न कर लिया तू भरला है या खान बच्चे लायेगा ?

मुझे इस प्रश्न के अनन्त भार जवाब देने पड़े । सत्य की भी घुमाव देकर कहने में बुद्धिमत्ता है । इसलिए मुझे इसको विचारने की आवश्यकता नहीं पड़ी । मैंने वैसा ही उत्तर दिया जैसा कि उत्तर दिया करता था 'माजी मैं अपनी मा को लाऊंगा । वह भी आपकी ही उमर की है । बड़ी अच्छी है माजी ।

माजी शायद इस उत्तर में सतुष्ट हो गई । वह मुझे ऊपर ले गई और उसने चौबारा खिंचाया और कहा तू कुछ दिन यहाँ टिक जा । तेरी मा आ गई तो हम पीछे का मकान दे देंगे । वहाँ पहले एक मास्टर रहता था । बड़ा भला आदमी था वह । अब किसी शहर में चला गया । अच्छा मुझे तो अब काम करना है । भसे आन वाली है । तू अपना सामान ल आ । परदेशी आदमी है भाई । बकन तो गुजारना है । इस प्रकार कहती हुई माजी नीचे आ गई ।

मैंने जल्दी जल्दी अपना सामान ऊपर कमरे में व्यवस्थित किया । दो जालमारिया थी । उनमें मैंने अपना कीमती सामान रख दिया । एक भज पहल से ही पड़ी थी । उस पर कुछ पुस्तकें काच कथा जमा दिया । पलंग पर बिस्तर बिछाकर रखाई, कम्बल ठीक लगा दिया । पाच सात तस्वीरें जा मैं अपने साथ लाया था कीला पर गाड़

दी । इस प्रकार मैंने अपना कमरा अच्छी तरह सजा कर जमा लिया । मैं एक चिन्ता से मुक्त हो गया ।

मैं गाम को गाव के बाजार मे गया । बाजार क्या था, केवल चार दुकानें । मुझे अध्यापक वधुप्रो की बातें याद आ गईं । भाटा, सजी कुछ भी नहीं । मुझे मालूम हुआ कि भाटा चक्की पर मिलता है । यह चक्की भी तीन चार सालों से सगी है । इससे पूर्व स्त्रिया घर की चक्की से ही पीमती थी । चक्की से दा सेर आटा ले आया । एक दुकान में कुछ आलू मिले । दो आने के आलू ले लिए । उसी दुकान से मिट्टी का तेल मिल गया । कुछ मिच मसाला भी ले लिया । यह मेरे शाम के खाने की व्यवस्था थी । स्टोव मेरे पास था ही । इस काम में मुझे दो घण्टा लग गया । सामान लेकर मैं घर पहुँचा । अब इस घर में मेरा अदभुत स्थापित हो गया । इस समय घर भरा पूरा था । बच्चे, स्त्रिया गाँवें जैसे ऊट सभी की उपस्थिति इस समय थी । केवल पुरुष अब तक नहीं आ पाये थे । मैंने रवभावत नीचा मुह करके सीढिया के सहारे ऊपर चला गया । स्टोव में तेल डाला हवा दी तेल बाहर आया । दिपामलाई लगाई और स्टोव सू सू करके अपने क्लव्य में डग गया । स्टोव की आदत है कि वह केवल अपने तक ही सीमित रहता है । किसी दूसरे की सुनने नहीं देता ।

मूय की अंतिम निरणा ने मेरी आर आका और जुप्त हो गई । मैं भाटा गूद चुका था । सजी मेरी तैयार हो गई । तवा ऊपर रख चुका था । इतने में दरवाजे से एक आवाज आई, 'बुद्धू' ।

मैंने दरवाजे की ओर आका । बिखरेवालों की एक नवयुवती

नीचे जाती हुई तब्रर आई । बेवज्र उमने हाथ धीरे बान निगाई नि ।
 लोग गरीर पर होने नीले रंग की साधारण धोती थी । मैं बेवज्र पीठ हो
 गेग तथा अन ठीक ठीक अनुमान नहीं लगा सका, किन्तु मैं 'बुद्ध' का प्रय
 नहीं समझ सका मैं एक ध्वननी, अजनबी देग धीरे ध्वननी गेग बाग धीरे
 फिर यह ध्वननी लक्ष जो मैं इस आयु में सुनने का सम्भव नहीं था आज
 इस नवपुत्रनी से सम्भवत नवपुत्रता ही था, क्योंकि मैं उस पूरा नहीं देख
 सका था 'बुद्ध' लक्ष कैसे सुन रहा हूँ ? मैं अपने अनुमान ही लगाता रहा ।
 कोई भी समझ पाया हुआ पुण्य या स्त्री एक समझ पाये हुए पुण्य या स्त्री
 को इस नाम से कैसे पुकार सकता है ? यह बात समझ में नहीं आ रहा
 थी । फिर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि नायक सुनने में भ्रम हुआ होगा ।

मैं अपने काम में व्यस्त हो गया । पहले दरवाजे की ओर मेरी पीठ
 थी । अब मैंने दरवाजे की ओर करीब करीब मुँह कर लिया । इन्ने में वही
 नवपुत्रता पुन आई और मेरी ओर आकर वे लक्ष फिर बह गईं बुद्ध
 तारी बुद्धिमा बह गई ? तू खुद हाथ से राखी पका रहा है ।

उसने अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की और चौबारे क
 हमरी ओर चली गई । उसे यह चौबारा अर्थात् चार द्वारों का लक्ष था
 किन्तु महा के लोग धन के एक कमरे की चौबारा कहने के आदि है प्र
 मैं भी चौबारा ही कहूँगा । मैं उसे इस बार ठीक ठीक देख चुका था । रंग
 गौरा, अधिक गौरा नहीं गेहूँगा कहिये आँखें बड़ी बड़ी नाक मुँहोला पतले
 पतले होठ, भरा हुआ चेहरा और गरीर भी भरा हुआ यानी अन भावना
 गन्ध मूरत । कान नाक कुछ भी दिखाई नहीं दिया । हाथा मैं दा चार
 धूँडिया हाथा । इस छोटी सी भूतक में इतना ही अनुमान लगा सका था ।

किन्तु 'ह' 'वह' और फिर 'तु' बार 'तुम्हारा जोड़ गई' यह मात्रा
'ह' 'तु' ? यह समझ में नहीं आ रहा था ।

यह छन्दस राग देव था । वह आई और कमरे में घुम गई ।
है सागर में पर था । वह मर निरुद्ध बूढ़ गई और यह कहत हुए 'ह',
'ह' है 'ह' 'तु' आग मर हाथ से छान लिया और आगे का दो भागों
में बाँट कर दिया । मुझे बड़ा घबराव-सा लगा, किन्तु मैं लगा हाँकर
'ह' पर था 'ह' । उसने 'तु' आगे की एक पुष्पाकार मूर्ति बनाई और
'ह' 'ह' 'ह' 'ह' का आकार का और तब पर हाँक कर 'हा, हा हा हा' का
सुनाने लगा 'ह' 'ह' । मर आँखों का निहाना नहीं रहा । मैं तब
'ह' 'ह' 'ह' 'ह' का आकार लिया और रानी सका ।

नीचे जाती हुई नजर आईं । केवल उसने हाथ और कान दिखाई दिए । शेष शरीर पर हल्के नीले रंग की साधारण घोंनी थी । मैं केवल पीठ ही देख सका भ्रत ठीक ठीक अनुमान नहीं लगा सका किन्तु मैं 'बुढ़ू' का भ्रत नहीं समझ सका मैं एक भ्रजनवी भ्रजनवी देग और भ्रजनवी लाग लाग और फिर यह भ्रजनवी 'ग' जो मैं इस घायु में सुनने का सम्भव नहीं था आज इस नवयुवती से सम्भवतः नवयुवती ही थी, क्योंकि मैं उसे पूरा नहीं देख सका या 'बुढ़ू' 'ग' कैसे सुन रहा हूँ ? मैं अपने अनुमान ही लगाता रहा । कोई भी समझ पाया हुआ पुरुष या स्त्री एक समझ पाये हुए पुरुष या स्त्री को इस नाम में कैसे पुकार सकता है ? यह बात समझ में नहीं आ रहा थी । फिर मैं इस निष्पत्ति पर पहुँचा कि शायद सुनने में भ्रम हुआ होगा ।

मैं अपने कान में 'यस्त' हो गया । पहले दरवाजे की भारमरी पीठ थी । अब मैंने दरवाजे की ओर करीब करीब मुड़ कर लिया । इनमें मैं वही नवयुवती पुनः आई और मेरी ओर झुककर य 'ग' फिर कह गई 'बुढ़ू, तेरी बुढ़िया कहा गई ? तू खुद हाथ से रोटी पका रहा है ।

उसने अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की और चौबारा व दूसरी ओर चली गई । वैसे यह चौबारा अर्थात् चार द्वारों का नहीं था, किन्तु यहाँ के लोग छत के एक कमरे को चौबारा कहते के भावि है भ्रत में भी चौबारा ही कहूँगा । मैं उसे इस बार ठीक ठीक देख चुका था । रंग गौरा भविष्य गौरा नहीं चेहरे बहिय, आँखें बड़ी बड़ी नाक नुकीला, पतले पतले होठ भरा हुआ चेहरा और शरीर भी भरा हुआ यानी मन भावनी 'ग' सूरत । कान, नाक कुछ भी दिखाई नहीं दिया । हाथा में दो चार बुढ़िया दानी । इस पांडा सी भ्रत में शतना ही अनुमान लगा सका था ।

किंतु यह 'बुद्धू' और फिर इस बार 'बुद्धिया' जोड़ गई, यह माजरा क्या था ? यह समझ में नहीं आ रहा था ।

मेरी अंतिम रोटी खोप थी । वह आई और कमरे में घुस गई । मैं चक्कर में पड़ गया । वह मेरे निकट बैठ गई और यह कहते हुए हठ से मैं बनाती हूँ आटा मेरे हाथ से छीन लिया और आटे को दो भागों में विभक्त कर लिया । मुझे बड़ा अजीब सा लगा, किंतु मैं खड़ा होकर पलंग पर बैठ गया । उसने उस आटे की एक पुरुषाकार मूर्ति बनाई और एक मूर्ति स्त्री के आकार की और तबे पर डाल कर 'हा हा हा हा' का अट्टहास करके चले गई । मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । मैं उन घ्राणियों को पुनः रोटी का आकार दिया और रोटी सेकी ।

निस्तब्ध रात्रि

धवल चट्टिका

चारों ओर सनाटा

घरनी सो रही था। मुझे नींद नहीं आती। करवट बल्ल बल्ल कर मत्तत पमास कर रहा था किन्तु सफ़नता नहीं मिल रही थी। प्रत्येक की नींद का उचित स्थान होता है। परिवर्तित स्थान पर उसका आने में क्लिष्ट होता है सम्भवतः वह नूटली नहीं आती है। इस अनजान स्थान पर मरी भी यही स्थिति थी। दरवाजा बंद कर चुका था। सन्नाह्तता घनी नहीं थी। मैंने लिट्टकी छोटी। सामने गड की इमारत अपनी बिनाल काया के पानका का पावन चान्नी से धो रही थी। मैं उसको एकटक देखता रहा किन्तु मुझे उस युवती के बहे हुए गाल रह रह कर याद आ रहे थे— बुढ़ 'बुढ़िया'। इन शब्दों का एक बल्लाकार अविश्राम गति से मस्तक में घूमने लगा। यह अक्षर चेतना चलता हुआ के दोबारा पर जा सरका बुढ़, बुढ़िया। वया यह दुग भा बुढ़ है जो अपनी सत्ता के समाप्त होने पर व्यग का आधार बन रहा है। एक युग था जब यह गौरव और पुरपाय का प्रतीक था और दूसरा युग आया तब यह आतक और भय का चार्क बना

और आज इस युग में दशक इस पर थूकना है व्यर्थ कसना है, इसे घणा
करता है फिर भी यह खड़ा है—बुढ़ू । इसके अंग प्रत्यग शिथिल हो गये
हैं । इसके मनोभाव बढ़ हो गए हैं । काली काली भूरिया से इसकी काया
चरम हो गई है—बुढ़ा ।

मैंने अपनी खिचकी बढ़ करली । दो चार करवट लेकर निद्रा का
निमग्नण दिया, कोई प्रत्युत्तर नहीं । मैंने अपना लम्प जलाया और फिर
'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' को लेकर बैठ गया किन्तु पत्निया में वही बुढ़ू और
बुढ़िया । जो कुछ पट रहा था समझ में नहीं आया ।

इतन में बाहर जीप के घरघराहट की आवाज आई । जीप दरवाज
पर ठहरा । कुछ धीरे धीरे बालन की आवाज भी सुनाई दी । बाहर के दरवाज
का खट खट, खट खटकाया गया । द्वार खुला । साईं हुई नीचे जाग गई ।
पर में हल्की हल्की चहल पहल सुनाई दी । मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ
कि जीप से दो तीन आत्मी उतरे थे । घर की औरतें जाग गई थी । ताने
पीने की तयारियां हो रही थी । खाना बन चुका था । खाना खाया जा रहा
था । साय साय में बातें चीतें भी हो रही थी । इतने में किसी ने आगन में
जोर में पूछा—ऊपर रोगनी कैसे है ?

किसी ने उत्तर दिया—कोई अफसर है । माजी ने ठहराया है ।

फिर प्रश्न उठा—कितने दिन के लिए ठहरा है ?

फिर उत्तर—जब तक उसकी मा नहीं आ जाती ।

फिर दूसरी बातें शुरू हो गईं तो भरे समझ में बाहर थी । मैंने
प्रयास प्रयास किया किन्तु वे इतनी मंद स्वर में थी कि मैं सुन नहीं सका ।
मुझ भय था कि वही भरे ही सम्बन्ध में तो टीका लिपिणी नहीं हो रही

हो । मुझे ऐसा कुछ प्रतीत नहीं हुआ । मेरा अनुमान था कि शायद सरपंच आया था और उसके साथ दो चार आदमी और होंगे । इसी उधेड़बुन में मुझे कब नींद आई मुझे ज्ञात नहीं । मैं सो गया ।

मेरा आदाजा ठीक निकला । जब मैं चाय पी रहा था एक खदरधारी सफेदपोश गले में पिस्तौल डाले एक पुरुष ने मेरे कमरे में प्रवेश किया । वह सरपंच ही था । गांव का मुखिया जिस पर समस्त गांव का उत्तरदायित्व इनके अधिकारों और कत यों के सम्बन्ध में बहुत कुछ पड़ा था । मेरे हृदय में इस जाति के प्रति बड़ा सम्मान था । फिर इस पुरुष के प्रति इसके साथ अपनत्व का भी मिश्रण हो गया था क्योंकि मैं इसके भक्तान् में था । मैंने उठकर उसका अभिवादन और एक कप चाय सह आवागमन की । चाय की चुस्की लेते हुए सरपंच ने मेरा परिचय लिया । मैंने सरपंच को भी अपने पद का महत्त्व बतलाया । बातों ही बातों में उसने मुझे बतला दिया कि वह इतने दिनों मंडी में था । पचायत समिति की मीटिंग थी । इसमें बहुत सारे निणय लेने थे । आते समय कुछ सीमट के कट्टे भी ले आया । प्रधानाध्यापक का बवाटर बन रहा था । स्कूल में एक दो कमरे और बनाने थे । स्कूल में सादम खुल रही थी । प्राइमरी हेल्थ सेंटर खुल चुका था । इस प्रकार की विकास कार्यों की बात बतलाई और व्यवस्था का एक कृत्रिम-सा रूप प्रदर्शित करके सरपंच चलता बना । उसने जाने के बाद मैंने अनुमान लगाया कि सरपंच अधिक गिम्पित नहीं था । वह जो कुछ जानता था वह केवल अनुभव के आधार पर ही था । अवस्था में भी पत्तीस चालीस से अधिक नहीं था । गांधी और नेहरू का नाम से अधिक परीक्षित था ।

छोटे मोटे काप्रेस के सिद्धांत भी जानता था। विशेषण था वह केवल राजस्थान की वर्तमान राजनीति का और वह भी बाजारू। स्वभाव से मुझे भ्रातृमी बहुत अच्छा और उदार लगा जिससे मेरे रहने के व्यवस्था के सम्बन्ध में अतिम चिन्ता भी मिट गई।

ग्राज मेरा काम करने का 'मूठ' बना। स्नानादि से निवृत्त होकर मैंने कपड़े पहिने और बीमा की फाइल लेकर चला। यह बीमा की फाइल नहीं बीमा का एसाइक्लापीडिया था। इसमें क्या नहीं था ? बीमा की भूमिका से लेकर उपसंहार तक, जीवन से लेकर मृत्यु के बाद तक, जीवन की महत्ता से लेकर मृत्यु की महत्ता देने तक। यह थी इस फाइल की विशेषता। मैं गांव की गलियों से निकलता हुआ स्कूल की ओर चला। मुझे परिचय करना था इतना परिचय कि समस्त गांव के व्यस्क स्त्री-पुरुष मेरी बीमा की डोरी से जकड़ जायें और मृत्यु के उपरांत भी इसमें जकड़े रहे। मेरी कंपनी में जीवन का महत्व नहीं, मृत्यु का था। किंतु यह बात किसी को कहने का नहीं थी। थोड़ा-सा सवेत देने को ही थी और उस सवेत से ही एक भयावह वातावरण पैदा होता था। जीवन तो जीवन है किंतु हम उसको मृत्यु कहते हैं और हम मृत्यु को ही जीवन कहते हैं। इन सवेतों से कुछ तो हमारे धुगल में आ जाते हैं और कुछ पलायन कर जाते हैं। यह क्रम है क्रम में गति है और इस गति का ही नाम जीवन है और फिर भागे की कौन जानता है ?

हां, तो मैं गलियों में से चल रहा था। गलियों से मिसल हो रहा था मेरा विशेषण कुत्ता से जो गुर्राकर मुझे परदेगी होने का सवेत दत्त थे और पानी की पविहारिना को जो घूषट के वातावरण में मुझे भाँक लेती थी और उनके साथ कुछ नववालाआ आ जो घड़े के भार

को उपेक्षा करती हुई खुले उन्त उरोजा से दशक का अभिनन्दन करती थी। बहुत कम बुढ़िया मिली जो बौद्ध से मुक्त होने की नियत से रास्ता नाप रही थी। गलियों को पार करके मैं स्कूल पहुँचा।

मैं स्कूल की चारदीवारा के भीतर था। यह सरस्वती का सम्माननीय मन्दिर था। एक समय था जब इन ग्रामों में नहीं कहीं स्कूल होता था और वह भी प्राइमरी जिसमें एक ही अध्यापक होता था जो सुबह से शाम तक गांव में इन गिन छोड़कर को घेर कर झेला ऊँघता रहता था। घिलम की मुट से अपनी ऊँघ को खालता और पाँच दस मिनट दो चार घण्टर बतला कर फिर ऊँघने लगता। फिर ऊँघ खुलती तो दो चार छोड़कर को खेत से मतीरे लाने भेज देता दो चार का घर में पानी भरन और एक दो को घर में इधन की व्यवस्था करन भेज देता। कच्चे बिना लिङकी और रोगनदान के कमरे में ही सारी कक्षायें होती एक से चार तक। पाँच छ महीना से एक डिण्टी साहब आते और सभी का इम्तिहान लेते। इम्तिहान क्या लेते ? उस दिन सारे घरों में दूध आना तार बनना सोमा निकलना और डिण्टी साहब भी, चन बाजरी सोए का पूरा सामान करके गांव से बिना लेन, जसे बेटी अपने बाप के घर से बिना ले रही हू। उसी स्थान पर यह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का भवन खड़ा है। उस प्राइमरी स्कूल की इमारत के अवशेष अब भी अपने पुरातन गाँवा की स्मृति लिये विद्यमान थे। विद्यालय के कक्षा की मैन गणना की। पूर पन्द्रह कमरे और उनमें मध्य में एक सभा-भवन। इमारत बड़ी रमणीय लग रही थी और गाँव के कच्चे घरों में अपनी गुणमा पर मग्न में मस्तक उन्त किए हुए मड़ी थी। मन बरामद में प्रवेश किया। उसका आगे दो 'प्रधानाध्यापक' हिन्दी

म लिखा हुआ था ।

प्रधानाध्यापक का वक्ष,

आगे सटकी हुई चिक,

मैंने भातर प्रवेश किया । मेज पर झुके हुए प्रधानाध्यापक, आखी पर चश्मा, रोब किया हुआ चेहरा, न गरा हुआ न ठूँवा हुआ, शरीर ठीक-ठीक । पैंट और कोट का रंग अलग-अलग, बूट काले उतारे हुए । मैं नमस्त किया । घोड़े से खड़े हुए, चश्मा उतारा और हाथ मिला कर बैठ गए और बैठने के लिए कहा ।

मैं बैठ गया । मनीबग से कुछ फाइलें निकाली और अपना सक्षिप्त परिचय दिया । सुनकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की और बीमे के महत्व पर सहमति भी । मैंने दो प्रस्ताव रखे । पहला—कुछ काम करने वाले एजेंट चाहिए विशेषतः जिनकी धर्मपत्नियां शिक्षित हों या साक्षर, क्योंकि राजकीय कर्मचारी अपनी धर्मपत्नी के नाम से ही कार्य कर सकते हैं । दूसरा—वे जो बीमा कराने के इच्छुक हों ।

प्रधानाध्यापक वयोवृद्ध होने के बावजूद भी बात करने में पटु और चुम्न थे । उन्होंने तुरंत उत्तर दिया—मैं आपके दूसरे प्रस्ताव का पहले उत्तर देता हूँ । सबसे पहले मैं अपना प्रश्न लेता हूँ, क्याकि आप सीधे मेरे पास आए हैं । मैं सात बच्चों का बाप हूँ । मेरा वेतन इस समय चार सौ के लगभग है । उसमें से सरकार कुछ बीमों का काट लेती है । नेप राशि में मैं भी छपे अपने एक लड़के के लिए भेजता हूँ जो अलवर में ओवरसियर की ट्रेनिंग ले रहा है और दूसरे को तो

प्रेमलता

गपये और भेजता हू जो बीकानेर में साईं स पड़ रहा है । अब रह गा
 बेवम एक सो पच्छतर । अब बनाइये मैं इस तुच्छ राशि म ग गया बचाऊँ
 आप सायन घाशपय करेये कि मैं निम प्रकार मर्चा चला रहा हूँ ।

मुझे प्रधानाध्यापक की विवचना पर तरस आया । मुझे अपने
 प्रश्नों के चौपाई हिस्से का उत्तर मिस चुका था किन्तु वे अपनी ही परि-
 स्थिति पर बातें गा गायद इस विषय पर उनको बातने में मजा आ
 रहा था । वे बातें देखिये साहब मैं तीन साल से इस गाला म हू । मरी
 शाला का परागा पन इस जिले म प्रथम या द्वितीय स्थान पर आता है ।
 मैं दो बार बीकानेर गया और अपनी सारी परिस्थिति अपने साहब के
 सामन खोल कर रख दी किन्तु उनके काना पर जू तक नहीं रेंकी । मजा
 साहब काम किसका घनता है ? उनका जिनकी बड़ी-बड़ी सिफारिशें हा
 मंत्री से नीची नहीं या बानू को देने को पता हो । मैंने अब नसम खाली
 है कि उनके पास जाना ही नहीं ।

म इस बहष्पन के नीचे दवे खोखलेपन से घबरा गया और चुप-
 चाप सुनता रहा । व अपनी व्यक्तिगत बातों पर आगे नही बोले और
 दूसरे प्रश्न के अग्रिम भाग पर आए । कहने लगे—रही मेरे अध्यापकों के
 सम्बन्ध म । सो बात कुछ ऐसी है कि मेरे महा चार पाच बरिष्ठ अध्यापक
 हैं । जिनका बेतन स्तर ठीक है । उनमें से कुछ बीम में फसे हुए अवश्य
 हागे, नयोंकि आज बल आपके साथी छोड़ते किसको हैं ? नहीं कने है तो
 आपके जाल म अवश्य ही फस जायेंगे, जायेंगे कहा ? अब रहे बारह अध्यापक
 और सम्भवत वे 'द-स्योड' नहीं हैं । हीगा तो एक दो । सरकार बीमा के

सबसे पैसा काट लेनी है। किंतु प्राइवेट मेरी दृष्टि में नहीं हैं। आप स्वयं बात चीत कर लें। और अब रहा आपका पहला प्रश्न तो इसके लिये आप हमारे बाबूजी से बात चीत करें। वे नवयुवक हैं और उनकी धमपत्नी मर्दक पास है और आपको क्या चाहिये ?

मैं प्रधानाध्यापक के साता बं लहजे तथा उनकी स्पष्टवादिता से बहुत प्रभावित हुआ और मैंने उनके बाबूजी से बात चीत कराने का प्रस्ताव रक्खा।

प्रधानाध्यापक ने जोर से आवाज दी बाबूजी और वक्ता के पार्टीशन के दूसरी ओर आवाज आई हा जी।

प्रधानाध्यापक ने बाबूजी से बात चीत करने का सवेन किया।

बाबू और प्रधान के बीच का पार्टीशन लकड़ी की आलमारिया का बना हुआ था। आलमारियों की नवीनता का देखकर विद्यालय के नये पन का अंजा लगाया जा सकता था। मैं अपने काम उपा के लिये अंदर रखे और पार्टीशन के बीच के छाने से द्वार से बाबूजी की तरफ गया। कुर्सी पर बैठे हुआ बाबू सबकुछ बाबू दुबला पतला गरीब और खण का चेहरा, छाया पर काली फ्रेम का चश्मा, सामने मेज मेज पर घण्टी बलम दयात हाथ में पेन और सामने बेंच की दा कुर्सी। मेरे अंदर प्रवेश करने का खर खर का भी उनको आशाम नहीं हुआ कि कोई अंदर आया था। वे स्यावन आय में व्यस्त रह। सभवत रीबड में कुछ ऐन्या कर रहे थे।

म जाकर सामन बैठ गया। उन्होंने एकाएक मुह ऊंचा किया

ठहटने का भी प्रश्न आ गया। मन बतलाया कि मैं सरपच के यहाँ ऊपर के कमरे में जम गया था। साथ में भलमनमाहत की बातें आ गयीं। सभी ने सरपच की और विगपत भाजी की बड़ी प्रशंसा की। मैंने बतलाया कि मैं भी ऐसा अनुभव कर रहा था। तबने मैं दो अध्यापक जीर आ गए। उनसे मेरा परिचय नहीं था। पहले से उपस्थित अध्यापकों ने मेरा उनसे परिचय करवाया। वे भी भा बैठ गए। अब सीधी बात मेरे काय के विषय में चल पड़ी जिस उद्देश्य से मैं आया था। मैंने बीमे की महत्ता पर प्रकाश डाला। बुद्धिजावी बग पर तक आधार पर मनवाना बड़ा कठिन काम होता है। मेरा यही कहना उचित समझा कि पता तो आया हुआ खच हो ही जाता है। कुछ बचा लिया जाय ता बच जाता है। जीर कोई रास्ता नहीं है। इस बहाने से बचन हो ही जाती है।

एक अध्यापक जो बरिष्ठ ही था कहने लगे आप बचत की बात करते हैं। मुझे यहाँ आए हुए का बच हो गए। पत्र में शुरू में था। वहाँ मैं सहायक अध्यापक था। आप ठीक मानना कि मेरी पूरी तान सौ की मासिक भाय थी। मैं इस बरिष्ठ अध्यापक बनने के लाल में यहाँ फँस गया। आपकी मैं ठीक कह रहा हूँ कि मैं यहाँ एक महान् सक्कट में हूँ। रहने के लिए जा मजान है उसमें न रोगनी आने का

चौधरी के चक्कर काटने पर लकड़ी के लिए हाँ भरी जानी है और फिर किसी का ऊट मागा जाये। पानी के लिए एक चपरासी को महीने के दम रुपये देता हूँ तब बही जाकर तीन घड़ पानी रखता है और उस पर भी खुआमद और नखरे अनग इससे तो भारतीय सफ्ट बालून ही बहत्तर है। यह तो पूवज म के कर्मों का ही फल है।'

उपरावन भाषण समाप्त हो ही पाया था कि दूसरे अध्यापक ने दूसरा भाषण प्रारम्भ किया सभी लोग यज्ञा पर तग है, साहय। हम हर सात अपने अपने के आगे भन्न मागते हैं कि तु हमारी कोई सुनना ही नहीं। यहा तो पयो की खोर है। हम सरकार की तो अवल ही मारी गई कि एम स्थाना पर हानर सकण्डरी खोल दिए गए। निकट के शहर मे तो हाई स्कूल और इन बाहियात गावो मे हायर सैकण्डरी। इन निकटवर्ती गावो मे तीन हायर सकण्डरी ह। छात्रो की सग्या कितनी? कही डेन सौ बही पोन दो सौ और बही कही पर केवल सौ ही है। अब आप ही बतलाइये कि इन लडको पर इनने पैसे खच करना बेवकूफी नहीं तो क्या है ?'

इन भाषणा के बाच मरा विषय पता नही कहाँ सुप्त हो गया था ? मुझे इस विषय पर विचार ही नहीं करना था कि बुद्धिजावियों को इन निबुद्धिया मे क्या पक्क लिया गया ? मुझे अपने काम से काम था। मैं चाहता यह था कि इन भाषणा का मोडरिस्ती प्रकार अपने विषय पर लाऊ, किन्तु काय कटिन था। मैंने भाषण की धारा को तोड़ने के प्रयाम से एक प्रश्न की बाधा डाली। मैंने पूछा आप लागा के बीम के सरकार की ओर से भी पने काटे जा रहे हैं न।'

‘हाँ साहब करीब करीब सभी के, एक जघायक बाधु ने जवान लिया।

व्याख्यान की धारा टूट गयी और अचसर पर मैं बालू पा लिया। वक्त के लाभ में अक्षर चार घण्टा का बीमा - प्रभाव हुआ। गीता हजार के हिसाब से बाठ हजार का हिसाब बन गया। मैं प्रगलभ। चाय मगवाई गई। सबन चाय पी। मैं पसंद। यह मर बाय का प्रथम चरण था।

उनी जिन खाने खाने से निवृत्त होकर पलंग पर लेटा ही था कि माजी आ गई। कमरे में प्रकाश सजीव होकर फन रहा था। माजी ने कुर्सी ली और बठ गई। वह आज प्रसन्न मुद्रा में थी और काय से भी निवृत्त होकर आई थी। मेरा मूड भी आज अच्छा था। माजी ने बैठते ही कहा, बेटा तेरा नाम तो बताया ही नहीं।

मन कहा, माजी मुझ प्रकाश कहते हैं।

माजी—नाम तो अच्छा है। अच्छा कितने भाई बहन हो ?

मने कहा—दा भाई दा बहन।

माजी—'कितो बड कितो छोटे।'

म—एक बडा भाई, एक बडी बहन और दो छोटे।

माजी—पढते है ?

म—'बडा भाई नौकरी में है, बिजली के महकमे में। बही बहन दिल्ली ब्याही हुई है। दोना छोटे पढ रहे है।

माजी—पढाई बडी अच्छी है, बेटा। मरे तीन लडके और दा लडकियां है। बडा ही बडा तेरे सामने यह सरपंच है। यह चार

हो कनास पत्नी था । नाम है हरीगन । इसमें छोटा सैनी करता है । नाम है हरीसिंह । हरीसिंह में छोटा रामसिंह नाम पर पड़ा रहा है । चेना, २१ लड़कियाँ हैं । बड़ी का नाम स्वप्ना है और एक उससे छोटी है—पुष्पा । दोनों ही ब्याह दों हैं ।’

माजी ने इस प्रकार अपने सारे परिवार का विवरण दे दिया । इस सूची में २१ के बाद में पूछने की जिज्ञासा हुई कि तु एक न विषय में मुझे पूछने में मकोब नहीं हुआ । मैंने पूछा माजी रामसिंह कौनसी कता में पड़ा है ?’

माजी ने लम्बी सास खींचते हुए कहा मेरी ता दो बिताए बाकी रही हैं । एक तो बिता इस रामसिंह की और दूसरी इस पुष्पा की । रामसिंह तीन साल में दो ए म पैदा हो रहा है और पुष्पा बाबली सा रहता है । पुष्पा भी छोट पाम है । रामसिंह का भा गायी करती है । बट कहता है मुझे बट पसंद नहा । य० पुष्पा तो खली छारी की जात है लेकिन यह रामसिंह पाम नहीं हुना । क्या कर ? धन नमिहान देने गया है । पाच दस तिन में आ गायगा ।

पुष्पा का नाम जाते ही मेरे मस्तर में बड़ी बिचार चक्कर काटने लगा — बुद्धू जीन बुनिया । मन में पुष्पा भा कपरे में जा गई । बाल उसमें अब बिमरे हुए नहीं थे । दो चोटिया कर रखी थी । सत-बार और जकर पहने हुए थी । लडकी सयाही और मुख्य लग रही थी । उसमें पागनपन का चिह्न बही भा नजर नहीं आ रहा था । वह चुपचाप मेरा मज पर जाकर बैठ गई और साप्ताहिक हि दुस्तान देखने लगी ।

माझा घोर मै वानों मे व्यस्त थे । पुण्या के आते ही माजी एक घर तो चुप हो गई थी । उसने बटव ही माजी ने कहना गुरु किया— यह है वेदा पुण्या । अभी कभी गुरु विवरता है । मैं इसे बहुत समझती हूँ । लेकिन यह मानती ही नहीं । जब यह अपन पर जाती है तो बग सारे घर वाला के नाक मलम कर लती है । गाने हो गया है इसकी । घर बहुत अच्छा है । अच्छी जमीन है । इसका आत्मी पटवारी है । उठी कमाई करता है । घर में कोई कमी नहीं । गायें भैंमें, दूध दही, घोड़ी ऊट सभी कुछ है । लेकिन ।

माजी का गुला भर आया । उसने अपनी आखें अपनी आत्मी के पल्ले से पूछी और फिर चुप हो गई । किन्तु पुण्या मौन उमी प्रकार साप्ताहिक में लीन थी जम कोई छाना परेक्षा की तमारी में लीन हो ।

माजी की स्थिति देखकर मैंने विषय को बदलना उचित समझा । मैंने पूछा 'माझा आज सरपंच जी नहीं दियाई लिए ।

माजी के चेहरे की स्थिति सामान्य हो गई । उसने कहा 'सरपंच से बड़ा आज फिर मंडी गया ।'

कोई काम गये हाग ?' मैंने कहा ।

'क्या काम है ? प्रकाश दिन भर मारा मारा फिरता है माजी ने उत्तर लिया ।

मैं— सरपंच की दज्जत तो बहुत है माजी ।'

माजी— घर वग, यह भी कोई इज्जन है । इसके साथ लत लग गई है । हजारों रुपय चुनाव में लगत ह । फिर कभी इधर और कभी प्रमत्ता

उपर। सेना एक ७ देना लो। बेग, घर से पगा गराव करना गराव
घराव करना और काम गराव करना। मैं तो इसको सनकी बार सडा
नहीं होने दूंगी। मुझे तभी पता था कि ऐसा पगा है। कभी चार आ
गए कभी पाँच। गर। जहाँ घर है वहाँ आया हो करत है। सनित
यत्त बेग्त रुयाल ही नहीं करते।

मैं—'माजी आपका बेटा है तो बहुत अच्छा।

माजी का मुर्झाया चहुरा तिन उठा। उस मुस्कराहट से भुरिया
की दृष्टि ने साप गहराई भी आ गयी और आगे के बचे हुए बात बाहर
निरल आए।

माजी ने कहा अपना क्या है प्रकाश। सभी उस मालिक का
है। मैं तो मालिक से यही पलती हूँ कि तू ही इज्जत रखने वाला है।
मरझा बेटा चलू तू तो दिन भर काम करता है। सी जा।

माजी ने पुण्या को भी उठने का सनेत किया और दोनों उठ—
कर चल गए। उठती हुई पुण्या की सम्भीरता से किसी प्रकार का मनु-
मान लगाना बठिन था। मुझे आश्चर्य अवश्य हुआ कि आज वह इतन
समय पर किस प्रकार मौन होकर बठी रही।

रजनी धीरे धीरे मौन होती जा रही थी। कही कही मानवीय
भावना कानो म पड रही थी। मने साप्ताहिक उठाया ताकि गपकहानी
समाप्त करसू दो तीन पृष्ठ खोलने के बाद मैंने देखा कि एक चित्र बटा
हुआ था। मैंने स्मरण किया कि पहले तो ऐसा नहीं था। मैंने फिर आगे
घौर पने पलटे। आगे एक चित्र और बाटा हुआ नजर आया। मने मज

वे पास जाकर देखा कि दीवार पर दो चित्र टंगे हुए थे — एक सुन्दर नारा का और दूसरा बन्दर छाप दलमजन के विनापन का जो ढोल पीट रहा था। मुझे एकांत में ही हमी आन लगी। मैं जार स हस पड़ा। मेन अपन मन में बन्ना — नये चारु का राम राम। यह और लो।

इन तीन घटनाओं से मेरे मस्तक में तरह तरह से विचार घूमने लगे। पुण्या की मनोन्माओं से उत्पन्न विभिन्न स्थितियों के चित्र मेरे सामने घूमने लगे। समक्ष आए हुए नियाबलापा को आधार मान कर इस विविध लटकी के मनाविकारा के विश्लेषण करने के असफल प्रयास में मैं करवट बदलता रहा। मुझे दूर कुछ ग्रामीण स्त्रियाँ के समूहगत की आवाज आई। आवाज में मिठास था और गायन में रस-भरी मादकता। ये गीत घरों में राजस्थानी महिलायें सम्मिलित होकर शायद के आने पर उसके मनोरंजन के लिए गाता है। मैं भी गायन में माधुर्य में डूब गया। निद्रा ने मुझे बाहुओं में जकड़ लिया।

ताम्रो से सम्पर्क बन गया। भूमि सम्बन्धी कानून कायदा से अच्छा तकिफ था। जसपुरा के मुसलमानों को बहकाकर पाकिस्तान भगा दिया और उनकी जमीन को गिरफ्तारी पटवारी से मिल मिलाकर अपने नाम करवाली। उनके निबल जाने के बाद सारी जमीन पर अपना कब्जा कर लिया। पतराम भत्रियों के प्रभाव से बड़े से बड़े अफसरों से मेलजोल रखता था और उनकी अच्छी आवाजगन करता था। इस मेलजोल से ही उसने इस सड़क और नहर के मेल पर अपनी सारी जमीन बरली और यहाँ अपनी कोठी भी बनाली।

मैंने यह भी सुना था कि उसके कोई भौलाद नहीं थी। एक भतीजा ले रक्खा था। सूर्य रश्मियों के दशन के साथ ही मेरी तीव्र कामना हुई कि क्यों नहीं आज चौधरी जी से मिल लिया जाय। मैं उठा और चौधरी की काठी की आर चल पड़ा। कोठी के आगे जीप खड़ी थी। मैंने अनुमान लगाया कि चौधरी है तो ठाठदार आदमी। चौधरी की कोठी निमजली थी। सामने बरामदे के पाम ही कमरा था। कमरा बंद था। मैं दरवाजा छटखटाया। एक नौकर ने दरवाजा खोला। नौकर दहाती था किन्तु प्रतिधि व स्वागत के नियमों से परिचित था। उसने आँख में बठने की कुर्मी दी। मैं बठ गया और चारों ओर नजर डाली। कमरे के आँख बीच में भेज दी और चारों ओर बेंत की बनी नये फर्श की कुर्सियाँ। कमरे का फर्श दरी से आच्छादित था। कमरे में चारों ओर वारनिंग की हुई आलमारियाँ थी। एक कोन पर छाटी मेज पर रडियो सुगाभिन था। मैंने कहा, चौधरी जा से मिलना है।

नौकर ने कहा वे तो अभी घूमने गए हैं। आध घण्टे में आयेंगे।

नौकर की बातचीत से आश्चर्य हुआ कि राजनीति का प्रसार अब इस धेनी तक भी पहुँच चुका था।

इनने मे बाहर मे आवाज आद मगलू'। मगलू नाम था इस नौकर का और 'आया जी कहकर वह बाहर भागा। उसके पाछे म भी बाहर आ गया। मन देखा—चौ० पतराम—नम्बा तगड़ा आदमी नख स गिवा तक लहरमय। मिर पर खहर का साफा, सफेदचट कमाज और सफा ही धाती। दगो जूता परा म था। रग सावग मूँछे बटो हुई सी सफाचट नहीं। एक मल्लसियन कुत्ता साथ म था।

मन नयनि द' किया। चौधरी ने थोड़ा—मा हाय हिलाकर मेरे अभिवादन का स्वाकार। चेहरे पर एक वृत्रिम मुस्कान तथा घाया गाभीय। चौधरी पतराम ने 'आइय' कहकर अपने साथ ही मुझे कमरे मे प्रवेश दिया।

चाय ला भई बर पतराम बैठ गया। मगलू चाय लेने चला गया।

मने अपना परिचय लिया। और बातें गुरु हुई। चौधरी ने कहा, प्रकाशजी म तो कुछ विरक्त सा हो गया है। कुछ घर की परिस्थिति भी ऐसी हो गई है और कुछ राजनीति म अब मजा नहीं रहा। सभी जगह स्वाध इतना प्रवण था गया है कि बस इस ध धे से पण सी हो गई है।'

प्रकाश का राजनीति स कोई सम्ब ध नही था किन्तु रुचि अवश्य थी और फिर बाभ और राजनीति के मन्त्र-गन्त्र एक ही हैं। मन प्रकाश ने भी चौधरी के विचारा की व्यावहारिक दृग से सहमति दी किन्तु चौधरी अपनी राजनीति से सीधा गृहनीति पर उतर आया क्योंकि बीमा का

प्रथिा सम्बन्ध गृह्णीति ते होता है ।

चौधरी ने कहा—भाग मे भी गररार प्रान्त बाग कर रहा है, नि तु प्रकाश जो म बीमा बिगडा कराउ ? म और मरा धमरता बीमा की सोमा की पार कर गये है । जब बम्बानी हमारे निम रिमर नही लगा । फिर चौधरी ने लम्बी सात छोपी ।

इनने म मगनू चाय लर आ गया और समानार निम नि उारी पत्नी की तबियन मराय थी । चाय की बीष म छाड कर चौधरी यह कह कर सभी भा रहा हू धरर चले गये ।

चौधरी की मुझे प्रथिा प्रती ता नही करनी पडी । वह पुन भा गये । उतासी की रगार्य और गरी हो गई थी । मने पूछा अर क्या हाल है ?

चौधरी ने फिर एव सात छोपी । मनुष्य स्वय म बहुत बडा है कि तु परिस्थिति जब उमे ऋणभोरने लगती है तो सर्वोचसता म ईश्वर और निम्नतम स्तर मे नीकर घान आते है । चौधरी ने भगवान का नाम लिया उस मालिक की मर्जी है और फिर मगनू स कहा तू जा थोडा ध्यान रत । इस समय दोना समान थे । ईश्वरत्व और मनुष्यत्व म यहाँ मुझे तारतम्य नजर आया ।

चाय की चुस्की लेते हुए चौधरी ने कहा प्रकाशजी मालिक जब नाराज होता है तब सोमा भी राख बन जाता है और जब उसकी कृपा होती है तो जहा हाथ डालो वही सोना बन जाता है । मने अपने जीवन म बडी उयलपुयल देखी है और मामूली सी मुसीबत की वभी परदाह ही नही

। मैंने जेब देखा पुलिस का चोट सही फिर वह भी जमाना आया कि
 श्री मेर आगे नाक रगड़ा करते थे लेकिन आज घर की मजदूरियों ने
 उन्हें चकना चूर कर दिया है।

यै तब तक चौधरी का मजदूरी का सीमा उसकी पत्नी की
 मारी तक ही समझ रहा था कि-तु उसके पाठ एक गहरा रहस्य छिपा
 था। म उस समय तक नहीं समझ सका। चौधरी ने उतलाया—
 घर बरखा नहीं था। मेरी स्त्री इसी दुख में डुलती रहती थी। फनन में
 डा वेचन रहता। म किसी प्रकार प्रयत्न करके अपने भताजे का ले आया
 अपनी अवस्था उस समय पाँच बरस की थी। मने उस पाला पामा।
 घर घर में उस समय भी कोई बमी नहीं था। मेरी पत्नी बमला न उसका
 प्यार लिया हर प्रकार का मानुष्यार जा उसका पास था। पढ़ना रहा
 पढ़ता रहा और पढ़कर बी ए हो गया। मैंने उसकी एक अच्छे घर में गादी
 कर दी। पढ़ा निची लड़की, सुन्दर और स्वस्थ सुसंस्कृत घर उत्तरप्रदेश
 का चौधरी जा रतन का मान ताने जफमर। हम भतीजे की मा नहीं थी।
 बमला उसका मा बनी। उसका बाप दूसरी पत्नी से छीन लिया गया था।
 म उसका बाप बना। अब उसको इसी मूल में बापू की नौकरी दिलवाई
 है। वह अपनी पत्नी को लेकर अलग चला गया है। हमसे बालता नहीं
 और दूसर के सामने हम गाठिया निकालता है। हम धन की जरूरत नहीं
 प्यार की जरूरत है और प्रकाश जी, दतना करन पर भी मा बाप को बेट
 का प्यार नहीं मिला। म तो इस दद का पी सकता हूँ लेकिन वह नहीं पी
 सकी। दरार आगे भी ठीक नहीं था। जब तक बुढ़ नहीं हुआ, औपधिया
 उससे दरीर का गला दिया। अब यं दद सहन नहीं हाना और वह

पेटों हो जाती है। अब वह बंदोब है। उमरा होना चाहेगा कि गुमरा ही। डाक्टर इस हिस्टीरिया का बीमारी कहता है। मैं इस बीमारी को जानता हूँ कि यह प्यार की बीमारी है। जिस प्यार की ग्राज में यह जीवन भर तटपत्नी रही और वह उम नहीं मिला।

इतना कहने पर चौधरी एक घार फिर ऊपर गया और साध ही नीचे आ गया। कमला हाँ में आ गई थी। आगे की बातें सायनजिन बापों पर आ गई। इस सम्भ में उमरा बनवाया कि वह स्त्री प्रादुर्गरी हैल्य सैर कया-विद्यालय आदि दुलजाने में कितने प्रयास किए गए।

बातों के उमरा में इस प्रकार किया गया—किन्तु प्रकाश, काम करने का अब मजा नहीं रहा। काम की कुर नी। गाव दो दल में बंट गया। एक दल मेरा समर्थ है तो दूसरा नल आपक चौ० द्योता का जिसके यहाँ आप रत है। चुनाव में मेरा दल हार गया था। यह मेरी मायसा है कि मावजनिक कार्यों में यह मेरा भाव नहीं राना चाहिए। यदि ऐसा हागा तो गावा का विकास ठप्प हो जायेगा। सर! छोडा इन बातों को। आओ मैं तुमको अपना खेल दिखाऊ।

मैं चौधरी के साथ उठकर बाहर आया। मैंने चौधरी का रत दला। दूर तक फला हुआ रत वही गेहूँ वही चना वही सरसा वही कमाद, वही तारा भीरा। इस हरियाली को देखकर बड़ी सतुष्टि हुई। मैंने अनुभव लिया कि वास्तव में देश का निर्माण हो रहा है। यह वह भूमि है जहाँ का किसान पीने का पाना लाने के लिये कासा तक चार घंटे ऊट पर लाया करता था और अपने घर पर सुरक्षित रखता था। गावा में

पानी प्रायः खारा होता था। पानी के दो विभाजन थे—मीठा पानी घाँस खारा पानी। अतिथि को पिलाने के लिये भी दिया जा सकता था किन्तु मीठा पानी नहीं। अब उसी घरती पर जल की बल-बल की लहरें हिलो ले रही हैं। घरती का किसान बदल रहा है।

मने चौधरी से फिर मिलूँगा कहकर बिदाई ली। रास्ता लम्बा था। सड़क के दोनों ओर की हरियाली मनाहारिणी थी। किन्तु मेरे मस्तक में था चौ० पतराम उसकी बीमार पत्नी और स्कूल का बावू और उसकी पत्नी। यह क्या है? मनुष्य सब कुछ पाकर भी सन्तुष्ट नहीं है। उसके बाद में सोचने लगा पुष्पा के बारे में। यह क्या नाटक है? ये सब मनोविकारा मेरे के हैं जहाँ प्यार की प्यास है और वह मिट नहीं पा रही। सत्तार में सब कुछ सुलभ है किन्तु प्यार प्यास इतना सस्ता होते हुए भी इतना महंगा है कि किसी बाजार में नहीं मिलता और किसी कीमत पर नहीं मिलता।

स्कूल आ गया, लंबा निकल गया। गाँव भी जा गया गलियारा भी धीरे धीरे सब निबल गई, किन्तु मन में इन विचारों के भँवर जल निरन्तर चक्कर लगा रहे थे नहीं निवस पाए। घर में पहुँच गया और घर में ऊपर कमरे में।

रविवार का दिन था । सभी बच्चा की छुट्टी थी । दिन भर घर में कालाहल रहा । घर में बच्चों की झगड़ी सेना थी । उनमें किसी में भेद करना सम्भव नहीं था । कुछ बच्चे सरपंच के कुछ उससे छोटे भाई हरिसिंह के । उस कुहराम में माँजी की आवाज तीक्ष्णतम थी । बच्चों पर निरंतर गालियों की बौछार तथा साथ में झगड़ापकों की भी अनावश्यक घसीटा जाना कि तु बच्चे माँजी की इन धमकियाँ क आदी थी । उसकी आवाज न समझने वाले लाठडस्पीकर के गाने के समान थी । धीरे धीरे यह कुहराम भी शांत हो गया । स्त्रियाँ रोता में चली गई । पुष्प सुबह ही घर से बाहर थे । बच्चे एक एक करके घर से निकल गए ।

यह अप्रिय शांति मरे लिए असह्य हो गई । कुछ काम करने की धुन थी । मुझे भी रविवार का एक सदुपयोग याद आ गया । मैं सीधा बाबूजी की ओर चला । बाबूजी के जीवन की भूमिका मुझे मिल ही चुकी थी । जत इस मिलन में कुछ रोचकता आ गई । मुझे उनका पता — ठिकाना याद था— गढ़ के सामने चौ पतराम का मकान । मैं अनुमान लगाया कि यह नेता पतराम का ही पुराना मकान होगा ।

मेरा अनुमान ठीक निकला । गढ़ के विशालकाय द्वार के सम्मुख पहुँचा तो मुझे बाबूजी के मकान का दूँदने में देर नहीं लगी ।

एक टूटा फूटा मकान जिसमें कुछ कमरे गिर चुके थे आर कुछ गिरा बाल हो रहे थे । शायद इनकी मरम्मत नहीं हुई वरना यहाँ के अच्छे मकान भी हिफाजत रखने पर काफी चलाऊ होते हैं । गाँव में इस दुपहरी में मिलने जुलने वाले आदमियाँ की मर्यादा कम होती है । अबूतरे पर अकल बैठे एक बूढ़े से मैंने पूछा, क्या बाबूजी यहाँ मिल सकते हैं ?

वह बाबूजी के नाम से नहीं समझा । कुछ देर असमञ्जस में पड़कर उसने कुछ स्पष्टीकरण किया क्या पतराम का बेटा ?

मैंने कहा, 'हाँ जी ।

उसने सोचकर उत्तर दिया, घर ही होगा अभी तो बाहर बड़ा था । ऐसा करा कि आप यह कूटा खटखटाओ । न दर होगा, आ जायेगा ।'

मैंने इस वृद्ध की सम्मति के अनुसार काम किया । कूटा खट-खटाया । अंदर से एक पतली सी आवाज आई, कौन है ?

मैंने सयत स्वर में कहा, मैं हूँ प्रकाश, फील्ड आफिसर ।'

मेरे उत्तर का कोई प्रत्युत्तर न था । मैंने बाबूजी की अनुपस्थिति का अनुमान लगाया । बाबूजी होते तो विल्ड न करत । फिर भी थोड़ी प्रतीक्षा में आगे पीछे होता रहा । इतने में द्वार खुला और एक महिला साड़ी पहने खड़ी दिखाई दी । मेरा पूछना स्वाभाविक ही था, बाबूजी नहीं है क्या ?

प्रेमलता

यह बोली, अभी घा हो रहे हैं। पानी लाने गए हैं। भाइये
बैठिए।

इस ग्रामीण यानावरण में एक गहरी निवास में एक गिरा
गिराधान महिला देगवर मेर हूय में उपन-पुपन होने लगी।

व्यावहारिक दृष्टि से तो नदी कि नु व्यावसायिक दृष्टिकान मे
मने महिला का अनुनय स्थाकार करना उचित समझा। मुझे घर पर एक
कमरे में बैठने का स्थान दिया गया। कमरा टीक डग से व्यवस्थित था।
यद्यपि उसमें स्थान कम था किन्तु सामान की मात्रा-मजरा में किसी
कुशल हाथ की कारीगरी प्रगीत होती थी। मुझे अधिक समय तक विलम्ब
नहीं करना पड़ा। बाबूजी सिर पर घड़ा हाथ में बरी' (पानी निकालने
की रस्सी) और डोल (पानी निकालने का बतन) लिए मकान में प्रविष्ट
हुए। पानी का घड़ा रखते ही वे सीधे मेरे पास आये और क्षमा-याचना
का-मा भाव लेकर बोले, क्षमा करना साहब मुझे भेरी हो गई।

बाबूजी की भाव-व्यञ्जना देख कर मुझे दफ्तर के बाबू और घर
के बाबू में स्पष्ट अंतर दिखाई दिया। अभी हाजिर हुआ कहकर वे पुन
अदर चले गए। वपडे बत्तल कर तुरन्त वापिस आ गए और बठकर
बोल 'माफ करना साहब उस दिन मैं बहुत व्यस्त था। कहीं राकड़ के
हिसान में गड़बड़ी थी।

काम-व्यस्तता में ऐसा हो ही जाता है और हिसाब-किताब के
मामले में ऐसी बातें अस्वाभाविक नहीं हैं। मैंने कहा।

बाबूजी बोले, 'कई दिनों से दिखाई नहीं लिए कहीं चले गए
थे क्या ?

‘नहीं, मैं तो यही था। कुछ इधर उधर मिनने म रहा। मैं दो दिन पहले कोठी चला गया था। आपके पिताजी ॥ मिला। मने कहा।

अंतिम गे मे उत्पन्न हुई प्रतिज्ञा बाबूजी के चेहरे पर स्पष्ट हो गई और कुछ गम्भीर हुए कि इतने म बाबूजी की श्रीमती एक ट्रे म चाय लेकर आ गई।

चाय को टे रखकर वह महिला भी एक कुर्सी पर बैठ गई। चाय बिल्कुल नये ढंग से तयार की गई थी। सभी साज-मज्जा आधुनिक थी। एक मोटी प्लेट मे बिस्कुट थे। तब तक मैं श्रीमतीजी के नाम से परिचित नहीं था। बाबूजी ने परिचय दिया, आप है मेरी धर्मपत्नी सुधाराणी, मट्रिक मे सैकण्ड डिबीजन।

सुधाराणी हल्की-सी मुस्कान से बोली, कौन सी मट्रिक हूँ जी, ऐमे ही किसी प्रकार निकल गई। नाम हो गया।

‘भाजकल अपने राजस्थान मे मट्रिक का भी बडा महत्त्व है। स्त्रिया कहाँ पत्रो लिखी मिलती है। मने कहा।

सुधा ने चाय तयार करते हुए कहा इस गांव मे वैचार जीवन बिना रही हू। किसी शहर मे होनी तो मेरा माने पढने का विचार था। पिताजी तो हम वय ही कालेज मे प्रवेश न्तिवा रहे थे, किंतु ये माने महां।’

मने बाबूजी की सम्बोधित करते हुए कहा, ‘आप किसी शहर म अपना तबाखला करा लीजिए। यहा गांव म आपके लिए क्या रक्वा है ?

हमका उत्तर भी सुवा न न्थि। मने तो बहुत आग्रह किया। मरे पिताजी की भी इच्छा प्रबल थी किन्तु इनके पिताजी को स्वीकार

नहीं था ।

अजी साहब बाबूजी बाले आप ता पेरे पिताजी मे मिले ही होंगे लेकिन मरी माताजी से नहीं मिले । इनके स्वभाव में आकाश-पाताल का अंतर है । पिताजी का स्वभाव ठीक है । मैं तो इनको माता-पिता की तरह पूजनीय मानता हूँ । किंतु मरी मानाजी ओहा मत पूछो, चण्डी है चण्डा ।

बाबूजी कुछ कहन ही जा रहे थे कि सुधा ने बीच में टाक लिया, क्या अन्त है आपकी हरकत का मेरे मन में आया सो यह लिया ।'

बाबूजी सुधा की फटकार से दब गये । फिर सुधा ने बात का सन्नाहित रूप देते हुए कहा स्वभाव है जो अपना अपना । इधर बाबूजी का स्वभाव गम और उनका स्वभाव भी बुढ़ापे की वजह से कुछ खराब हो गया है । इस लिए कुछ ठीक बठा नही ।

फिर यहा आने की क्या नीयत आ गई ? मैंने पूछ हा लिया ।

'राइ के आगे बाड भली बाबूजी ने फिर चटक कर उत्तर दिया ।

ये तो भूठ बोल रहे है । बात असल यह है कि वह घर दूर पन्ना है । यह कुछ नजदीक है । घर भी जिन पर जिन फूटता जा रहा है । इस बार इसकी मरम्मत कराने का भी विचार है । सुधा ने बात सवारी ।

ठीक है इस घर को भी ठीक करवा लाजिए । मैंने एम ही हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा ।

हम चाय पीत जा रहे थे । चाय पीने का भा हम ताना का

दग भिन भिन था। बाबूजी का तरीका—हिंदी की प्रारम्भिक खड़ी बोली की कविताओं की तरह सरल किंतु पुरातन—चाय का प्लेट में डाल कर फिर सरड की भटपटी आवाज करके पीना। मेरा अपना—छायावादी कविता की तरह थोड़ी चाय डालकर धीमी आवाज से निगलना। सुधा का तरीका—नई कविता की तरह अनि आधुनिक—कप फुल, बिना लय और छन्द की आवाज के धीरे धीरे रमपान करना। बाबूजी अपना एक कप चाय समाप्त कर चुके थे मैं समाप्त करने वाला था किंतु सुधा का कप अभी गेय था।

मैंने एक घूंट लेते हुए पूछा आपको मौकरी करने की आवश्यकता ही क्या पछी जय आपके पास इतनी जमीन जायगाद है ?

बाबूजी एक अभियुक्त के समान एक मजिस्ट्रेट के सामने थे और सुधा जैसे उनको बचानत कर रही थी। बाबूजी को इस प्रश्न का उत्तर देने की फुरसत कहाँ ? वे बिस्कुट खाने के काय में जुटे हुए थे। सुधा ने कहने में बड़ी तत्परता की तायद उसको डर था कि बाबूजी सत्य को तन रूप लेकर खड़ा न कर दें। उसने कहा प्रकाशजी आराम से जीवन की गति कुठिन हो जाती है और मनुष्य निष्क्रिय होकर इतना अकमण्य हो जाता है कि किसी भी कठिनाई का सह्य करने में समय नहीं हा पाना। हम तो अपने परो पर ही खन होना चाहते हैं।

सुधा की लोल आग और अकाट्य थी। मैं धागे नहीं बाल रहा। हम चाय समाप्त कर चुके थे। सुधा चाय के बतन लेकर अन्तर खनी गई। अब बाबूजी मेरे सामने थे। मैंने अब अपने विषय पर आना उचित समझा। मैंने स्वाभाविक स्वर में कहा, क्या साहब, आपन मेरे

प्रस्ताव क बारे म क्या सोचा ?'

बाबूजी बोले मन सुधा मे जानवान करलो है । 'ताम' यह तैयार है । अभी आ रही होगी । आप और कुछ लें ।'

मने स्पष्ट किया इसम अधिक पूछन की आवश्यकता नही । काम ता आपकी करना होगा । जबल सुधा क हस्ताक्षर होते । म अभी काम भर लेता हूँ और यह भी आपका बना दूँ कि चार घण्टापका बाल केस भी आपका नाम से जायये ।'

बाबूजी के होठा पर हल्की सी मुस्कान थी । व बाल 'जसा आप उचित समझे ।

इनम म सुधा भी आ गई । चार पाँच हस्ताक्षर प्लेट म ताम' हमारे सामने रखी रखते हुए बोली 'यहा तो यहा है । जानवान तो कुछ है नही । अच्छे गाँव म आकर पड़े है ।'

मुझे मन ही मन हँसी आ गई किंतु मुझे तो काम करना था इसलिए इस विषय पर जाना ठीक नही लगा । मने कहा 'मापस बाबूजी न बामा सम्ब धी बातें की ही हागी'

मेरी बात पूरा होने से पूरा ही सुधा बोन पड़ी 'म तो बार बार यही कहती हूँ कि हमे परा पर खड़ा होना है । सफल ही जीवन का सही उपयोग है । उस उपयोग मे ही जीवन का यथाथ सुख और भान द है । हाथ फलाना नपुंसकता का चिह्न है । हम कभी पिताजी को कष्ट देना नही चाहते है अपना पेट भी अपने प्रयत्न से नही भर सकते तो उस जीवन का मय नून्य है । हमारा वेतन कम है । हम इस काम मे सहयोग देने क लिए प्रस्तुत हैं । मन उसा दिन इनमे कह

दिया था । पूछो दिनेशजी (बाबूजी) से ।'

दिनेश' गड्ढा अनायास ही सुधा के मुह से निकल गया । मैं अब तक बाबूजी के नाम से अनभिज्ञ था । सुधा ने मरी बहुत बड़ी समस्या दूर कर ली । मुझे सामाजिक होने में बहुत बड़ा सहारा मिला ।

मैंने झट से अपने काम निकाले । सुधा का बीमा भी कर दिया । एजेंट का बीमा करना अनिवार्य होता है । सब कुछ समाप्त कर के मैंने सुधा के हस्ताक्षर करवा लिए । जब वह हस्ताक्षर कर रही थी मैंने एक ही नजर से सुधा को सागापाग देख लिया । नितान्त निमल गौरवर्ण, गाल बिन्दु छोटी मुष्माकृति, होठों पर स्वाभाविक हल्की लालिमा छोटे छोटे दाता की धबलपक्ति नासिका छोटी किंतु तीखी । आँखें गायब अधिक बड़ी नहीं थी । मझुआ बंद । शरीर न भारी न पतला । चेहरे पर जरा सा अहंभाव ।

मैंने अपना काम पूरा कर लिया । 'नमस्ते करके' बाहर निकला । एसा महसूस हो रहा था कि एक दम किसी सहर से गाव में आ गया हो । मन अनुभव किया कि सुधा ने अपने मुधामय व्यक्तित्व से घर का वातावरण माधुर्य से आतप्रोन कर रक्खा था । मैं घर पहुँचा । मैंने देखा कि घर में सुनसान वातावरण था उजड़ा हुआ सा वीरान सूनापन बबल दीवारें मौन खड़ी थी । जब अंदर प्रवेश किया तो मैंने देखा कि पुष्पा एक टूटी हुई खाट पर पड़ी थी । खाट की कमर टूट चुकी थी धीरे जमीन का छू रही थी । पुष्पा निद्रावस्था में पड़ी थी । घर में और भी पलंग था । वह उन पर क्यों नहीं साई ? सोई क्या थी ? पड़ी हुई थी मन भारे हुए एक मली घाती में बिखरे वाला

से चेहरा डरे हुए । उधर था मुधा जो जीवन में आम्ब्या रखती थी । प्रभाव को दूर करने की महान् आकांक्षा थी उसमें और वह भी गौरव मय ढंग से । समस्त वायुमन्त्र में जैसे उल्लास का लहरें दौड़ रही हैं । इधर यह है पुष्पा जिसका सधरा समाप्त हो गया था मन परागत हो गया था कोई महाप्रसाद का अवगोचर केवल रास के रूप में रह गया हो और उसका स्वामी बोलता गया हो । यह कभी जीवन की विभीषिका थी ।

पुष्पा ने धार से अपना मुँह उठाया और मुँहें दलकर फिर यन्त्रे ही हताश होकर पड़ गई ।

मैं अपने कमरे में गया । जाकर अपने पाग पर लट गया । दो चित्र मेरे सामने धूमने लगे पुष्पा और सुधा के । जैसे कि दो पुस्तकें थी—एक में था हृष, उन्माद, मादकता अठबेलियाँ और दूसरी में थी मलिनता चिन्ता, उन्मादी का फना तथा एक विस्तृत सागर जिसमें लहर उठती हो दद की, विषाद की अवसाद की बदना की पीड़ा का जिनका कभी क्षान्त न होने वाला है । मोना विवाहिता है । फिर यह अन्तर क्या ? मैं इस चिन्तन में लीन था कि इतने में पुष्पा ने प्रवण किया । मेरा हृदय किसी आगका में धक्कने लगा ।

पुष्पा के हाथ में एक कागज था । मैं असमञ्जस में था कि इस छोटे से प्रसंग में यह कागज कहीं से उठा लाई और यह यहाँ क्यों आ गई । वह चुपचाप घम में कुर्सी पर बैठ गई और कुर्सी खींचकर मेरे समीप ले आई । मैं लगा हुआ था सो उठकर बैठ गया । उसने कागज मेरे सामने प्रस्तुत किया । कागज में ऊटपटांग लाल और नीली पेन्सिलों की रेखाएँ खींच रखी थी । वह बोली, प्रकाशजी मैंने आज एक

चित्र बनाया है ।'

म श्रव समझा कि पुष्पाजी अपनी चित्रकला का प्रश्न करने आई थी और मुझे कुछ रहस्य मिली । चित्र का मूल्यांकन करने के वहान कागज पर सचित्र रेखाओं को इधर उधर घुमाया और यों ही उसकी प्रशंसा कर दी, पुष्पा, चित्र तो बहुत सुंदर है । यह किसने बनाया ?'

मानव मात्र प्रत्यक्ष रूप से अपनी प्रशंसा से तृप्ति पाता है ।

प्रगति और दुर्गति में क्रमशः इसके प्रभाव और अप्रभाव का सहयोग रहता ही है । पुष्पा मेरी प्रशंसा पाकर एक बार तो गदगद हो गई और चित्र का विश्लेषण करने लगी, यह ज्वालामुखी का पर्वत है । यह फूट पड़ा है । विस्फोट हो गया है इसमें । यह लाल लाल लावा निकल रहा है ।' इतना कह कर जोर जोर से मट्टश्रास करने लगी ।

मैंने चित्र को ध्यान से देखा । लाल रेखाओं का तात्पर्य ज्वालामुखी से निकलने वाली अग्नि से था और नीली रेखाएँ थी घरातल । चित्र पुष्पा के हृदय की भावनाओं का स्पष्ट चित्रण कर रहा था । भावों के अनुरूप कला की कुशलता तो नहीं थी किंतु पुष्पा की रुचि छात्र जीवन में चित्रकारी में रही होगी, ऐसा प्रतीत हुआ । कलाकार की अतृप्त कामनाएँ उसको महान् कलाकार बना सकती हैं तो साधारण व्यक्ति को पागल ।

मेरी प्रशंसा की प्रतिक्रिया में पुष्पा ने कहा आप बहुत अच्छे हैं । आप मेरे भैया हैं । इस घर में सब मेरे दुश्मन हैं । मुझे पीटते हैं । मुझ इहोते कुएं में डाल दिया । आप मुझे निकाल लेंगे न ।' मैं पुष्पा की वदना की अनुभूति की गहनता के गले तक पहुँच गया । पुष्पा पांडित है । बहुत पंडित । मैंने उसको थपथपाया और

वहा, जरूर निवाल लूंगा, पुण्या । तेरे क्या द

पुण्या—मेरे सिर मे दद है पेट म दद है । अब नहीं है । अब आप सामने बठे हैं । पहले नहीं था ।

मे तथ्य को पकड़ना चाहता था कि नहीं सकी । उसने सिर और पेट का दद बतला कुछ और ही थी जिसका अश मान भी आभास घरती सास ले रही थी । जाकाश अपने रथ को हाव पश्चिम की ओर बना जा र हो गया था । पुण्या चली गई ।

माजी एक भरे पूरे घर की मालकिन थी । घर में उसी का राजपाट था । घर के सभी महकमा में उसी के आदेश चलते थे । आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी नीतियाँ उसी की मन्त्रणा से तय होती थी । वैसे वह गांधी की तरह समन्वयवादिनी भी थी । वय यदि की सिधिलता का प्रभाव उस पर न के समान था और वह सभी क्षेत्रों पर उचित नियन्त्रण रखने का सामर्थ्य रखती थी । ज्यों त्यों अधिक हस्तक्षेप करने के पदा में नहीं थी किन्तु उसकी बुद्धि का लोहा सभी मानने थे । अपने पुत्रों की समझ में वह जनतन्त्रीय बन जाता तो बहुधा को डिक्टेटर की तरह डाट देती थी किन्तु अग्रोध बच्चे प्रतिक्रियावादियों की तरह उगरे आदेशों को अवहेलना करने में नहीं हिचकिचाते थे जब कि वह उस समय अपना उग्रतम रूप धारण कर लेती थी । वह अपना प्यार साम्यवादी ढंग से समान रूप में वितरण करती थी यही कारण था कि किसी के हृदय में उससे प्रति कटुता नहीं थी ।

माजी के पति थे हरीराम । यह प्राणी घर के भीतर गूँघ था । गाँव में उसका प्रभाव उस दीरघ के समान था जिसमें केवल टिम-

टिमाहट ही रहती है प्रफाश की लहरें नही। गाव से बाहर उसके यत्तित्र की छाप थी। इसका कारण था मन्त्री तना का उसका विशिष्ट ज्ञान जिसके प्रभाव से वह बहुत से जसाध्य रोगों की चिकित्सा करता था साप काटने वालों को मरने नहीं देता था मन्त्रिया के इलाक़े का डारा करता था डाक़ण स्यारी के प्रभाव को झाड़ा देकर ठीक करता था। बाहर के कमर की एक आलमारी उसके लिए रिजव थी जिसमें वह अपनी माला तबालु तथा कुछ जड़ों बूटिया रखता था जिसका वह मन्त्री जनों के साथ कभी कभी प्रयोग करता था। वह दिन भर एक निश्चित स्थान, निश्चित खाट तथा निश्चित वेगभूषा के साथ बैठा रहता था और अपनी माला फेरने में ही लीन रहता था। घर के किसी भी काम में उसका हस्तक्षेप नहीं था। सुबह समय पर चाय प्या जाती, दोपहर को खाना दोपहर के बाद की चाय और रात का खाना। इनके अनिश्चित घर वालों को उसका कोई चिन्ता नहीं थी और वह भी घर की ओर से निश्चिन्त ही था। कभी किसी कारण वह कुछ भी कह देता तो माजी कहती राम का नाम से तुझे क्या है? तू तो दुनिया को पंगा कर अलग हट गया। यह सब कुछ मरे ही जिम्मे पना था। वह फिर राम भक्त राम भक्त कहकर माना की गति लेत्र कर पना। साठी उसकी सहयोगिता था। कुता से उसकी चिन्ता थी। किसी कुता का घर पर प्रवेश नहीं होने पना था। इसलिये उसका उपस्थिति भा अपना महत्व रखती थी।

मरपच का बूँ पांच बच्चा का मा थी। वह प्रायः रागिली-गी रहता था पर दिन रात खान करने में नही रुचिकिता थी। बच्चा की

उसे कोई परवाह नहीं थी। छोटे-छोटे दो बच्चे तो नगे ही घूमते थे, प्रायः धूल में लिपटे ही रहा करते थे। दा बड़े लड़के स्कूल जाया करते थे। व भी दिन रात एक ही बेश भूषा में रहा करते थे। रात की घर की तथा स्कूल की अलग-अलग पोशाकी में इस घर का विश्वास नहीं था। य राजाना स्नान करने तथा कपड़ा बदलने के आदी नहीं थे। सरपच जब कभी बाहर से कुछ दानकर आना तो एक बार एक अच्छा भाषण सफाई और स्वास्थ्य पर झाड़ देना किन्तु सरपच की बहू यह कब-कब पिछ छुड़ा लेती कि मेरे में कुछ नहीं होता। मैं तो मरी जा रही हूँ। आप भी तो इन के बाप हो। कर लिया करा। और सरपच इनको सुना अनसुना करके घर से निकल जाता। अडीस पडीस की मिया जब उस सरपच की बहू कहकर पुकारती तो उसका एक सेर खून बह जाता और वह मन ही मन बड़ी प्रफुल्लित होती।

सरपच के छोटे भाई हरीसिंह की बहू का चौखटा भी ठीक था और वैसे वह बन टन कर भी रहती था। इस घर में यही एक औरत थी जो अपने व्यक्तित्व को समझती थी और माजी के आदेश पर कभी कभी गुराती भी था। इस गांव की सभी औरतें घाघरा, घाढ़णा पहनती थी और बजाउत्र की जगह आन्नी की तरह की रंगान कमीज। कोई नई नवली दुल्हन कमीज के नीचे बाजार की बनी चोना भी पहन लेती थी। हरीसिंह की बहू इसी श्रेणी में थी। नाम गान्ति था और माजी भी शांति कहकर पुकारती थी, वम बहू का नाम लेने का यहा रिवाज नहीं था। माजी ने ही यह परम्परा डाली थी। गान्ति कुल में पानी लान समय अपना पूरा श्रु गार करके घर से छम छम करती बाहर निकलती जैसाकि हम क्षेत्र का

रिवाज था। इन गांधी की पनपटो का दृश्य दर्शनीय होता है। गाँव में जब पणिहारी का रूप धारण करके घर से निकलती राजस्थान के सोक गीत पणिहारी ये लो का साकार चित्र मेरा आँखा के सामने उपस्थित हो जाता। धीरे में उस गीत की एक दो पंक्तियाँ जो मुझे याद थी गुनगुनाया करता। यहाँ की स्त्रियाँ सिर के बालों को एकत्रित करके सिर के बीच में जूँटा बना लेती थीर उसी पर कपड़े की रुंदी पर घड़ा रखती है। परांगों को यह भेष प्रजीव-सा लगता किन्तु यहाँ के नवयुवकों का हृदय इस रूप पर झूम उठता था। मुझे भी इसमें धीरे-धीरे आकर्षण दिखाई देने लगा।

गाँव में दो बच्चे थे किन्तु दोनों को ही वह सवार कर रखती थी। वह बोलने में बहुत लुकी थी। फुरसत में वह भरे से भी बात कर लेती थी। उसकी बातों में रस था। कभी कभी वह घर पर टीका दिखानी भी कर देती थी।

गाँव का पति एक कमठ किसान था। इस घर के पल्ले दो सौ बीघा जमाने थे। पहले यह सारी जमीन बिरानी (बिना सिंचाई की) थी। फिर भी यहाँ दो फसलें तो हमेशा ही करती थी सावणी में बाजरा मोठ गुवार जुवार और हाड़ी में चने जी तारामीरा और सरसा। अभी नहर आने से इस जमीन में पानी लगने लग गया। इसलिए सावणी में गन्ना और कपास की खेती शुरू हो गई और हाड़ी में गेहूँ की। फसल में अनाज की वृद्धि हो गई थी किन्तु उस अनुपात में व्यय भी बढ़ गया था। पानी का टक्स ओवरसियर और पटवारी की रिवत आदि सब इसमें जुड़ गए थे। किन्तु सब कुछ मिलाकर आय में वृद्धि हो गई थी और भावों की तेजी से गाँव का वायापसट होने लग गया था। आजादी के बाद जो

परिवर्तन दिखाई दे रहा था। उसका मूल कारण गावों की आर्थिक दशा का सुधार ही था। हरिसिंह साधारण सिपिन होते हुए भी आज की परिस्थितियों के प्रति जागरूक था, किन्तु उसकी श्रीमती उसकी उपेक्षा करता थी उसके मटमले कपड़े और सुनकी तीक्ष्ण घूँप की चित्रित श्यामला के कारण से ही। वह कभी कभी अपनी नयना का मटका कर मुझे कह देती, 'ऊँ हूँ क्या है? काला कसूटा शरीर में दुग्ध आती है।' इसके इन वाक्यों से मुझे अपने पर गव हो जाता और मैं अपना सीना फुलाकर एक बार मन में पुलकित हो जाता। पर इस घर का आर्थिक स्त्रोत हरिसिंह ही था। जब अनाज निकालने घर घर के सारे कोने भर जाते और कहीं रखन की ठौर नहीं मिलती तब सबन हरीमिह की ही सराहना होती थी। उसके पक्षित्व का प्रभुत्व उस समय घर की सभी सदस्यों पर छाया हुआ रहता था। अनाज निकालने का काय सम्पूर्ण हान पर वह नई चाटी कमीज और चीटी शोती पतला और गाव में गव में सीना फुलाये घूमता किन्तु उसके काले शरीर पर ये कपड़े ऐसे लगने जैसे किसी कीकर वक्ष के सूने तन पर सफ़ेद चादर डाल दा गई हो। वह शांति का आँखें दिखा दिया करता था। शांति उससे भय खाती थी।

मैं इस परिवार में घुलमिल गया था। सबने परिचित होने पर भी मेरे निकट सम्भव मैं आन वाल कुछ ही सदस्य थे। इन दिनों मैं शांति सुलका बालें करने लग गई थी। एक दिन घर के सुनेपन से ऊबकर वह अपनी समबदस्का सहली को लेकर मेरे कमरे में आ गई। मैं शव बना रहा था। मेरे सामने एक बड़ा सीसा रक्खा हुआ था। शांति मेरे पीछे

दिमी ह । कुछ कहने ही नहीं । आखिर मुझे ही कहना पडा ।
 या किया ? भलग हो गए । होओ मेरी बला से । मुझे क्या ?
 बेटा, वह मुझे बिमारी दे गया । प्यार का बदला प्यार से नहीं दे सका ।
 वह भी क्या करे ? सारा कुसूर तो उस चुड़ल का है । बेटा, मैंने ऐसी
 सड़की नहीं देखी ।'

चाय समाप्त हुई और उसके साथ ही बात और बरसात भी ।
 मैंने चौधरन की हों में हाँ मिलात हुए इतना ही कहा 'भाजकल माताजी
 ऐसा ही कुछ हो गया । असली बेटे भी निहाल नहीं करते । यह तो
 वहम है आपको कि वह आपका बेटा नहीं है । सभी बेटा का यही हाल
 है—चाहे अपने हाँ या पराये । गादी से पहले ता सब बेटे माँ के ही होते
 हैं, किन्तु शांती के बाद श्रीमतीजी के जान क पास बठ जाती है और
 धीरे धीरे अपनी गीता का उपदेश गुरु करती है और माँ बाप के चढाये
 हुए रंग पर ऐसा झुग मारती है कि कुरेदन पर भी उसका नामोनिगान
 नहीं रहता । माँ बाप का भक्त पत्नीभक्त बन जाता है । घर घर की
 यही कहानी है । आपको अफसोस इसलिए है कि वह आपकी कात स पग
 नहीं हुआ ।

बात को समाप्त करके मैंने चौधरन की आवा की आर देखा ।
 उसकी आवा म आमुआ के दो माटे मोती चमक रहे थे । व स्वत बाहर
 जाने को तयार थे । किन्तु चौधरन ने अपनी पाती के पल्ल स उनका
 अस्तित्व निटा लिया ।

मैंने फिर जाने की बात कहकर इस भग्न हृदय से विदा ली ।
 दिनेग और मुआ के प्रति मेरे विचार बल चुके थे । किन्तु मैंने निराय

लिया कि हृदय की सरिता से प्रेम की एक ही धारा प्रवाहित होती है
 चाहे उसे मा खींचले चाहे उसकी पत्नी । एक तो तड़पती ही रहेगी ।
 फिर कोख का अंतर रहता ही है । अपने और पराये का भेद प्रकृति
 का दिया दृग्भा है । इसमें मानव का क्या नहीं चलता । फिर इस पर
 विचार करने से खाई और चौड़ी हो जाती है । प्रत्यक्ष रूप में न देखने
 वाली के भी देखने में आ जाती है । चौघरन इसका दुख करती रहे
 तो करती रहे । इसका कोई विकल्प नहीं था ।

परीक्षा देकर रामसिंह आ
 सातरी बार परीक्षा देकर भाया था
 बताया गया कि कई स्थानों पर घू
 गया और साथ में अपनी बहू का
 भाग्य से अधिक लम्बी थी और भाग
 में जूड़े से लम्बाई और भी मही लगत
 उसका सोन्य छुनक उठता था। पाप
 के प्राण का मालि य और उसी
 लावण्य की घुंघट से आहत कर बट
 के तुरत बाण पूर्णिमा का चानि निरुल
 की भाभा धूमिल पड गई। किन्तु जल
 दो प्रकाश स्त्रोत से प्रतीत होते थे।

रामसिंह दिन में एक बार :
 नीजवान था। उसका सविला रंग भी

छालनी भी बोलती है जिसमें सत्तर सौ छेद ।'

रामसिंह इस बात से नवा नहीं । वह और गर्म होकर बोला 'यह सब तेरे कारण है माजी । तू मेरी शादी नहीं करती तो कभी का पास हो जाता ।

मादी ने क्या तेरा हाथ पकड़ लिया कि तू गादी को ही दोष देना है । गौर जसी बड़ घर में भा गई और तू—मेरी गादी कर दी सो फँस हो गया । माजी न मुँद दबाते हुए कहा ।

इस वाक् युद्ध के बीच में पुण्या की चीख बढ़ हो गई थी । माजी ने वृद्ध को एक मिट्टी के बर्तन में डालते हुए आदेश दिया, 'गौर न कर, जा सोल दे इस कलमुही को ।'

रामसिंह ने जब दरवाजा खोला तो उसका सारा शोध काफूर हो गया । वह घन्टर का दृश्य देख कर जोर जोर से हँसने लगा । उसकी हँसी देखकर सब घटी एकत्रित हो गए । पुण्या न इस अवधि में माजी की ओरणी और घाघरे को चीर करके उल्टे घड़े के ऊपर लकड़िया के सहारे एक काट्ट न बना लिया और कोयले में नाचे लिख दिया वृद्ध की मा ।'

माजी की एक आँख में शोध था और एक आँख में हँसी । रामसिंह ने माजी के दोना हाथों को हिलाते हुए कहा, 'मेरी मा, सारे घर की मा यह देख तेरी करतूत का नमूना । ठाक है तेरे ही कपड़े फटे हैं ।'

इसके साथ सबको अपने अपने वस्त्रों की सम्हालने की चिन्ता जागी । सबने अपने कपड़े सुरक्षित पाकर खर मनाई । सभी हँसते

हँसते लोट पोट हो गये । माना मन ही मन बढ-बढा रही थी ।

मे अस्तित्वहीन की तरह सारा दृश्य देखता रहा और इसके पीछे अदृश्य रहस्य को ढूँढने लगा और इसी उधड़ेबुन में अपने कमरे में चला गया ।

रात्रि को मदिरा का एक झट्टा लेकर रामसिंह ने मेरे कमरे में प्रवेश किया । मेज़ पर बोटल लेकर वहाँ पर बैठ गया । मैंने आज तक इस घर में शराब नहीं देखी थी । एक निश्चित मुक्क ब' हाथ में शराब दल कर आश्चर्य ही नहीं हुआ कि तु इस बात की निराशा भी हुई कि बदलते हुए समाज के जीवन का 'यतिरव' घट रहा था । उसने मुझे भी पाने का आग्रह किया मैंने कहा आपको पिया हुआ दल कर ही मुझे पीने का सा आनन्द आ जाएगा । उसने अपनी प्रिय सुरा की महिमा पर एक सुन्दर सा भाषण भाड़ दिया । मुझ जैसे चिक्के घड़े पर उसका क्या असर होता ? मैंने इसकी सुराईयो की कहानियाँ कहने में कसर नहीं रखी कि तु रामसिंह न बताया कि उसके दद की केवल मात्र यह दार थी । य बात तो मदिरा ब' होट स्पर्श करने से पहले ही हो सकती थी । पीने ब' बा' तो पीने वाला शक्तिव जगत से ऊँचा उठकर स्वप्ना के ससार का सम्राट बन जाता है जिसकी कल्पना तो कबल पीन बाला ही कर सकता है अ य नहीं । ये बात समाप्त हो ही चुकी थी कि कटे हुए प्याज लेकर गाति आ गई—लो जी देवर जी इस गद में ही कोई मजा है ? कह कर नीच चली गई ।

रामसिंह दो चार घूट ही निगल दाने कि वह ऊँचा उठ गया । वह तो इसको मस्ती बहता था कि तु मुझे वह निरा पागलपन ही नजर

प्रेमलता

प्राया । मादवता मे समाज के सस्तरा द्वारा सपुट गुत्तियों फूल की पतु-
 दिया की तरह खिल जाती है । मनुष्य के कोने में छिपे हुए रहस्य स्पष्ट
 हो जाते हैं । राम सिंह की बातों से उस गोपनीयता का उदघाटन हो गया
 जिसकी मैं धाज तक प्रतीक्षा में था । दाता के पूर्वाह्न में वह अपने विवाह
 का रोना रोता रहा किन्तु उत्तराह्न में उसने कहा, यह पुष्पा, मेरी बहन
 पुष्पा इस माजी ७ इसका विवाह कूँ स कर दिया । मेरे जीजा जी जिनके
 साथ मेरी बड़ी बहन म्याही था उसक लडका नहीं था । माजी न इस पुष्पा
 की मेरे बड़े जीजाजी के साथ गान्गी करदी । उनकी उम्र पच्चास से कम
 नहीं । बताइये, माजी का हम कैसे अच्छा बतायें । पुष्पा पढ़ी लिखी
 पुष्पा, पागल हो गई ।

इतना कहकर उसने काच के प्याले में डाली हुई शराब का एक
 घूट और लिया और प्याज के टुकड़े चबाते हुए इस प्रकार कहता ही
 ही गया सवनाग है भाई प्रकाश । मेरे ये भाई कमीने है इसको
 दरवाज के अन्दर बंद करते है । इसको छमीटते हैं । भर भाइ प्रकाश
 जीभा प म रे दास्त, न ही भाई हो भाई । अपने भाइयों से
 मैं बड़े भाई । आपको सच कहता हूँ, विस्तृत सच । य पा पी हैं
 सब पा पी है । डूबेंगे एक दिन ।'

रामसिंह मस्ती में बहक गया । उसकी आवाज लड़खड़ा गई ।
 इतने में माजी भा गई । माजी को देखते ही रामसिंह का एक बार ता
 त्योरिया चढ़ गई किन्तु वह फिर थोड़ा सम्भल गया । शराब के पागलपन
 में भी विवेक कहीं न कहीं जागृत रहना है । उसकी बात का मोड़ माजी की

भाग हा गया, 'यह है मेरी माँ अच्छी माँ प्या री माँ,
म री माँ' और इन वाक्यों को स्वर सहरी में गाने लगा। अन्त में वह
बह ही गया, 'पुण्या की दु इम न माँ'

माँजी अपने लाइते पुत्र की ओर एकटक देख रही थी। रामसिंह
संतुष्ट हो बैठा था। बीतल की धाराब समाप्त थी। अपने पट का ठीक
करने के लिए वह मारी ही थी झुका था। माँजी शायद अपने घेरे के बारे
में अपनी प्रकार जानती थी। उसने हँसते हुए कहा, 'चल चला हा, लाना
लाते। ठंडा हा रहा है। बन् उस ठंडा कर ले गई।

य प्रया का सीधा प्रवास मानायन से मुझे कह रहा था, 'मुझे
शायद भानूम था। मैंने मुझे कहा नहीं मेरी ज्योति तुम्हें सीतल लग रही
है। यह मेरा अपनी नहीं है। सूर्य का ज्यादा से मैं प्रकाशमान हो रहा
हूँ। इस लाल की मारी अपने प्रकाश से नहीं बल्कि पुराने प्रकाश से
प्रकाशमान होना है। मुझे अब सूर्य का प्रकाश नहीं मिलना, मैं काला
बनूँगा हा जाता हूँ। लाग कहते हैं, 'ग्रहण लग गया। इस पुण्या के
भी ग्रहण लग गया है। जिस दिन सूर्य रश्मियाँ मलिन हो जायेंगी मैं भी
सन्तान निराश और कठिन हा जाऊँगा इतना कहकर एक ध्येय की हवी
के साथ पश्चिम की ओर प्रस्थान करना गया।

दिव्य धाराधाराओं में जलित पीछा का परीक्षण ने पुण्या के
मानव की आधोदित कर उसे समनुत्ति कर दिया जिसका प्रभाव मेरे मन
पर तो था ही साथ में सारे घर के वातावरण पर भी जिससे सारा
भरा पूरा परिवार बूझता और कुड़न में हुआ हुआ था। यह राग भी
लगा जिसका उत्तार किसी बच्चे या हवीय के पास नहीं। माँजी इसका

आगलपन का दौरा समझकर नेवल ओपधिया भ हो इलाज नहीं दूँती
 कतु मत्र, जत्र होरा का भी प्रथय लेती रही है । उसके विचार में
 कभी भूत पलीन का प्रभाव था किन्तु वह क्या जाने कि यह दुनिया भूत,
 लीतो की दुनिया नहीं है । भूत को छोडकर वतमान को भविष्य को
 पुनहली कल्पनाओं में मजो रही है । मानव ने गरीर के साथ मस्तिष्क
 का भी विलेपण कर लिया है जिसकी गुत्थियाँ सरलता से सुलभाई जा
 सकती हैं वगैरे समाज की रुढियाँ उसके माग में अवरोधक बन कर न
 पायें । माजी कभी हम दलील को नहीं सुनना चाहती थी ।

चादनी दुग की सत्ताहीन वैभव पर व्यग की हँसी हँस रही
 थी । वह भूत था, भर चुका था । सारा गाँव सो रहा था । धीरे
 धीरे मुझे भी नील आ गई ।

हैं ।'

सुधा ने फिर आगे कहा, ये दोनों बंधु अपनी अपनी रचनायें प्रस्तुत कर चुके । अब मेरी बारी है । मैं कोई विशेष लेखिका नहीं हूँ । बस दो चार तुकबनियाँ कर लेती हूँ । मुझे इस सरस राग रग में अपनी बीमा का नीरसता का विस्मरण हो गया है । मैंने कहा, 'मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि मैं समय पर ही आ गया । अब आप सुनाईये ।'

सुधा ने अपनी डायरी खोली । साड़ी के पल्ले पीछे छींचकर घाटी के एक द्वार को हाथ से हिलाते हुए सुधा ने कविता प्रारम्भ की —

आकाश के बादलों ने
कर दी घरती पर छाया ।
राहगीर चल पड़ा
छोड़ कर बसेरा,
हवा बह रही,
शीतल, मन्द,
किन्तु,
धूप फिर आ गई ।
दूर तक फलती
ले पसीने की झोलियाँ
राहगीर थक गया ।
बैठता कहा ?
छोड़ चुका था वह,

चाहने वालों पर है जो कला और कलाकार दोनों को ही जीवित रखते हैं। सुधा सम्भवतः अपनी कविता की समालोचना नहीं प्रशंसा सुनना चाहती थी। मैंने जितने भी प्रशंसक शब्द मेरे पास थे सभी उसकी कविता की प्रशंसा में जोड़ दिए। सुधा हृष से गद्गद हो रही थी। कविता और नारी अपने सौंदर्य की प्रशंसा की भूखी रहती है फिर यहाँ तो दोनों का सम्बन्ध था।

मैं पूछ बैठ। तुमने यह कला कहाँ से प्राप्त की ?

कला तो स्वजात होती है किसी से प्राप्त नहीं होती। इसलिए सुधा ने यह उत्तर दिया, मुझे यह प्रेरणा अपने गुरु से मिली। वे बड़े अच्छे कवि हैं। भारत के हिंदी जगत में उनका नाम है। आपने भी उनका नाम सुना ही होगा—मधुप जी। यह उही की देन है। उनका आना जाना घर पिताजी के पास बहुत था। वे प्रायः हमारे ही घर में रह जाते थे। मैंने कहा नाम तो मैंने ही सुना है। कभी दान नहीं हुए। सुना है, बड़े ही मान्य कवि हैं। कुछ दिन पहले मेरे मित्र ने उनकी कविता सुनी थी। कह रहा था कि बड़ा सुरीला गता है। सोचने का ढंग बड़ा नाटकीय बतलाया। व्यक्तित्व भी बड़ा माहव सुना।

सुधा ने चहरे पर अरुणाई छा गई। बड़े कुछ दूर तक मौन रही। मैं इस प्रसंग से उसने चहर की भाव प्रगति पढ़ता रहा। इस सम्बन्ध में आगे बात करने का मेरे पास मसाला नहीं था। इस प्रसंग का इस प्रश्न से मोड़ लिया आप किन्ने भाई बहन हैं। मैं अपने पिता की इकलौती बेटा हूँ। माँ मर चुकी थी।

मुझे अपनी मा का प्यार नहीं मिला । मेर मासी ने ही मुझे पाला पोसा ।
उनक भी अभी वच्चा नहीं है । सुधा न कहा ।

मैंने मुस्कराते हुए कहा फिर तो जोड़ा ठीक ही बना ।
चावूजी क भी मा नहीं और आपक भी मा नहीं । ऐसी परिस्थितिया
मे प्यार अच्छा निभता है ।'

ठाक ही है ' सुधा ने कह डाला ।

ठीक ही है पर मैं फिर विचार करने लगा । उसका तात्पर्य
था कि बिल्कुल ठीक नहीं था ।

मन स्पष्टवादिनी सुधा को यह कहने का साहस कर गया,
मैंने सुना है कि आपकी लव मरिज हुई है '

सुनने में बहुत सी बातें आती हागी प्रकाशजा । किन्तु मैं जान
म एक अंग भी सत्य नहीं । हमारी जाति जात के दमन गिनियों का
अभाव है । अतः गिम्भिन गिक्षिता का मन न जाय ता भी गनीमन्त
ममक्षिण । इसके साथ उच्च संस्कार विचार और विद्वानों की अनुकू-
लता का प्रभु है वह तो नगण्य ही है । सुधा ने इन बातों में बहुत सी
बात कह डाली ।

मनुष्य की महत्वाकांक्षायें हिमागम में भी उभा है । एक गिम्बर
को पार करत ही दूसरी खाटा इच्छिगाचर जाता है । बट चन्ना हा जाता
है और उसका अतिम गिखर आता ही नटा । भाग्य का नारी दमका
अपवाद है । उसके जीवन की महा विम्बना है कि बट वरन पुण्य की
छायामाय बन कर रह जाती है । अपन स्वतंत्र अतिव क विकास क
लिए यदि वह निलामिताती है तो पुण्य उगका अवराजक बन कर छा

हो जाता है चाहे उसी घण्टा धाराघा म सड़ाव पग हो जाय । मुघा
 और निनेग के सम्बन्ध म म कुछ ऐसा ही अनुमान कर सका ।
 म इन दोनों के सम्बन्ध म आगे बात करता, ऐसी दृष्टा नही
 थी किन्तु मुघा ने स्वय ही कह डाला ' निनेगजी, उन निना म कविज
 म पढ़ते थे । पिताजी चाहते थे कि अच्छा घर मिल और अच्छाई का
 मापदंड उनकी दृष्टि म अच्छा घराना और सानगन जिसक पास अच्छा
 जमीन जायदाद और पसा हो । ' किन्तु मुघा अंत मे यह भी
 कह गई इसका अर्थ आप यह न निवासों कि म दिनेग से असंतुष्ट
 ह । '

मने कहा मुघा जी यह विधि का विधान है । ईश्वर जो
 कुछ करता है सो सब ठीक करता है । मने बहुत स प्रेम विवाह असफल होते
 देखे है । फिर दिनेग तो बहुत ही योग्य और सुगील मुक्क है ।

मुघा ने जल्दी म बात काटने के विचार से कहा आप गस्त
 समझ गए प्रकाशजी । मने तो घाजकल की आम समस्याओं का जिक्र
 करते हुए बात कही है । आप सो चिन्तित ले गए ।

मने अपनी भ्रम भेटते हुए कहा नही मुघाजी मेरा मतलब
 यह है कि आप पर ईश्वर की पूर्ण अनुकम्पा है । '

नारी अपने गुस्सिया का उत्क्रा हुआ जाल है । वह कभी अपने
 मन को खोलकर कभी किसी के सामने नहीं रखेगी जिनम दुबलता का
 आभास हो । दूसरे की दुबलता को सामने लाने मे उसकी पटुता है ।

मुघा फिर प्रसंग बदलकर अपनी कविता और मधुप की बातों
 पर आ गई । उसको कविता से अधिक मधुप की बातों म आनन्द प्राप्त रहा

था । आज की कविता के विभिन्न रूप, उपन्यास, कहानी, नाटक का आज तक का ज्ञान उसे था और मैं यह भी जानता था कि दिनेश केवल दो और दो चार के मियाय कला के सम्बन्ध में अधिक नहीं जानता था । वह कला-कार क्या कला का प्रेमी ही नहीं था । सुधा कला की भूखी तो थी ही किन्तु कला के प्रमियों की भी प्यास थी उसे ।

दूसरे रविवार को मुझे दिनेश के घर में काव्यकला के धिरकने के स्थान पर पति-पत्नी के बीच में वाक युद्ध का दशन हुआ । मैं जब घर में प्रवेश कर रहा था तब सुधा की आवाज जोर से सुनाई दे रही थी, आपकी जहरत क्या थी यह नाटक करने का । मुझे दखते ही दोनों ने मौन धारण किया । मैंने निस्संकोच हाँकर पूछ लिया आज क्या भगड़ा है ? मैं तो आपकी कविता रसास्वादन के लिए आया था ।'

सुधा ने तड़क कर कहा, 'यह सब इनकी मेहरबानी है । कह दिया उनको कि आज सुधा के सिर दद है । वे लोग बाहर से चले गए ।

दिनेश से नहीं रहा गया, यह क्या बेगर्मी है ? मुझे यह पसंद नहीं सुन्हारी कविता कविता की बीसलाहट । यह कोई वैद्या दरबार है ?'

दिनेश बहुत आगे बढ़ चुका था । मैंने उसी दिन अनुभव कर लिया था कि दोना का मल नहीं बैठ रहा था । सुधा यदि भावना थी तो दिनेश व्यावहारिकता । दोना दो विपरीत शिष्टाई थी—अपने अपने क्षेत्र में चलन, चलन । सुधा दिनेश के वाक्यों का महन नहीं कर सकी । उसका पारा धीरे-धीरे गरम हो गया । वह कड़क कर बोली, आप पड़े हुए हैं या मूख ? क्या कवि और क्या एक है वहाँ गई आपका बुद्धि ? आपका पसंद नहीं

तो आप न सुनें । लेकिन मैं यह नहीं चाहती कि आप मेरे रास्ते में रोना बन कर खड़े हो जायें ।'

पत्नी के इन वाक्यों से दिनेश को और भी आघात पहुँचा । वह बोला 'यदि यही बात है तो सुधा, तुम्हारे और मेरे दो रास्ते हैं ।

मैं नहीं चाहता था कि विवाद बढ़े । मैंने कहा, 'दिनेश जी आप बैठ जाइये और सुधाजी, आप मुझे पानी का एक गिलास दीजिए ।'

विवाद में असन्तुष्टि का प्रभावहान हातों हुए भी प्रभाव बढ़ जाता है । वह भी उन परिस्थितियों में उपदेश की श्रणी में आ जाता है । इस विवाद में मुझ का लाभ मिला । सुधा ने मुझे पानी लाकर दिया । मैंने देखा कि उसके होठ फटफटा रहे थे । माँखें लाल लाल हो रही थी । सारा रंग ही डरावना सा हो गया था । मैंने सुधा से कहा 'आज कविता में रौद्र रस कम आ गया ? सुधा ने स्पष्टीकरण करते हुए कहा 'मुझे इन्होंने समझ गया रत्ना है ? मैंने कभी इन्हें कुछ कहा है ? मुझे इस गाँव में पटक रक्खा है । मैं अपना समय ही नहीं बर्बाद सकती । और यह कहते करते सुधा पूट पूट कर रोने लगी । सुधा का शोध भी मुझ के आसुआ में पीतल कर दिया । मैंने दिनेश जी से कहा, 'आप तो धर्म रत्न वाले व्यक्ति हैं । आप में नाथ कौन आ गया ? दिनेश जी ने स्पष्ट कहा 'प्रकाशजी मुझे यह सब कुछ सहन नहीं होता । मैं सब कुछ स्वीकार रहा सहता रहा । मुझे पसन्द नहीं । मैंने इसी क्षण से प्रस्थित होकर मैंने अपने माँ बाप से मगड़ा किया । फिर सब जगह अपना ही मजौ ।

सुधा ने अपने आसू पूछने हुए कहा 'रहने दो इस लिए मैंने आगे माना पिता । मैं तो उनका बनी ही अच्छी नहीं लगती मुझे मान बने

आनी ये आपकी मा । म तो एक दिन नहीं रह सकती वहा ।' सुधा का रग फिर लाल हो गया ।

मने कहा आप दोनों उठ जाइये । वे मेरे कहने से बैठ गए । मने सुधा की ओर मुड़ करत नए कहा सुधाजी, विवाह एक सगम है जो आरमाधा का सम वय एकीकरण और सर्वोपरि ध्यान देका स्रोत । एकाकी जीवन स्वास्त्रा और अधूरा है । और विवाहित जीवन का भी सुखमय बनाने के लिए बहुत ही मयम और सयत व्यवहार का आवश्यकता है । तुम शिक्षिता हो प्रभावती हो और भावनाओं की साकार मूर्ति हो । इस युग की भाग है कि दश की गृहिणिया शिजिता हो । इस गाव की गत प्रनिगत स्त्रियों का नजर तुम्हारी ओर है और तुम्हारे जोडे की आर ईर्ष्या भरी दृष्टि से देख रही है । तुमन यदि अगोमनीय उपाहरण प्रस्तुत किया तो सब मानो ममस्त गिगा के प्रति प्लानि और घृणा की भावना पदा हो जायेगी और हमका बुरा प्रभाव भाषी समाज पर पडगा ।

मरा अस्त्र अचूक था । उसका सीधा प्रभाव सुधा पर पडा । वह गात और गातल हो गई । उसकी आँखें भुज गइ । वह कुछ समय तक मौन रही और फिर मद स्वर म वाली, प्रकाशजी, आप ठीक कह रहे हैं । मैं भविष्य म ऐसा गल्ती नहीं करूंगी ।

किंतु म कहता ही गया हमारे गास्त्रो म पति को परमस्वर माना है । नारी के लिए पनि हो मवस्व माना है और उसकी पूजा की जान रही है, किंतु पश्चिम की गिगा भारतीय घरतल पर उचित नहीं बैठ रही । तुम मुगिक्षिता हो । तुम्हें अपन पति की भावनाओं का आर करना चाहिए । यदि तुम्हारे पनि तुम्हारी उपा कर इसी प्रकार पाच,

सात लड़कियाँ का लेकर गीत गुनान लगे तो तुम्हें बच सब सहन होगा ?

दिनेश बाबू घपना मुह लटकाये हुए घर ममघन म मौन बड़े रहे । उनके चेहरे पर त्रोध व स्थान पर चिंता की रखाये भलक आई थी । सुधा न घासुधा से अयात मुह धो लिया था । उसका माँतें अब धमा माचना कर रही थी ।

मेरा उग्रदंग फिर खालू रहा । मेरा विचार गायद दूढ़ का सगा के लिए मित्रान का था । म कहता गया विवाहित जीवन जसा आनन्द नहीं, ससार म यदि दोनो सम वय वाली बन कर काम करें । इस जना नरक नहीं यदि मन मुटाय का रूप धारण कर ले । रुचियाँ सदब भिन्न भिन्न होती ह किन्तु उनका सम्बन्ध करना होता है । इनम दोनो का ही कुछ त्याग करना होता है । म यह नहीं कहता कि केवल स्त्री ही त्याग करे पुरुष को भी कुछ त्याग करना ही होगा ।'

इस पर सुधा को फिर साहस हुआ वह बाल उठी मैं अपनी कविता का विकास करना चाहती हूँ । इनको भी कुछ सोचना चाहिए ।'

दिनेश को फिर तर्रटा आ गया क्या वह तेरी कविता का विकास है ? हा हा हाँ, हाँ 'हूँ हूँ' रडियो की तरह मचलना हैमगा । दिनेश ने अलग अलग पोज बना कर कहा ।

मुभ हँसी आ गई । सुधा भी हँसने लगी और दिनेश भी मुस्कराये बिना नहीं रंगा । इस हँसी व अभिनय का रूप समझीते मे बल्ल गया ।

चाय आई । सबने पी । मने इस समझीते का समाधान करते हुए कहा आप अपना कविता का गीत अखबारों म प्रकाशित करवा कर

पूरा कीजिए । इससे आपका नाम भी होगा और कुछ आय भी ।’

मेरी बात का समर्थन दोनों ओर से मिला । बीमा आदि काय से निवृत्त होकर मैं घर चला गया ।

हास्य मानस की पुष्पा ने अपने रूप का श्रु गार किया । उसकी मोहक मालों में असीम मादकता छलक रही थी । राजल ने उनकी आर भी लावण्य दे दिया था । दे ही योगाव म वह अधिक ज्वर रही थी ।

घर के सभी लोग खेत चल गए थे । मैं कमरे में अकेला पड़ा हुआ था । घर में भी कोई नहीं था । मेरा मन भी मूना मूना हो रहा था । काम में भी दिल नहीं लग रहा था । दोपहर की सपहती धूप में मैं पलंग पर पड़ा पड़ा अगच्छाद्यों खन लगा । इतने में पुष्पा मेरे पास आई । उसने हाथ जोड़ कर नमस्त किया । मन उस बैठने के लिए कहा । वह बठ गई ।

मैंने कहा पुष्पा, आज तो तुम ठीक हो ।

पुष्पा बोली 'हा भइया ठीक हू । मुझ कोई तकलीफ नहीं । कोई पुस्तक हो तो दयो । मैं पढ़ूंगी ।

मन पता नहीं क्या साधकर यह पूछ लिया 'पुस्तक तो मैं दूंगा । किंतु तुम यह बनाओ कि तुम ऐसा क्या करती हो ?

यह पुष्पा के दबे हुए घाव उखाड़ने की बात थी ।

पर अनेक भाव बने और मिटे । उमने धनमने भाव से बात को अलग करके फिर पुस्तक की भाग की । मैं उसके अनुबद्ध पुस्तक ढूँढने लगा । एक उपन्यास की पुस्तक मिल गई । मैंने उसे मेज पर रखली मने फिर कहा, हाँ तो पुष्पा मैं पूछ रहा था, कि तुम ऐसा क्यों करती हो ?

पुष्पा वाली, मेरे बस की बात छोड़ी ही है । ऐसे ही पता नहीं मुझे क्या हो जाता है ? इसाज भी कराया किंतु ठीक नहीं हुई ।

पता नहीं उस दिन मुझे यह क्या सूझी कि मैं पुष्पा के हृदय को टटोलने लगा । एक उपदेशक की भाषा में कुछ गम्भीर होकर मैंने कहा देखो पुष्पा, यह चलता फिरता आदमी केवल खाने पीने वाला मांसल शरीर ही नहीं है । उसके दिव है जिसमें अरमानों की एक विशाल नगरी है । उसमें कहीं भी असंतोष का बिद्रोह हो जाये तो सारा शरीर प्रक्षुब्ध हो जाता है । तुम्हारे भी अरमान के भीर के मैं अनिम वाश्य की पूर्ति नहीं कर सका ।

पुष्पा का स्वस्थ विवेक आज सब कुछ समझ रहा था । उसकी आँखें छूटछूटा आई और उससे साथ उसका दद भी । वह कहने लगी, 'आदमी के अरमानों को क्यों पूछना है ? यहाँ तो सबको अपनी अपनी लगी है । हम तो इन बड़े बूझ की कठपुतलियाँ हैं । जमा चाहे नाच नचायें । हमारी क्या गलती है ? इस नये समाज के वातावरण ने हमारे मस्तिष्क और हृदय का गंवा बन्त दिया अथवा जसाप हल या चन हो रहा था ।

स्वस्थ और अस्वस्थ पुष्पा में भारी अंतर था । घावा को अधिक

कुरेदना उचित न समझकर मैंने दूसरे प्रश्न से बात बतल दी । मैंने पूछा,
'कहाँ तक पढी हुई हो ?'

पुष्पा बोली, आठवी पास करली थी । नवी म भरती हो गई थी
कि घर वालों ने विवाह कर दिया ।' यह कहती हुई वह कुछ लजा गई ।
मैंने कहा अब भी पढने का गीक है ।

'गीक तो बहुत है किंतु आमारी थोछा नहीं छाडती ।' पुष्पा
ने कहा ।

तू मेरे पास आकर पढ लिया करो ? सरा दिल बहल जायेगा ।'
मैंने कहा ।

पुष्पा ने चेहरे पर थोड़ी मुस्काह चमकने लगी । हाथ से झटका
का समेटते हुए बोली कब आय करू ? मैं थोड़ी टिनी और पढना
चाहती हूँ । मेरे पास तुलसी का राम चरितमानस है । आप उसी क ग्रंथ
बना लिया करें ।'

'हाँ हाँ जरूर । मैंने स्वीकार लिया ।

'आप बहुत अच्छे हैं । पता नहीं उसने क्या कहा ?

पुष्पा पुस्तक लेकर चली गई । पुष्पा पर जितना सावना उनकी
ही मुत्तियाँ झगड़ उलझ जाती । मैं किताब आ निगम पर नहीं पहुँच
पा रहा था । इनने मे नीचे से आवाज आई जोजाजी का गल जोजाजी
आ गए । यह आवाज बच्चा की हाँ थी । कुछ दर म भी औरना म घर
भर गया और सभा महमान की सेवा सत्कार म जुट गए ।

उत्सुकतावग समझिए या व्यावहारिकता क नान कुछ समय क
बान मैं भी कमरे म चला गया । पुष्पा क पत्रि बिछे हुए गल पर बठ

थे । स्वच्छ धवल कपड़ा से आच्छादित थे और सामने पड़े हुए हूँसे की गुठगुठाना रहे थे । वृश्चाय गरीर वृत्रिम कालिमा वाली उभरा हुई मूर्छे निर पर सफेद साफा, आगे के चार दात नक्ली जा बालसे समय मुद्राप का प्रचार कर रहे थे । निवट पुष्पा के पिता भी बठ हुए थे । कमली का बात चल रही थी । फलें अच्छा हैं । घनाज अच्छा हो जायगा । नहरा ने पानी कम लिया । नहीं तो कमल और अच्छी हो जाती, आदि आदि । फिर विषय आज का राजनीति पर आ गया । शासन में अष्टाचार है, नीकर-गाही का बोलबाना है । मुँह खोल रखा है नीकर न । सुन आम सूट है । कोई पूछने काता नहीं इत्यादि । फिर बात चीन के आक्रमण पर चल पड़ी । हिन्दुस्थान पर कलक लग गया । हुकुमत में फौज का इतना काम ठीक नहीं कर रक्खा था । मुँह की खानी पड़ी । ऐरे गरे फौज में भरती कर रख हैं । बनिये ब्राह्मणों की सरकार है । वे क्या जानें लड़ाई के बारे में । राज तो क्षत्रियों की ही शोभा देता है । बनिये तो बेचना तोलना जानते हैं । क्षत्रिया का राज होता तो मजा चखा दते ।

इस प्रकार की साधारण भाषा में साधारण बातें साधारण स्तर पर चल रही थी । जीवन की अनेक उथल पुथल, आरोह अवरोह की अनुभव किए हुए दिमागों की बातें थी जिनमें न कहीं पूर्वाग्रह था न कहीं लगाव । मैं हस्तक्षेप भी कैसे करता ? हस्तक्षेप करता तो मुँह का खाता । 'कल के छोकरे क्या जानें इन बातों को । हमने जमाना देखा है । अंग्रेजों का राज, राजाओं का राज और भव कापस का राज देख रहे हैं ।' विरोध करता किम मुँह से ? सभी बातें सत्य भी हैं । राज में नीकर-गाही का बोलबाना है । चीन की लड़ाई में भारत को मुँह की खानी पड़ी । इन

मदग घड़िह महत्वपूर्ण बात जो मुझे रह रह कर सता रही थी पुष्पा की जिसका हम साँस सनी साँग के साथ अनुभव कर लिया। विधि की विडम्बना वह या समाज की ॥ यमनस्कता या माजी का अनभिज्ञता या हठ—धर्मी, किन्तु पुष्पा के साथ अभाव हुआ। इनने म पुष्पा के पति जिनका नाम बाद में रामलाल बनाया गया साँस में उलझ गया। मुँह लाल हो गया। मुँहें फूटने लगी घोर दाँत उछल उछल कर लगे नश्य करने।

पुष्पा के पिता हरीराम ने पूछा, क्या वही जुगाध लग गया ?

रामलाल का इनकी पुरतल वहाँ थी कि वह हरीराम की बात का जवाब देते। व साँसने हो रहे कि दाँत ग्यान छाड़ कर नीच गिर पड़े। इनने म हरीराम का भी साँसो गुर हो गई। दाँतों ने उस प्रतिपातिता करली हो। धारे धीरे दोनों को भाराम मिला। उन्होंने इस पर कतई ध्यान नहीं दिया जैसे यह रोजमर्रा की बात हो। व उसी प्रकार बाना म जुट गए। विषय पुष्पा की बीमारी पर आ गया। हराराम ने मारी हकीकत बयान की। रामलाल का चेहरा गूँथ-सा हो गया। चेहरे पर झुर्रियों के तरंगे बनने लगे और बिगड़ने लगे। साँसो का दौर फिर गुरू हो गया। पानी की छूँट लेकर बूढ़ा शांत हो कर बैठ गया। मुझे इस दृश्य ने उद्दिग्न कर लिया। कितना अयाय हा गया इस सुकुमार पुष्पा की देह पर। मैं यह सोचते सोचते पुन अपने कमरे में चला गया।

अचानक घर के भीतर से एक चीख सुनाई दी। गति ने माजी को आकर सूचना दी कि पुष्पा वही हो गई। माजी ने रोप भरे गम्दा मे कहा इस कजरी को आज ही बेहो होना था। मैं चाहती थी कि आज इसकी अपने ठीर ठिकाने पहुँचा देती। बहुत कुछ कहने सुनने पर तो राम—

राल जा आये थे ।'

शान्ति क मुह से आवाज निकली, कोई नहीं, दो दिन रामलाल जी और ठहर जायेंगे । मैं जल्दी स वैद्यजी का बुला कर लाती हूँ ।'

थोड़ी देर में वैद्यजी आए भाखूम हुए । सुना कि उन्होंने 'दज्जशन' दिया और खान की कुछ पुडिया । शाम तक पुप्पा ठीक हो गई, ऐसा सुनन में आया ।

रात को पुप्पा क पति रामलालजी को दमे का दौरा पड़ा । रात भर वैद्यजी क चक्कर लगे । सुबह तक पनि पत्नी दोनों ही स्वस्थ अवस्था में थे । शान्ति की योजना थी वो पुप्पा का बातचीत के लिए रात्रि को अपने पति के पास भिजवा दिया जाता । दोनों के दिल स दिल मिलाने का प्रयास था किन्तु दोनों की बीमारियों क कारण योजना सफल नहीं हो पाई ।

पुरुष के सामर्थ्य और शक्ति पर अवस्था का इतना नहीं जितना बीमारी का कृप्रभाव पड़ता है । रामलाल अवस्था में तो अधिक था हो किन्तु उससे अधिक बीमारी का प्रभुत्व था जिससे उसकी काया क्षीण और कम हो गई थी । मानसिक कूटा से बह और निस्तेज हो चुका था जिससे मरे हुअ्य में उसके प्रति वितर्पणा का भाव पैदा हो गया था ।

मैंने पुप्पा को भी देखा जो कल सुबह की पुप्पा से भिन्न थी । बीमारी ने उसे तोड़ मरोड़ दिया हो । वह धीरे धीरे अपने कांठे स बाहर निकली और अशक्त मा खाट पर गिर पड़ी । मैंने समीप जाकर पूछा, 'पुप्पा, ठीक है ?'

पुष्पा ने अपनी घाँघि एक बार खोली और फिर बन्द कर ली । जैसे रोना चाहती थी कि तु रोने के लिए घ्राँसू हा मूख चुने थे । माजा ने कहा ठीक तो है बेटा लेकिन कितनी बमजोर नो गई है ? क्या इन्तज कराऊँ इसका ? तेरी निगाह में कोई डाक्टर है तो बता । इतना कहकर वह घर के काम में लग गई वह भी निबाल रही थी । पाना डालने के लिए वह बाहर आई थी ।

रसोई में हलवे में बगली मारते हुए गान्ति ने कहा लगा हुआ रोग जाता नहीं माजी । डाक्टर क्या कर लेगा ? बिनने डाक्टर देख चुके हैं इसे ?

इतने में सरपब बाहर से आ गया जा करीब पंद्रह ब्रात गिन में घर पर था ही नहीं । भागते हुए घर में आना खाना, पीना करके निकल जाना इसी रूप में मने इयोनाल सरपब को देखा था । वह अभी अभी कमरे में अपने जीजा से मिल कर ही आया था । घर में पुष्पा की स्थिति का देखकर वह भी द्रवाभूत हुए बिना नहल रह गया । सारी कान्नी आघीपा त सुनी घर मिनटों में एक जीप की व्यवस्था कर निकट मंडी के अस्पताल में ले गया ।

दो दिन बाद जब पुष्पा लीट कर आई तो औपधि त ठीक होकर अपने गाव को प्रस्थान कर चुके स्वस्थ नजर आ रही थी ।

रामसिंह अपने सम्बन्धियों में धूमकर आराम की अमण का कायजम बन गया । रेलील मठने में विशेष आनन्द आता है फिर दूर से

चायु का भोका और भी आनन्दित कर रहा था। घूँट को हथेली में लेकर उछालते हुए रामसिंह ने कहा, निराशा भरे जीवन को घूल के समान कहा गया किन्तु घूल की उपयोगिता को देखिए। यह समस्त प्राणियों की जीवनन्यायिनी है प्रकाश।

निराशा म भी माधुर्य है रामसिंह यदि इसकी घूट घूट करके पिया जाय। निराशा से तो ऐस बिशास बख तयार हुए हैं जिनक फला की आज तक लोग खा रहे है। गिर कर ही तो आदमी उठता है। गिर कर और गिरना अक्लबन्दी नहीं है।' मन कहा।

'आप तो कवि बन गए, प्रकाशजी। कवि निराशा में वह गीत लिख जाता है जो पाठक के आसुषा का धोकर निमल और अविच्छिन्न कर देता है। कवि के अतिरिक्त तो यह समाज के लिए यातक ही है।' रामसिंह ने उत्तर दिया।

मैंने कहा निराशा के तट पर कोई फिसल जाय और उसमे डूबकर अपना प्राण दे दे तो उसका क्या इलाज ? इसकी लहरी में तरने का हा आनन्द है।

रामसिंह ने फिर कहा मेरे भाई मुझे तो सहारा म आनन्द नहीं आ रहा। मैं तो निमल चुका हूँ। अब तो प्राण ही देने पड़ेंगे।

आज के मुक्क की यही तो भूल है मेरे मित्र। वह तो बाह्य लावण्य का पारखी है उसके अन्तर की सौरभसक नद्री पढ़ेंचना। रग रगेली पुनःकता नितलिया का प्रेमी है घू घट म छिप माधुर्य का उस क्या पता ? मन चाही छोडकरी नहीं मिली ता बस प्राण देने की बात आ जाती है।

क्यों ? है न यही बात ।' मैंने कहा ।

रामसिंह बोला, 'आपने मेरे हृदय की गूँथ पकड़ ली । आप वास्तव में मेरे मन की बात कहें ।

मैंने कहा 'देखो भैया जीवन एक विशाल पर्वत है । उसे दूर से देखकर घबराना नहीं चाहिए । इसके निकट जाइये । वही न कहें पगडण्डी प्रखण्ड मिलेगी ।'

इस बात से कुछ क्षणों तक वह विचार मग्न हो गया और उस फिर मौन भंग किया, 'शुभे तो पुष्पा की चिन्ता है । उसका क्या किया जाय ?

'जीवन एक नशा है । रामसिंह मैंने कहा किसी को धन का नशा किसी को अपने तन का नशा किसी को अपनी बुद्धि का तो किसी को अपनी सिद्धि का । जीवन का मस्ता ही इस नशे में है और तभी जीवन जीवन है । यह नशा नहीं तो जीवन नहीं । नशे के बिना जीवन मृत्यु से भी घटिया है । इस नशे के अभाव में लोग नशा करते हैं । कि जीवन कुछ टिका हुआ रहता है । इसके अभाव में मनुष्य अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है । अभाव की पूर्ति की सम्भावना प्रगति है । इसकी असम्भावना ही पागलपन है । पुष्पा पागल हो गई क्योंकि उसका नशा उतर गया और सम्भावना की आशा धूमिल ही नहीं सुप्त हो गई । सन्नाह लिए मृत्यु तक के लिए ।

रामसिंह अपनी अंगुलियाँ से अपने बालों की कधी करने लग जाय उस उलझना की उन्हासी को भगाना चाहता ही । किन्तु चेहरे पर हाथ फेरने से भी उदासी नहीं भागी । दबी दबी आवाज में उसने कहा

‘मनुष्य कितना दुबल है प्रकाश !’

‘नहीं नहीं, रामसिंह मैं बोला, दुबलता और सबलता दोनों ही मनुष्य की सहचरियाँ हैं। किसी पर दुबलता हावी हो जाती है तो किसी पर सबलता। हीन भाव किसी का बना देता है तो किसी को मिटा भी जाता है। दुबलता को अपने पर हावी न होने दीजिए फिर जीवन की प्रश्रिया गतिशील होगी। इस गति में सबल है—सफलता, आनन्द और मस्ती।

रामसिंह के चेहरे पर अलग-अलग क्षणों की छवि हुई और फिर वही प्रकट हुई।

मैंने कहा फिर उदास हो गए। क्या खदना है तुम्हारे हृदय में ?’

रामसिंह ने फिर कहा ‘क्या बताऊँ ? घर का भेद है। तुम दिनेश को जानते हो ?’

‘हाँ, क्यों नहीं ? उसकी स्त्री तो मेरी बीमा की एजेंट है। मैंने कहा।

यह दिनेश बड़ा मीठा और भला आदमी है। रामसिंह बोला।

‘कोई गलत नहीं। मैं उसका अच्छा तरह पहचान गया।’ मैंने कहा।

रामसिंह कहने लगा ‘हमारे और इनके घर के बड़े अच्छे सम्बन्ध हैं। मेरे भाई श्यामान और दिनेश के पिता पनराम में बड़ी घनिष्टता थी। ठाकुरगारी का इन दोनों ने मिलकर बड़ा विरोध किया था। वे दोनों जेल में भी साथ रहे। चौ० पनराम के कोई सम्मान न होने पर यह दिनेश को गोद ले आया। दिनेश पन्ने में ठीक ही था। यह पुष्पा भी पढ़ रही थी। मर भाई और चौ० पनराम की दृष्टि थी कि हम दोनों रिश्तेदारों

के बधन में बध जाय । इस पर पुष्पा के साथ दिनेश का विवाह करने की सोच ली । दोनों मिलत जुलत भी रहे । इनमें प्रेम भी था । किन्तु भक्ति-तपता का धीन टाल सकता है ? दिनेश का विवाह सुधा से हो गया और वह भी घरवालों और दिनेश स्वयं की मर्जी के विरुद्ध । कुछ ऐसी परिस्थिति का घन गर्भ कि दिनेश का गान्धी करनी पड़ी । दिनेश इसका विरोध भी कर सकता था किन्तु इतना मादा नहीं है उसमें । इधर पुष्पा के साथ जसा हुआ वह आप जानते ही है । मेने इसका प्रतिज्ञा भी किया किन्तु समय निकल चुका था । उसका नाम चौ० पतराम का परिवार से सम्बन्ध टूट गये । परिणाम यह निकला कि हम एक दूसरे का विराधो है । इस गांव में कादू दबवा दी नहा था । घन इतनी तरार पड़ गई है कि मिट नहीं रहा । दो बघ पूर इसी गांव में एक शिविर लगा जिसमें चापाकनता और मर्जी छाए थे । उस समय मरा नाई और चौ० पतराम आपस में इतने बाधे कि मर्जिया की बीच उभार करना पड़ा । चौ० पतराम ऊपर का मोटा है । अंदर में विषय का नासाप है । हम किसी दोष ? हमारा नाम ही ऐसा है ।

रामसिंह ने यह कह कर गान्धे अपने दिल का भार हटवा कर दिया था किन्तु उससे मरा जिन भारी ना गया । मैं मन में सोचने लगा कि इस घर की इनकी अपनी दुखाना ने जवाबदार दिया । भाग्य क्या है ? क्या नहीं है ? हमारी मेसाया का मनुष्य का जिन कितना मनुष्य है ? यह तो भ्रमण विषय है । मनुष्य भाग्य का बनाता है या भाग्य मनुष्य का । यह तो एक ठमो पटना है जो समझ में न आती । किन्तु इतना सत्य अवश्य है कि मनुष्य अपनी परिस्थिति का पुत्र है । परिस्थिति का भाग राजा

म रक और रक से राजा बना देने ह । गद्दी से गड्डे और गड्डे से गददो पर पहुँचा देता है । अपन दुभाग्य पर रोना और बहादुरों क गीत गाना दोनों निरर्थक ह ।

मूय रश्मिया आकृष्ट हो गई । पशु भणियो का कलरव ब द था । बहो कही खडे जगती पीषा म निरन्तर ची ची का ध्वनि आ रही थी । वायु भी मौन थी । बटने हुए अधकार ने घर जाने का आदेश दिया ।

पचायती के चुनाव में केवल एक महीने का अंतर था। प्रदेश भर में यह चुनाव होता था। इस गांव में भी चुनाव की सरगर्मी शुरू हुई। प्रश्न सरपंच और पंचों का था। पंचों का प्रश्न इतना गम्भीर नहीं था जितना सरपंच का। चौ० इंदोलाल स्वयं उमेरवार तो था ही किंतु वह चाहता था कि चुनाव सब सम्मति से हो जाये। उसका प्रतिद्वंद्वी केवल पतराम था। यदि पतराम न लड़ता हो तो उसकी विजय में सन्देह नहीं था। ये चर्चाएँ पहले तो कुछ पेनेवर राजनीतिज्ञों तक थी कि तु धीरे धीरे बाहर चबूतरों की बठकों में आ गई। अंत में घर घर की बातों का विषय बन गई। पतराम अपना आत्मी लड़ा करेगा और उसका पार्ति उसका समर्थन करगी। प्रारम्भ में यह बात जोरा पर रही। न्योनान के निमाग में इस बात से घबराहट नहीं थी। जब चुनाव में पन्द्रह दिन शेष थे दूसरी बात जोरों पर चल पड़ी कि पतराम स्वयं मुकाबल में आएगा। इंदोलाल के निम में इस बात से घबराहट हो गई। इन्हीं दिनों में इस क्षेत्र में काग्रस के एक खाटी के नेता का आगमन हुआ जो पहले कभी मंत्री बन चुका था। उसके स्वागत में दाना ने ही अपना ओर से तयारिया की। ठहरने की व्यवस्था न्यायाल के घर पर थी। यही नेता पहले पतराम के मर्दाने ठहरा करता था।

इससे यह अनुमान लगाया कि पतराम से किसी कारणवश नेता की असतुष्टि है। उसके स्वागत में पतराम ने किसी प्रकार की कमी नहीं रखी। गाँव में स्थान स्थान पर द्वार बनाये गए। उसने बरकमाली से औपचार्य का उद्घाटन करवाया गया। स्कूल में उनके भाषण की व्यवस्था की। यहाँ तक कि विभिन्न स्थानों पर 'स्नेप' लेने के लिए फाटोग्राफर भी बुलाया गया।

रात्रि को खाना खान के बाद जब नेताजी आराम करने लगे तो उस समय गाँव के प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। चौ० पतराम जान बूझ कर नहीं आया। उसके साथी बड़ा अवश्य थे। चौ० दयोलाल ने नेताजी से प्रार्थना की कि वे दोनों दलों में समझौता करा दें। अन्न के कुछ तत्त्व ऐसे भी बहा थे जो समझौता नहीं चाहते थे। सम्भवतः इसका कारण यह था कि इस दलबादी में उनका स्वाध निहित था। नेताजी इन्हीं तत्त्वों के सैन से चलने वाले थे। बात आगे नहीं बढ़ सकी। यह इतना कहकर ही उठ गए कि यह दलबादी इनकी भाषा में ही पत्ता की हुई थी और समय आने पर स्वतः दूर हो जायेगी। इतना कुछ होने पर नेताजी का ध्यान मन्ना में भाषण हुआ जिसमें एकता और सगठन पर विशेष बल दिया गया। उस समय ही पतराम ही उपस्थित था और न उसका फाटोग्राफर। नेताजी अपने साथियों को लेकर जीप से रातोंरात मड़ी चले गए।

प्रातः गाँव से लेकर मड़ी तक यह समाचार फैला कि पतराम का प्रभाव ऊपर के नेताओं से हट गया। इसके साथ ही यह खबर जोर पकड़ गई कि पतराम और दयोलाल दोनों चुनाव में हटेंगे। दोनों पार्टियाँ ने अपना चुनाव अभियान प्रारम्भ कर दिया।

चौ० दयोलाल का घर अब दिन भर आदमियों से भरा भरा रहने

‘कवि लोग ऐसा ही सोचते हैं’ मने कहा, लेकिन यह तो पलायनवाद है। साहित्य में ऐसा छाता है बिना आज के युग के कवि का पलायन नहीं करना है, निर्माण करना है निर्माण।’

सुधा गाम्भीर्य से बोली इस बानावरण में तो निर्माण की कला ही नहीं काजी सकती जहाँ गराब की दुग व दूर दूर तक फैला रही हो।

मने सुधा ने अकाट्य नव को काटन हुए कहा सुधाजी विकास की प्रारम्भिक भूमिका इसी प्रकार बनती है। समाज गतिशील है। बढन युग की ये बाधाएँ हैं। जनतन्त्र का नागरिक गने गन इन दुगुणा को स्वतन्त्र दूर करेगा। समय आने पर ऐसे समाज का निर्माण होगा जिसको हम पचायती राज का आत्म रूप मानते हैं।

सुधा मरी मान से सहमत नहीं थी। उसकी आँखें विस्फारित होकर मरी धार दखने लगा। उसने विस्वाम भर स्वर में कहा ये सब निरपेक्ष बातें हैं। इसमें आपका पचायती राज का भटका बढ जायगा। ये घोर बन्माणा लुटर आत्मो धातक भारत को ला जायेंगे।

सुधा की इस अग्रिम भविष्यवाणी का क्या उत्तर देना ? मने जाना ही कहा इन चार बन्माणा का प्राप्ताहन देना कौन है ? जनता ही तो। जब जनता इन उपरिणामों को भुगत सगा तो फिर इनका समर्थन नहीं देगी।

सुधा का स्वर घोर दृढ़ हो गया। उसने कहा जनता का क्या है ? यह तो बेवकूफ घोर स्वाभियों का गाल है। स्वार्थी अपना स्वाध पूरा करने के लिए जन ननाधा के माथ धिरक जान हैं घोर बेवकूफ उनका पाछ तग जान हैं। बस बन गया रामराज्य।

जनतंत्र म य कमिया तो रहेंगी।' मने कहा 'इसका कोई उपचार नहीं है।'

मुघा मौन बठी रही। शायद मेरी बात उसे असह्य थी। अधिक देर तक उसका चुप रहना भी मुझे अगवने लगा। मैंने अपनी बात बदल दी, तुम लोग यहां बच आये ?

यही मात जिन हो गए। स्वसुर साहब स्वयं जाकर ले आए। काम काज ज्यादा था न।' मुघा ने कहा।

दिनेश बाबू ने आनाजाना नहीं की ? मैंने पूछा।

मुघा के स्वर म फिर राप भर गया, 'दिनेश मे क्या है ? उनम अपनी अकल कहा ? कहने लगे कि धलो, पिताजी बार बार थोडे ही कहते है। उनम न तक न बुद्धि नीरम खुद कहती कहती मुघा रुक गई।

मुघा अपनी सीमा से आगे बढ गई थी। अपने पति के सम्बन्ध म ये शब्द नहीं कहने चाहिए थे। मैंने उसका प्रतिवाद किया, भारतीय नारी की यह परम्परा है कि वह अपने पति को सरस्व मान कर चले। उसके आदेश को सिरमौर माने।

मुघा बोनी म उनके आग को नत प्रतिशन मानना चाहती हूँ। ईश्वर ने पुरुष के साथ स्त्री को भी बुद्धि दी है। हम नारया काठ की बनी पुतलिया तो नही कि पुरुष अपनी आगा की डोरी से हम हिलाता रहे और हम उनके सक्ता पर नाचती रह। नारीका भी अपना व्यक्तित्व है। हम विवक रखती है। भला बुरा सोच सकती है। विश्व के महत्वपूर्ण काय मे अपना निणय द सकती हैं। समझे प्रकाशबी।

म मुघा की बात को समझ गया था और यह भी समझ गया था

कि सुधा और दिनेश का सांस्कृतिक सम्बन्ध ठीक नहीं बन पाया। सूर्य पश्चिम क्षितिज को स्पष्ट करने वाला ही था कि हम लौट पड़।

सुधा और दिनेश का भविष्य में सम्बन्ध अच्छा नहीं रहेगा। सुधा अच्छे सुमस्कृत वातावरण में पली हुई थी जहाँ संगीत की सुधा और काव्य का माधुर्य निर्बाध गति से बहा था। दिनेश एक साधारण स्तर का युवक था जिसमें न सरिता की कल्पल घारा थी तो न काकिला का मा माधुर्य। सुधा भूखी थी प्यासी थी। उसको व्यास भी भावनाओं की कल्पनाओं की ओर उनकी तापत नहीं मिल रही थी उसे। स उद्विग्न हो गया कि कभी यह कुटिया किसी भाँके से रह न जाये।

अपने कमरे में पहुँचा तो देखा कि गीति मरे साइन में अपनी मुक्तकालि का दान कर रही थी। मुझे देखकर वह चीर गई और बातों में घुनाव न तो मुझे वाली कर दिया। मुझे भी सँकरी सूभी। मन बड़ा, नीम देहू लगाला गीरी हो जाओगी।'

बस अब तो धाँ ही निव रहे हैं। बना टन जाओगी। गीति ने कहा।

आज पुरमन कम मित्र गर् १' मन कहा।

गीति न कुर्सी पर बैठन हुए कहा आज जेडनी बाहर गए हैं

जिमी नेता का लान क लिए।

टक्कर तो लड़की है मन कहा।

गीति वाली टक्कर जमी भी हा। 'म जगह म बाँ पायन न। पर बाबा हाता है। रात नि बिना मतन का निहर।

चाट लगी हुई है छूटती नही, मैं बोना ।

आप कहा गए थे आज ? सुधा के यहा ?' शांति ने बात को मोड़ दिया । यह कहते हुए उसकी भुट्टी चम गई ।

आपका कैसे मानूम ?' मैंने कहा ।

मैं सब जानती हूँ वह वाली मुझे क्या भोदू समझा आपन ? अनपन हूँ तो क्या हुआ ? आत्मी की रग रग समझता हूँ ।'

मैंने पूछा, 'क्या आदमी बुरा होता है ?

जीर क्या' वह सडक कर बोली 'घर घर भटकने की आदत होती है इस । जहा दुकडा मिला, लगता है पूछ हिलाने ।'

क्या मुझे भी ऐसा ही समझनी हो ? मैंने पूछा ।

आपके क्या है ? भूख तो सबको लगती है । कुछ मुँह को ढकती हुई बोली ।

मुझे हँसी आ गई । 'गानि का मनुष्य के बारे में विचार कहा तक उचित था ? यह तो यह जाने । किन्तु मेरे सम्बन्ध में यह ऐसा नियम क्यों कर पाई ? यह मैं नहीं समझ सका ।

मैंने अपने बारे में विचार मिलाने के विचार से कहा, 'आदमी आत्मी में भी अंतर होता है शांति । सभी अनुसूचित तो बराबर नहीं होती ।

यह बात तो मैं जानती हूँ वह वाली, लेकिन वहा तो चुनाव जीतने के लिए सब कुछ किया जाता है । उनकी अपनी इज्जत प्यारी नहीं है । पस की उनकी परवाह नहीं । सब तरह से पसा कमाया हुआ है उस घर में । बहुत अच्छी तरह से सत्कार करती हूँ बड़ी बड़ा का । अच्छा हुआ,

‘तो फिर क्या बात है ?’ वह बोली ।

‘मुझे तो अपना हाथ से रोगी बनाने की आदत पड़ गई है ।’
मैं बोला ।

‘नहीं, आज तो तू हमारे घर की रोटी खाएगा ।’ माजी न कहा
और उसने पुष्पा को बिचड़ी खाने का आग्रह दिया ।

पुष्पा बिचड़ी में घी टलवाकर एक थाली में ले आई ।
मैं इन्कार नहीं कर सका ।

‘मने कहा क्या तकलीफ की, माजी ? भूख तो थी ही नहीं ।’

‘इसमें क्या है ? थोड़ी सी ही तो है खा ल । माजी न आग्रह
किया ।

‘मने खाना गुरु किया । इसने में दूध भी आ गया । मने उसको
भी उसी में मिला लिया ।’

बुढ़ा आदमी का पुरानी बात बहुत प्यारी होती है । उनका भविष्य
धूमिल होता है तो बत मान गुप्त । नैप समय भूत के सुनहलेपन की
स्मृति में ही बीतता है । हारा ठाकर आनिय करे पुरानी बात की कहानी
ही सत्य सिद्ध होती है । माजी कहने लगी— पुराने जमाने में लोग
पास पैसा नहीं होना था । लाग छ्वाछ राबड़ी खा पाकर गुजारा करत थे
नोट तो ये ही नहीं । रुपये क सिक्का होत थे जिनका वे अपनी कमर
बांध रखते थे । अनाज बहुत सस्ता होना था । अनाज का बटता ही क्या
था ? सौ मन अनाज के केवल दो सौ रुपया । उमी में हाहा (भूमि) पर
भरते थे । घर का काम बाज चलात थे । विवाहादि का खर्चा भी निकाल
रत थे ।

फिर यह आग की स्थिति पर आ गई— ताय का रिवाज गाराव की सन घोर दावे दुगुण घाति ।

फिर पुरानी बातों पर आ गई— राजाआ और ठाकुरा का राज होता था । ठाकुर सागा के अपन रिवाज हाते थे । भू गा सते ५ बेगार सत थ । जमीन दत्त भी थ छान भी सन थ । अब तो जम'न का एक मिल गया है । कोई जमीन छोन नह सक्ता । लेकिन गुडे नही हात थ बरमाग मही पलत थे । ठाकुर क गठ म याय मिलता था । कोई कुछ भी कह लेकिन हमारा ठाकुर घुरा नही था । खन पर रहम था उसक दिल म । आदि आदि ।

इस तरह की बहुत सी बात माजी भूत और वतमान की तुलना म कह गई । कितना परिवर्तन हुआ है इस युग म । युगा से चली आ रही गाम'सशाही और राज'शाही का समूल अत और जनन'न पचायतीराज का प्रादुर्भाव जिसम जन जन म जागरण फिर भी यदि हमरा सदुपयोग नही हो तो फिर दोपी कौन ? जनता ही ता । कि तु युगा स गुलाम भारत और राजाआ का भारत और ठाकुरा का भारत तिहरी गुलामी म विभक्ता हुआ भारत । इसके मानस को गुलामी के संस्कारों स मुक्त कराने क निए समय ता लगेगा आदि विचार भर मन म घूमने लगे । माजी का व्याख्यान चलता रहा । मैंने अपना भोजन समाप्त किया । इस बीच हू की स्वाकारोक्ति क अतिरिक्त कुछ भी नहीं बोल पा रहा था ।

इतने म पुष्पा भी आकर वही बठ गई । वात्सल्य भाव स माजी ने उसका गुलामी मुसंडा अपने गोद म ले लिया जस कि वह पांच साल की बच्ची हो । मुह पर हाथ फेरत हुए माजी ने कहा अब तो बेटी ठीक हा

रही है । पालतू बिल्ली की तरह पुष्पा प्यार में और प्रफुल्लित हो गई ।
 मैं स्नेह भाव से उसकी आँखों में देखा । उसके लावण्य भरा तरणार्द्र की
 गगरी से झनक रहा था । विशाल नयनों में मादकता मुस्करा रही थी ।
 एक सहज मोह्य था जो रूग्णावस्था में उसे छोड़ जाया करता था । मैं
 माजी में कहा आजकल पुष्पा मेरे से राज रामायण पढ़ती है माजी ।

ठीक है बेटा, इसमें कुछ मन तो लगा रहता है । बड़ी पगली
 है यह । सदा से ही ऐसे ही स्वभाव की हैं । माजी ने कहा ।

पुष्पा सीधी होकर बैठ गई और चाटी को पीछे फेंकती हुई उपा
 लम्ब की भाषा में बोली आज कहा पढ़ाया आपने ? सुबह से पता नहीं
 कहा ये आप ?

माजी ने समय का लाभ उठाया । उसने हल्के से पुष्पा का घप
 धपाते हुए कहा 'जा उठ ल या अपनी पोथी । मैं भी मूढ़' । राम का
 नाम बड़ा महंगा है । इस भक्भक् से पिड़ टुटता ही नहीं । मैं तो चाहती
 हूँ कि सब कुछ इन बहू बेटी को सौंप कर खुद हरिद्वार जा बैठूँ । लेकिन
 ये मानते कहा ?

मैं समझ रहा था कि माजी की ये बातें केवल दिखाना गात्र थी ।
 उनको तो यह शासन प्रिय है जिसको वह कर्म में जाने से पहने छाड़ नहीं
 सकती ।

पुष्पा ने तुलसी की रामचरितमास की मोटी पोथी के साथ प्रवेश
 किया । अध्ययन प्रारम्भ हुआ । साता के स्वयंवर का दृश्य था । कई युग
 पहल का क्या है । नारी का कितना अधिकार था । सीता का अपना रवि
 के अनुकूल वर चुनना था । उसका माप दण्ड था पुष्प का पीरप । मन

मिलने की बात नहीं थी। सौंदर्य की प्रतिमूर्ति नारी पुसत्त्व को समर्पित होती है अपनी शीस की रसा के लिए। यही तो शौलता की महानता है। शिव धनु को उठाने वाला ही सीता का वरण कर सकता था। सौम्य की बात न होकर साम्य की बात थी। सीता भी उस धनु को उठा सकती थी। कथा चलन जगो। बड़े बड़ योद्धा आए किन्तु सभी असमर्थ। जनक चिंता ग्रस्त हो गया। सारी भूमि वीरो से खाली हो गयी क्या? भगवान राम का आगमन। मेरे सामने भी आज के राम की पुष्पा बठी थी। उसका भी वरण हो चुका था। पौरुष के बल पर नहीं किन्तु माजी के सामर्थ्य से। उस युग के बाद कितने युग बीते हैं आज तक? धनुष का आदमी रांकट का आदमी बन गया है और आगे जाकर न मालूम क्या क्या बनेगा? डाकिन कह गया है कि मनुष्य विकासशील है। निरंतर प्रगति कर रहा है। फिर आज के राम में और युगो पूर्व राम में अंतर क्यों? शिव के धनु को सज्जित करने वाला पौरुष और सामर्थ्य का प्रतीक स्तना जजर और खोलला क्यों? क्या यह राम सीता का वरण करने से पहले यह साध नहीं सकता था कि वह एक पौडशी गिणिता की आका पाधा के साथ बलात्कार कर रहा है।

कथा आगे बनी। राम ने धनुष तोड़ा। पुष्प बट्टि हुई। मन माजी की आर दवा। वह ऊँच रही थी। मन कहा माजी सुना आपने रामचन्द्रजी न धनुष तोड़ लिया। माजी की ऊँच सुनी। वह वाली बेटा राम के नाम में नीचे बैठन आती है। मर कम में राम का नाम कहा लिखा है? राम का नाम लती तो मुक्ति मिल जाता। कथा फिर आगे बनी। राम के साथ सीता का विवाह हो गया। मन पुष्पा की आर दवा। उसनी

आखें छलछला आई । इतने में माजी बोली मुझे तो नींद आ रही है बेटा ।
दूध भी जमा आ है । मैं तो चरूँ ।

यह कहकर माजी उठकर चल दी ।

मैं किसी भाव प्रवाह में बहने लगा कि पुष्पा ने मुझे यह कहकर चौंका लिया, 'किस साध में पड़ गए ?' मैंने कहा 'पुष्पा हम राम की कथा पढ़ रहे हैं यानी भगवान राम की । भगवान क्या है ?' मनुष्य की एक कल्पना । सर्वोच्च कल्पना जो मनुष्य की हो सकती है— ज्ञान की, सुख की, सुविधा की गुणों की सौंदर्य का शक्ति की और उसका रूप है भगवान । इसीलिए भगवान के सम्बन्ध में कहा गया है— सब शक्तिशाली, सर्वेश्वर सद्गुण सम्पन्न, सत्यनिन्द्य । मनुष्य निरंतर अपने बचने की चेष्टा कर रहा है जिसलिए । भगवान बनने के लिए । उस कल्पना की ओर जिसे भगवान् कहा गया है । किन्तु मनुष्य मनुष्य ही रहता है । वह भगवान् नहीं बन सकता । यह कल्पना कल्पना ही बनी रहेगी । ससार में इतने शास्त्रज्ञ, राजनीति शास्त्री कवि, कलाकार आदि । उन सभी ने एक सर्वोत्कृष्ट ससार की कल्पना की जिसमें मनुष्य भगवान् बन सके और यह ससार स्वर्ग । किन्तु आज सब मनुष्य भगवान् नहीं बन सके और न यह ससार स्वर्ग । यही सब कुछ गोन है । पृथ्वी गोल चन्द्रमा गोल सूर्य गोल और सभी ग्रह गोल गोल । मनुष्य की प्रगति भी गोल । आत्मी जहा से चलता है वही वापिस आ जाता है ।

पुष्पा गंभीर होकर मरी बाग मुन रहो थी । उसने बीच में टाकते हुए कहा, 'ये तो सतयुग की बातें हैं । अब तो कलयुग है ।'

मैंने करबट सेत हुए कहा 'सतयुग केना बापर और कलयुग ये

मन थावे विभाजन हैं । मनुष्य सदव एक रूप मे रहा है । हरक युग मे बुरे, भल आदमी रह है । किसी विशेष युग मे विशेष मानव ने प्रवेश अवश्य किया । उसने अपने सिद्धांतो म मनुष्य को बहाये रक्खा । किंतु फिर मनुष्य अपने वास्तविक रूप म आ गया । गांधी व युग म और आज के युग के मानव म अंतर आ गया है । गांधी का भारत सरलता और उच्च विचारा का पोषक था और आज वह सब कुछ कहा चला गया ? गांधी के पाले हुए चेले कितने कमीने, स्वर्धी कपटी और बन्माग हो गए हैं

पुण्या ने एक उबामी ली । आदमी की आवाजें धीमी होती आ रही थी । दर घाटे का खक्का की गुन गुन सुनाई दे रहा थी । यह एकांत चलने वाला हो रहा था । पुण्या को जाने का आदेश देकर स्वयं निद्रादबी की गद म लट गया ।

दूसरे दिन सुबह चौ० मनीराम जो इस क्षण व एम एन ए, थे, उनके दशन हुए । व कुछ समय क लिए अपन प्रभुत्व का साभ देने क लिए चौ० ग्योलात द्वारा लाए गए थे । इन्हरे गरीर का बग़र आत्मी पु ह विचका हुआ साबल रंग का छत्र की धोती तथा चोला पहने हुए पल्ल पर बटा था । मैंने उनकी चाय म साथ लिया । चहर पर थोडा अहभाव अवश्य था किंतु मित्रने जुलने का वही नाटकीय नयायी ग्य । चेहरे पर बनवटी हसी, अधशुनो आगें तथा कुछ खडे हाजर आये गये को नमस्कार करना और बटन का स्थान ग्ना, आनि । गाव वाला स गाव वाला की समस्याओं पर बातें चल रही था और साथ म ग्यालाल की स्थिति पर भी । चौ० मनीराम ग्यालाल की विजय व बारे म आगावानी ही था । जोड़तोड़ का घाडी बटून जा बान थी वह ग्यालाल और मनाराम व साथ म ही था ।

रूप में सामने नहीं आ रही थी। लोग एक एक करके आ रहे थे और
 ने हुक्के को और सुनगा जात, घुँआ निकालकर कुछ सुन कर और
 सुनाकर चले जाते। सभी रहस्यमय हृदय थे जिनका पार पाना आसान
 नहीं थी। वे कुछ अपनी दे जाते और कुछ बड़ा ने वातावरण से लें
 थे। मिलने वाला में दोनों ही दिलों के व्यक्ति थे। राममिह हरेक आ
 न वाला के बारे में उसकी वास्तविकता चौ० मनोराम को कान में कहता
 जा रहा था। दो तीन घंटे के बाद कमरा लगभग खाली हो गया था।
 ना ही बाता में मेरे से भी परिचय हो गया। चौ० मनोराम ने मेरे से
 क्षण किया 'कहिए गाव का वातावरण कैसा लगा ?'

मैंने कहा, गाव बदल रहे हैं। गाव का रूप बदल रहा है। गाव
 दिल और दिमाग भी बदल रहा है।

आपको वास्तवता रूप कैसा लगा, मनोराम का प्रश्न था।

कुछ अच्छा और कुछ बुरा,' मैंने उत्तर दिया।

अच्छा किम रूप में और बुरा किम रूप में ?' उसने पूछा।

धन बढ़ रहा है और मन घट रहा है।' मेरा उत्तर था।

वह कैसे ?' प्रश्न उसका था।

योजनाप्राप्त आर्थिक विकास हो रहा है और पचापता से राज
 नीतिक। किन्तु भाई भाई का नाता समाप्त होता जा रहा है। प्रेम और
 सहायता का नाम मिटता जा रहा है। आचार विचार विकृत हो गए हैं।
 मेरा उत्तर था।

चौ० मनोराम कुछ समय के लिए विचार-मग्न हो गया। उमरो
 य बातें छिपा नहीं थी यह सत्य है किन्तु कष्ट। ये गलत कहने का हन
 प्रेममत्ता

कर रहा था तो पतराम उसकी अब तक की झुटिया का लाभ उठा रहा था। इंदोलाल यदि एक ओर अपने सिद्धांत और आदर्श से प्रभावित कर रहा था तो दूसरी ओर अपनी अडिग नीति के कारण बदनाम भी था। जनता के अन्तर्गत नियम 'अपने साथी को साथ दाने में अविश्वास से उसका कुछ साथी असन्तुष्ट थे तो विरोधी इस नीति से प्रभावित होकर उसकी ओर लौट भी रहे थे। इस समय की स्थिति का विश्लेषण करने पर साफ जाहिर हो रहा था कि हरिजनो के अतिरिक्त जातियों में दाने उम्मेदवारों के समान बांट थे और हरिजनों का बहुमत इंदोलाल के पक्ष में था। इसीलिए उसको अपनी जीत पर अधिक विश्वास था। पतराम का अधिक जोर हरिजनों पर लग रहा था जिनकी बाँट की सत्ता लगभग पाँच सौ थी। किन्तु पतराम अपने धर्म में असफल होता जा रहा था। इसका भी एक कारण था। इंदोलाल ने माँग दी कि हरिजन की जमीन 'सिद्धांत' और मरान बनवाने में सहामता दी। यह एहसास ताजा ताजा था और भुलाया जाने वाला नहीं था। यद्यपि पार पाँच घर पतराम की आरंभ जो उसकी जमीन पर काम करने थे।

पतराम और दस साल का दुःख बसत स्थितियों में नहीं विचारों में भी था। एक ओर निरन्तर भावना गुच्छ आचरण सरचना और सीखना थी तो दूसरी ओर स्वायत्त व्यवस्था और धोखापनी थी। यही दो ही जनता के अन्तर्गत थे। 'पतराम अपने विचारों पर अग्रिम था तो पतराम दन दन प्रचारेण उसकी उम्मादने में गुप्ता हुआ था। 'पतराम का हृदय में अन्तर्गत जीवन का प्रश्न नहीं था अन्तर्गत विचारों की जान का था। यह बात रही थी 'पतराम रात्र का उम्माद निम्नाय गया है। 'पतराम

भाइयों की सहायता करने में है। सरपंच बनने का मतलब घर भरना नहीं
बिना गांव का सावजनिक विकास करना है।'

पतराम का कहना था सरपंची गांव की हड्डिमत है। वह गांव का
मुखिया है। गांव में भुगिये की इज्जत होती है। बाहरवाले उसे पूछते हैं।
गांव वाले उसकी बदर करते हैं। मैं अपनी बदर के लिए सरपंच बन
रहा हूँ।'

इमोलाल का प्रचार था मैंने आपका काम किया है। गांव का
काम किया है। यदि आपका मेरा काम प्यारा है तो मुझे वोट दीजिए। यदि
काम प्यारा नहीं है तो पतराम का वोट दीजिए।'

पतराम का प्रचार था, भाइया भायो मेरे साथ आओ। यदि
तुम्हें अपना काम करना है तो मेरे साथ आओ। मुझे वोट दो। यदि अपना
काम नहीं कराना है तो इमोलाल का वोट दो। अपने लिए दुनिया करती
है। तुम भी करो।' इमोलाल की पुकार थी मुझे वाट दो। आपका स्कूल
तरबकी करेगा। औपधालय आगे बढ़ेगा। गांव में सबके बनेंगी। रोशनी
आएगी। स्वास्थ्य केन्द्र खुलेगा। मैं जुड़ूंगा। आपको जुटाऊंगा। गांव का
काम होगा। सुख सुविधाय बढ़ेगी। पान विपान, शिक्षा धन तुम्हारे चरण
चूमग।

पतराम की आवाज थी, इमोलाल तुम्हें स्कूल के नाम में छूटेगा।
औपधालय के नाम में चला लेगा। स्वास्थ्य-केन्द्र में खायेगा। मैं तुम्हें घर
के लिए जमीन दूंगा। तुम्हारा चबूतरा ठीक करा दूंगा। तुम्हारे मुकदमे
मिटवा दूंगा। मुझे वाट दो।

इमोलाल ने साथी कह रहे थे, इमोलाल अच्छा आदमी है। वह

ईमानदार है। गांव का भला इसी में है कि हम इमालाल का बोट द और अपने गांव का विकास हो। पतराम तो अपना घर भरेगा। वह स्वार्थी है बेईमान है बपटा है।'

पतराम के साथियों के विचार ये इमालाल कभी आपका निजी काम नहीं करेगा। उनका तो अपनी ईमानदारी की सक्क है। वह कभी हम अपने घर की जमीन नहीं दिक्का सनता। कानून में सड़ा रहता है। कानून और जनायत का मेल ही बढ़ा? हम तो पिछली साल ही उसका बोट देखकर पछताये। जब जमीन मांगी तो कहना देगा, 'काय' से मिलेगा।' हम एक घण्टा को बोट क्या दें? पतराम का जितायेंगे जिससे अपना मननक तो पूरा होगा।'

महंशी इमालाल और पतराम के विचारों की प्रतिप्रिया जिसकी सक्क हर एक सक्क से गांव में दिखाई दे रही थी। पर पर चर्चा भी घट, गूँहे गूँहे पर बात चल रही थी अब। दाना अपने काम में जुट रहे थे।

दोनों के साथी कह रहे थे कि इमानदार को चाहिए कि धिरो धिया का मुँह बन्द कर दे। धूल में नहीं बिजुलिया से। जरूरत पाना की जरूरत पूरा कर नियम में नहीं बिजुलिया से। चौधरी के एक निराश्रित हो गया कि उसका बचपन का पालन किया गया क्योंकि यह नाजायज था चौधरी से इसलिए निराश्रित प्रचार कर रहा था क्योंकि उसका घर की ओर औपचारिकता का एक दरवाजा रखा गया था कि उसका निराश्रित करने का इरादा था। मंडल में समिति समझता है कि उसकी हवेली का पाले बढ़ने में रुका गया था कि वह जमीन उसकी अपना नहीं थी बिना हरित की यात्रा पैगों के समर्थ में उसका निराश्रित नहीं बना रहा

था। खानो घ इसलिए बोट नहीं दे रहा था कि वह 'भामलात' (सम्मिलित भूमि) में हरी बीकर काट कर ले गया और इयोसाल ने उसके घर में निकलवा कर नीलाम कर दी। पंडित 'ड' टेढ़ा टेढ़ा चर रहा था क्योंकि उसके घेतों के नाम से अलग जमीन नहीं दिलवाई। च 'छ' 'ज' 'झ' का एक लम्बो जमान भी थी जिनमें स्कूल के लिए कुछ जोर लेकर खर्च लिया गया। इयोसाल के साथियों ने कहा 'क्यों नहीं इनसे समझौता कर लिया जाय और य सब खांड खाकर बांट देंगे।' इयानान ने कहा 'ऐसा करेंगे तो हम पचासवीं राज नहीं बना सकेंगे। मुझ जीत का गव नहा, मर विचारों पर गव है और मैं उमा पर जीतना हूँ'। जिस दिन मरे मिद्धात टूट गए, मैं जीत कर हार जाऊंगा। मर मिद्धात जिंदा हूँ तो मैं हार कर भी जीता हुआ हूँ।

स्थिति उमा की या बनी रही। इयोसाल के साथी हरिजनो के विश्वास पर टिके हुए थे।

किंतु दो दिन पूर्व एक घटना घटित हो गई —

रात्रि का समय था। कड़ाने की सर्दी पड़ रही थी। चारों ओर पार अधकार फला हुआ था। एक बजे का बक्त था। चारों ओर सन्नाटा ही सन्नाटा। 'ये' यकिन एक कमरे के कौने में बैठे साल्टेन की रोशनी में काम कर रहे थे। एक व्यक्ति इयालाल और दूसरा उमका सजेगी। इतने में हाफना हुआ एक आदमी आया। उसके मुह से आवाज नहीं निकल रही थी। इयालाल पूछ रहा था, 'क्या बात हो गई?'

बात बहुत बुरी है हाफने हुए आदमी ने कहा।

'धोल तो सही इयोनाल पूछ रहा था।

भादमी बहने लगा 'हरिजन के मुहल्ले में।'

दयोनाल ने पूछा 'क्या हो गया?'

भादमी ने कहा, 'रामसिंह पकड़ा गया।'

कुछ समय कर के दोना वहाँ से चल पड़े दूय रात्रि को बीरते

हुए।

बात इस प्रकार चलाई गई -

रामसिंह ने हरिजन मुहल्ले में किसी के घर गराब की। वह घर उसने मित्र का बतलाया गया। वही उसने हरिजन स्त्री के साथ बलात्कार किया।

रामसिंह और दयोनाल करीब एक घंटे के पश्चात् घर में प्रवेश हुए। दोना के होश उठे हुए थे। उस समय रामसिंह नसे में नदी या उसका नगा उतरा चुका था। दोना में से एक बात था। जैसे घाग बुझ चुकी थी, धुआँ उठ रहा था। असफल प्रेमी की तरह गानों में मुह टिपा कर पड़ गए। दूसरे दिन प्रातः ही यह समाचार जोरों से फैला कि रामसिंह ने हरिजन स्त्री से बलात्कार कर लिया। विरोधियों ने इसका उचित उपयोग किया।

रामसिंह ने पूछने पर बताया करीब रात को आठ बजे एक हरिजन युवक मेरे पास आया जिसको हम अपना मानते थे। उद्देश्य बतलाया गया कि रात को चुनाव सम्बन्धी कुछ काम कर लेंगे। वह मुझे अपने घर में ले गया। वहाँ एक गराब की बातल ल आया। मैं जल्द से अधिक पी गया। मुझे हाँस नहीं था। जब मेरी नींद खुली तो मुझे बाहर गार मुनाई दिया। दरवाजा खोला गया। कमर से घाघेरा था। मुझे नहीं मालूम

प्रेमसता

कि मेरे कमरे में काई था। जब बाहर निकला तो चान की रोगनी में एक धोखे में जा गिरा। यह क्या रहस्य था ? मर समझ में नहीं आया ।’

विरोधी निरन्तर अपने प्रचार में सतन्त्र थे। हरिजन भी यह विचार पकड़ना जा रहा था कि श्यामलाल का भाई रामसिंह शराबी और भ्रष्ट है। सरपंच बनने के बाद यह खुले घाम बहना बटुओं की इज्जत खूबेगा। श्यामलाल को सरपंच बनाना गाँव के साथ धाया करना है।

श्यामलाल मर्याद से पूर्व ही घर में निरन्तर चुका था। वह दोपहर के बाद अपने साधियों के साथ घर लौट कर आया। घटना की प्रतिक्रिया समस्त घरवालों के चेहरे पर थी। घटना ही इस प्रकार की थी कि इस पर खुले रूप में बर्तालाप करना सम्भव नहीं था।

श्यामलाल ने अपने साधियों को विवरण दिया, यह घटना जान बूझ कर पन्ना की गई है। पतराम ने रामसिंह के मित्र को अपनी ओर फोड़ लिया पत्तो का लालच देकर। उसने रामसिंह को जाल में से लिया। राम सिंह ने शराब पी। वह बेहोश हो गया। रामसिंह के मित्र ने जानती बपड़े पहना लिए। पतराम की पार्टी को सूचना दे दी गई। अदर का दरवाजा बंद कर लिया गया। पूर्वनियोजित योजनानुसार लगभग बीस हरिजन एकत्रित कर लिए गए। बूटा बटवटाया गया। रामसिंह को होश में आने से पूर्व घुस घट में नकली जाना बाहर निकली। यह चुपचाप आगे निकल गया। किसी ने जानने का प्रयास नहीं किया। रामसिंह पिट जाता किन्तु पतराम के बेटे जिनेश ने ऐसा नहीं होने दिया। वह भवसर पर पहुँच चुका था। एक व्यक्ति ने आगे जाकर उत्सुकता वश उसका घूँघट उलग तो

यान स्पष्ट हो गई। किन्तु वह व्यक्ति केवल मुझे बतलाना चाँही और किसी को नहीं। कारण उमका बाप पतराम को जमीन जोनना है। पतराम ने उसे डरा दिया। कहिए क्या किया जाय ? हरिजन सब बल गए हैं। मैं अभी जाकर दयाया हूँ। मैंने उपरोक्त बात वहीं किन्तु किसी ने बिना सूत के यान नहीं मानी।

गम्भीर ने मिनकर यह निगम लिया कि नाम का गम्भीर हरिजन को एकत्रित कर सब कुछ स्पष्ट किया जाय और स्थिति गम्भीर जानी जाय ।

यत्राननुमार योनाल अने नाविया मोहन ना
मुलत मे गया किनु बाजी मन्ना मे बाजी दखते बिल जा गये । या
लाय न स्थिति वा लाय करन वा भरमक प्रयत्न किया । किनु प्रभाव वा
रूप प्रविष्टि व गम मे था । रामनिष्ठ मुनाक तब घर मे बाहर नहीं निजला ।
निश्चय निवि वा मुनाक वा बायजम प्रारम्भ हुआ । मुनाक
करना बाजिल था किनु उमने ठेगा नही

[illegible]

अ-ना-क-वि-रा-ज-न-रि-त-न-का-हो-गा-है-दो-र-व-दू-सा-या-सा-या-प्र-म-ल-ना-म

के घर में । राजा की नींद नहीं आई और मुबह उठना नहा हुआ । पशुओं
 तक के दिल में मातम था । सबसे अधिक दुखी थी माजी । शरीर टूट सा
 गया था सबका । कई दिनों की शकान के साथ पराजय का सताप ऐसा
 जुड़ गया था कि सब खाना पीना तक भूल गए थे । अवेला हरीराम हा
 'राम भज 'राम भज' कहकर सबका ढाढस दे रहा था । श्यालाल के
 साथिया न सुबह आकर चुनाव के परिणाम पर पुन विचार किया ।
 विभिन्न प्रकार के विचार बैठक में आए और मिट गए । एक मज्दुर राज
 नातिक की तरह पराजय को जय के रूप में स्वीकार करना ही उचित
 समझा गया ।

मुझे किसी कायका मिली जाना पड़ा। चान्नी चौक का मारवाड़ी घमगावा में मुझे एक कमरा मिल गया। यहाँ मैं एक लम्बे घण्टे तक रहने का उपरान्त बाहर आ। चरबीय कुछ अजीब घड़ीय-का लगता थी। नितन वग से घन्टने जा रहे थे तगर घोर तगर का पुष्प और स्त्री, पिने पन नययुवन और नययुवतियाँ। ऊपर ऊपर पनायक स्थान पर लग बगड आ गए थे। क्या दनर नित और नितान भी लग होन जा रह प ? यह बिहार आया मर दिमाग में और कुछ समय का लिए रह गया। साम का अतन काम से नियत होकर आया ता एक वास्टर लगा हुआ था घमगावा का आग। लिख था? आर रात्रि को आय ममात्र के लिये हान में कवि सम्मेलन जितम बाहर से आण हूँ कविया के नाम भी थे। मुझे यह जान कर हूँ हुआ कि मधुप का नाम भी उसम था। इस नाम ने मुझे कवि सम्मेलन में जाने की प्रेरित किया। सोचा कि साथ में मधुप से मिलना भी हो जायगा।

भाजन आदि से नियत होकर मैं सीधा दीवार हान में पहुँच गया। कवि सम्मेलन गुरु हान को ही था। मैं भी थोताया में सम्मिलित हो गया। अच्छा खासा जमघट था। मध पर कविमण विराजमान थे। कुछ ही क्षण

के बाद सयोजक महोदय सटे हुए और कवि सम्मेलन की भूमिका प्रस्तुत की— कवि-सम्मेलन बुलाने का कारण तथा कविया की एक सच्ची सूची और उसमें मधुप का नाम भी । मधुप का नाम सुनते ही प्रसन्नता हुई ।

कायक्रम चारू हुआ । एक ता कविया ने अपना कविता पाठ किया कि तु जन्म नहीं पाए । अभी कवि सम्मेलन का समा नहीं बना । घाविर मधुप लडा हुआ । पुँवराले वानो का एक पच्चीस तीस की आयु का पुरण और वण, मुडोल गरीर मभना कद माइक' के आगे आ जमा । सम्भवत दिल्ली वाला ने पहले सुना नहीं होगा । सयोजक ने 'माइक' को हाथ में लेकर मधुप के कवि और काव्य का परिचय दिया और पुन मधुप के सामने माइक चला गया । मधुप के कवित्व और 'यत्तिस्व न जनता को मत्र मुग्ध कर दिया । 'पुन पुन' की आवाज से हाल खूँज उठा । मधुप अपने स्थान पर जा चुका था । सयोजक ने थोताघो का उनको पुन खाने का आश्वासन दिया । कायक्रम आगे बना । कई कवि आए और गए । मधुप को कई बार आना पडा किन्तु जनता उससे ऊँची नहीं । करीब एक बजे कवि सम्मेलन की समाप्ति हुई । उस समय थोताघो की इतनी मय्या रह गई थी कि मुझे स्टेज के समीप पहुँचने का अवसर मिल गया । बाहर निकलते ही मैं मधुप को पकड़ लिया । मैंने अपने को राजस्थानी बहुरपरिचय दिया और सुधा का प्रसंग इस प्रकार आया कि मधुप को मेरे समीप आना पडा । मधुप ने कहा मेरे साथ ही चलिए । मैं सयोजक के यहाँ ही ऊपर के कमरे में ठहरा हुआ हूँ । मुझे आपसे कुछ बात करनी है । मैं बिना भिन्न के उनके साथ चल पाँगा ।

हमने एक सुसज्जित कमरे में प्रवेश किया । मधुप ने सोफे पर

बैठते ही चाय की माग की। चाय भाने में विलम्ब नहीं हुआ। चाय की चुस्का लेते हुए मधुप ने कहा,

‘आप कब आ गए थे कवि सम्मेलन में?’

मने कहा ‘मैं तो गुरु से ही वही था।’

‘कमा रहा?’ कवि ने पूछा।

‘आपकी कविताओं का लोग ने बहुत पसन्द किया।’ मुझे कहना ही था।

कवि का हृदय हृप से मद् मद् हो गया। अपनी प्रगसा किसको समझ नहीं यदि वह सच्चे हृदय में था। फिर क्या तो आत्म प्रगसा से ही पत्नी प्लवती है।

कवि को मोन देखकर मैंने फिर कहा ‘कुछ कवियों की तो कविता समझ में नहीं आ रही थी। पता नहीं क्या बोम रह्य ? केवर स्टेज पर ही बाह’ आह हो रही थी।’

मधुप बोला ‘ये तो नये कवि हैं— प्रयोगवादी। प्रयोग करते हैं। कहते हैं कि हमारी कविता मे ही जीवन है। मग्न यथाथ, जन जीवन से ऐन निष्कट, हृदय से नहीं मस्तक से निकला हुई। भावना से सम्बन्ध रखने वाली वो ये कविता नहीं कहते। कविता की परिभाषा ही बदल रहे है ये लोग।’

मैंने कहा ‘जन जीवन की कविता का फिर जन जीवन पसन्द क्या नहीं करता?’

कवि ने कहा, ‘यह तो य लोग जानें। कहते हैं— समय आएगा तब हमारी कदर होगी।’

तब तक यह कविता ही मर जायेगी । मैं बहा ।

‘हाथी तो मरने के बाद ही नौ लाख का होता है ।’ मधुप ने कहा ।

इस पर हम दोनों को हँसी आ गई । फिर अचानक दूसरा प्रसंग आ गया । मैं कहा, ‘सुधा तो आपकी कविता की कायल है ।’

मधुप ने एक लम्बी सास ली जमे कही एक गहरा दद उसके हृदय में ही । कहने लगा, दिनेश के साथ मजे में हांगी सुधा तो ।’

ठीक ही है समय निबल रहा है ।’ मैं बोला । हम इतने खुल गए कि मधुप ने भावावेश में आकर कहना प्रारम्भ किया, ‘सुधा और मेरा घर समीप था । सुधा के पिता बलवन्तराय रेलवे में लेखा विभाग में एक उच्चाधिकारी हैं । उनकी पहली पत्नी से एक ही सन्तान थी सुधा । पहली पत्नी के मरने के बाद वे दूसरी पत्नी से आए । दूसरी पत्नी से बलवन्तराय के कोई सन्तान नहीं हुई । सुधा का घर में लाड प्यार ठीक हो था । सुधा जवान हो गई । सुधा के जीवन में प्रवेश के साथ ही उससे मेरा परिचय हो गया । सुधा के पिता मुझे बच्चे की तरह प्यार करते थे । घर में आने जाने में कोई रुकावट नहीं थी । मैं उस समय कालेज का छात्र था और सुधा हाई स्कूल में पढ़ती थी । मेरी शादी हो चुकी थी । पत्नी का भाग जाना नहीं हुआ था । सुधा मेरे घर में बिना किसी हिचक के आया जाया करती थी । पुस्तक का भी आदान प्रदान हो जाया करता था । यह तो साधारण प्रेम था एक पड़ोसी का-सा प्रेम । मैं कविता किया ही करता था और कविताओं का गाकर ही सुनाया करता था ।

एक दिन की बात है—

मैंने फिर समझाया, यह तेरा पागलपन है जो हम घराने में होता ही है। यह तेरे लिए घालज है।'

फिर भी वह नहीं मानो। मने उसे स्पष्ट करने में समझा दिया कि विवाहित हूँ, सुधा। तुम मेरे गले से प्रभावित हो। यह ठीक नहीं अगर है। तुम दूर रहो। अगर समाप्त हो जायेगा। नहीं तो यह सब लिए दुःखदायी सिद्ध होगा और फिर उमरा उपहार भी बर्तन है।

किंतु सुधा मेरी बात में लट गई और मेरे बाहु पागल मथ गई। मैं भी अपने आप का भूल गया। मेरी दुबलता मेरे पर हावी थी।

मेरी धर्मपत्नी मेरे घर आ गई। सुधा का मन में इसकी साधारण सी प्रतिनिधिता हुई किंतु वह प्रकट रूप में नहीं आई। उसका बाप नम्र पूज्य बन गया किंतु थोड़ा सतवता के साथ। वह केवल दिवाने के लिए एक दो पुस्तकें ले आती थी। मेरी पत्नी ने इस पर विनोद ध्यान नहीं दिया।

चार पाषाण के लिए सुधा नहीं बाहर चली गई। मने यह पहली बार अनुभव किया कि जैसे मेरी आँखों के सामने का प्रकाश भाँकल हो गया हो। सब कुछ नीच नीच और मैं खोया खोया सा हो गया। मेरी मलिनता का मेरी स्त्री ताड़ गई। उसने साधारणतः पूछा आज क्या हो गया? बड़े उदास नजर आ रहे हो?

मधुप कह रहा था। मैं सुन रहा था। मधुप भाव विह्वल होकर बोला 'मैं ठीक कह रहा हूँ, प्रकाश। मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैं अपनी पत्नी का भोलापन ही पढ़ पाया था। मैं नारी की गहनता तक नहीं पढ़ पाया था। मेरी स्त्री इन आसुओं का अर्थ समझ गई। किंतु

मैं उम अथ वा अर्थ समझने में असमर्थ था । मेरी स्त्री का सुधा के प्रति ममता का रूप घृणा में परिणित हो गया । इसी प्रकार की प्रतिनिध्या सुधा में भी आरम्भ हो गई । मानव हृदय परस्पर एक अदृश्य तार से जुड़े हुए हैं जो धीमी से धीमी ध्वनि को पहुँचाने का सामर्थ्य रखते हैं ।

एक दिन सुधा मेरे कमरे में बठी थी । मैं अपनी नई कविता सुना रहा था । सुधा तन्मय होकर सुन रही थी । अचानक मेरी स्त्री ने कमरे में प्रवेश किया । उसकी आँखों से आग बरस रही थी । तबका से वह बाली सुधा जी, यह काम भले घर की सड़की को शोभा नहीं देता ।'

मेरी कविता वही बंद हो गई । सुधा ने कोई जवाब नहीं दिया । वह सब कुछ धिमा कर वहाँ से उठकर चली गई । मैंने अपनी पत्नी से कहा 'रानी मुझे तुम से ऐसी आगा नहीं थी ।

मेरी धर्मपत्नी ने कहा 'मुझे भी आप से ऐसी आशा नहीं थी । यह कहकर वह कमरे से बाहर निकल गई ।

मेरा पत्नी के प्रति थोड़ा बहुत प्यार जो शेष था । वह भी समाप्त हो गया और वह धीरे धीरे घृणा में बदल गया । सुधा भी उस दिन से मेरे घर में नहीं आई । मेरे लिए सुधा का रास्ता सुना था ।

अब वह बठक सुधा के घर आरम्भ हुई । सुधा के पिता भी चाहते थे । सुधा की मौसी प्रायः बीमार रहती थी । उसका कमरा अलम ही था । दा तीन घंटे गप्प मार गुजरना सामूची बात थी ।

एक दिन सुधा ने एक बात कही, 'क्या आप मुझे प्रेम करते हैं ?

मैंने कहा, 'हाँ'

सुधा बोली, 'क्या आप अपनी पत्नी से भी प्रेम करते हैं।

मैंने कह दिया, 'नहीं तो।'

वह फिर बोली, 'मैंने बस आप दोनों को हँसते हुए देखा था।

'यह कैसे बद हो सकता है ? मेरा उत्तर था।

'म इसकी सहन नहीं कर सकता। वह बोली।

बड़ी पगली है।' मैंने कहा।

मेरे तो भाग लग जाती है। उसने कहा।

प्रकाश, मैं हम जाल में इसका उलझ गया था कि मुझे सुधा का आदेश मानना पड़ा। हमारे कमरे का बरतन की दीवार पत्नी छायी थी कि छोटी मोटी घटनाओं का भी आभास एक दूसरे को हो जाया करता। मैंने अपनी पत्नी से लगभग सालों बाद कर दिया। मुझे एक ही नय था कि सुधा नाराज न हो जाये। बोलना भी था तो भी बिम्बुर छिप कर ताकि सुधा को पता न चल सके।

मेरी धर्मपत्नी इस अवसाद से दबन लगी। वह बीमार रहन लगा। उस बीमारी का कारण था मानसिक अन्तर्द्व द्व दृष्टि मन स्थिति तथा भावी जीवन का ददनाक चित्र। उसकी चमक हमक घटने लगा। सुधा भी इस दुष्परिणाम से अचिन्त नहीं रह सकी। वह भी दिन पर दिन इस यथा से धुलने लगी कि मधुप अपना पत्नी से बाल रहा हाथ हस रहा होगा प्यार कर रहा होगा।

दूसरे दिन मैं जब सुधा के घर जाता वह मुझे पूछती, क्या आप आज अपनी पत्नी से बोले थे ?'

मैं कहता, 'नहीं तो

कि तु उसको विश्वास नहीं ? वह इसी चिन्ता में घुल घुल कर निष्प्रभ होन लगी । मैं एक अजीब सफ़ट भेंवर में फँस चुका था । एक दुविधा थी मेरे सामने । घर पर मुझे अपनी पत्नी को आश्वासन देना पड़ता था कि मैं सुधा से नहीं मिलता क्योंकि यहाँ गृह-कलह का भय था । सुधा को यह विश्वास दिलाना पड़ता कि मैं अपना पत्नी से नहीं बाला क्योंकि वहाँ प्यार की प्यास थी । एक भूल भुलैया थी जिसमें सब भूल चुका था । केवल एक ही केंद्र बिन्दु था जिसके चारों ओर मेरा कल्पना, भावुकता, दर्शन, विश्वास और सिद्धांत चक्कर काट रहे थे ।

एक दिन जब मैं सुधा के घर से निकला तो रात्रि के दम बजे चुके थे । मेरी पत्नी छत पर अकेली सो रही थी । मैं जब ऊपर गया तो पत्नी ने नाराज होकर जार जार से ओलना शुरू किया । मुझे डाँटस देना पड़ा सब प्रकार से भूँठ बोल कर । सब तरह से उसके हृदय को सात्वना देने की पड़ी इतना सात्वना कि वह समझे कि दुनिया में उसके सिवाय मेरे लिए कोई नहीं था । हम सो गए ।

दूसरे दिन दोपहर को मैं सुधा के घर गया । वहाँ कोई नहीं था, केवल सुधा थी । मैंने उसे देखा जैसे आँखें आग बरसा रही थी । मैंने पूछा, 'आज यह रूप कैसे ? कोई ताण्डव नृत्य करा वाली है ?' किन्तु रूप भीषण था ।

'आपको गम नहीं आती । यह वाली ।

मैंने कहा 'क्या हो गया ?'

'कल रात को जो बातें हो रही थी वह सब सुन रही थी वह सब

गुप्त रही थी मैं । वह बोली ।

मेरा भेदरा उतर गया । दिवान का निराश मन मेरे मूं, न निराश
गया 'कहाँ ?

'दोबार व पास वह बोली और और और न सांगू पेंने लगा ।

मैंने उगता कमलर झनिगा न बोध लिया । गुम्बना न गारे
झींगू पूछ जाने, कि तुम्हें सब कुछ दिमा ने भेग दिया । 'मगरा भ'
मुष्ठा को नहीं था । वह मुष्ठा का बह गई था कि झमुह के घर जा रही हूँ
धीरे गई नहीं । मेरे आन हो वह आबार व पास लग गई । मेरे जाने व
घात उगती मामी ने वह कुछ मुष्ठा को बगल लिया और धमकी को कि
धन उगल पिताजी का बगलगी । मुष्ठा न सब तरह से माया न क्षमा
मायता की किन्तु दुर्वासा को तरह घोरा ही निगा नर पाई । उगी
रात्रि व मध्यरात न निगाय ल लिया गया कि पीछ मुष्ठा की सात नर
हो जाय ।

बेबल चार तिनो न घर की सजा न हूँ । निगा को हम काम के
लिए पढाया गया । बबल सात तिन न दादा हा गई । पेश की रात्रि न
पहन मुष्ठा मेरे स मिला और,

बाती मैं मर जाऊगी ।

मने कहा 'तुम जी जाओगी ।

वह बोली 'वह नहीं होगा ।

मने कहा, 'यही होना चाहिए । इससे बेबल तु न तेरे साथ दा और
प्राणी जीवित रह सकेगे । न और मेरी पत्नी ।

मुष्ठा की गादी दिनेश के साथ हा गई । मेरी मुझविो लता-मेरी

पत्नी को मेरे प्यार का सिचन मिला और वह फिर लहलहाती लगी ।

मधुप ने यह कहानी सुना कर एक लम्बी सास ली ।

मधुप की कहानी समाप्त थी । रात्रि के तीन बज चुके थे । मने कहा जीवन में रोमास का भी अपना महत्व है । मधुप ने कहा, विनोद कवि के लिए है न ।'

हम दोनों हँसने लगे । मधुप के चेहरे पर मुधा की स्मृति का छुमार था । उसने फिर कहा मुधा अच्छी लड़की है । उसको समझने की आवश्यकता है । मुझे मासूम है दिनेश उसको नहीं समझ सकता ।

किंतु दिनेश अच्छा युवक है उसे बुरा तो नहीं कहना चाहिए ।' मैं बोला ।

दिनेश अच्छा है किंतु मुधा उससे मतुष्ट नहीं होगी । मधुप ने कहा ।

हम दूही बाना के साथ सीने का प्रयास करने लगे ।

गाँव के अपने कमरे में प्रवेश करते ही ज्ञात हुआ कि रामसिंह फौज की नौकरी में चला गया। यह समाचार माजी ने लिया। शान्ति ने दूसरा समाचार लिया कि पुष्पा ससुराल चली गई थी। श्वोलाल और हरिसिंह अपनी खेती के काम में व्यस्त थे। यह भी मातूम हुआ कि पतराम ने अपनी विजय की धूम बह जारों से बजाई। गाँव में एक भारी जुलूस निकाला गया जिसमें पतराम की जय के नारे लगाए गए। ये सब बातें माजी ने बताईं। माजी उदास थी। वह हार को हार स्वीकारने को तयार नहीं थी। उसके हृदय में प्रतिशोध की भावना थी। उसने यहाँ तक भी बतलाया कि कुजेंद्र सादमी जो श्वोलाल के कट्टर समर्थक थे पतराम से मिल चुके थे।

पचायत समिति का भी गठन हो चुका था। उसका प्रधान भी चुन लिया गया था। वह भी पतराम के ही दल का था। ज्ञात हुआ कि बोना दला ने तीस तीस हजार रुपये चुनाव में लगाए। पंचों और सरपंचों की बड़ी कदर हुई। कुछ सरपंच और पंच छिपा लिए गये कुछ खरीद लिए गए और कुछ बाहर भिजवा लिए गए। प्रधान ने कांग्रेस सन्ध्य होते हुए भी कांग्रेस उम्मेदवार ने विरुद्ध चुनाव लड़ा और उसने कांग्रेस के उम्मेद-

चार को कांग्रेसियों का ही समयन नहीं मिला । द्योलाल न किसी प्रकार का भी रुचि नहीं ली । वह प्रायः खेत में रहने लगा ।

दिनेश और सुधा पुनः अपने घर लौट आए । पता चला कि दिनेश ने यह सब कुछ सुधा के आग्रह में ही किया । चुनाव से दिनेश और सुधा में क्या प्रतिक्रिया हुई इसका कोई आभास नहीं था ।

रात को करीब दस बजे द्योलाल खेत से आया । वह थाना पीना करके मेरी ओर आ गया । द्योलाल ने आते ही अपनी चकावट जाहिर की । उसका तो केवल यहो मतलब था कि चकावट रूती के परिश्रम से होती है किन्तु मन यह भय लगाया कि इस चकावट का कारण उसका नराश्य, उत्साहहीनता और भ्रान्ति थी जो उसे चुनाव के पराजय से मिली । द्योलाल के चेहरे पर पालिमा तो थी ही कि नु दुबलता भी थी । हड्डियाँ निकल आई थी उसके चेहरे पर और बनी हुई दाढ़ी से और भी विकृत और भयावता लग रहा था वह । ऐसा मासूम हो रहा था कि वह झुकापे की गोर द्रुतगति से बढ़ रहा हो । नराश्य ने जैसे भुर्रियों के नक्शे बना लिए हो उसके चेहरे पर । कामना और आशा जैसे दूब गई हो उसके चेहरे के गड्ढों में । भले कुचले कपड़े जैसे हार के बान उतार ही नही हो । मने कहा, द्योलाल हम हार को जीवन की हार में मत बदलो । जीवन संघर्ष है । जय पराजय का जोड़ा है । पराजय से हम सीखते हैं ।

घातृक पीडा पर उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता किन्तु वह केवल परम्परा है जिसको मैं निभा रहा था । द्योलाल ने कहा मनुष्य अपने सुकाम को सुफल मानता है । मने अपने सरपंच कान में दिन रात मेनत करके गाव के लिए काम किया, सच्चे दिल से और ईमानदारी से ।

किन्तु गाव ने मुझे क्या दिया ? यह हार और वह भी धोये से । मैंने अपना घर तगाया, समय लगाया और उत्तका परिणाम यह निकला । अच्छा होता मैं अपना घर मैं जुटा रूता । घर वाले मेरे नाराज सम्बन्धी मरे से नाराज और न मातूम किस किस की मुझे गरज करनी पड़ी । और धोता सरासर धोना ।

मैंने कहा राजनीति और धोना पर्यायवाची है । इतिहास को ही उठाकर देख लीजिए । सारा इतिहास धोले में भरा है । क्या रामतन्त्र क्या जनतन्त्र बिना धोले के काम चला है ? ईमानदारी और सच्चाई तो नैतिकता के अंग हैं, राजनीति के नहीं । किन्तु जनतन्त्र में इस प्रकार के अनैतिक व्यवस्था का प्रयोग होता रहा तो जनतन्त्र अपना विश्वास खो बैठगा और फिर हमें किसी निरक्षुभ सत्ता का सामना न करना पड़ जाय यह एक बहुत बड़ी आगवाही है जो जनतन्त्रवादियों को डराती है ।

श्यामल ने कहा मैं अपनी भूल को स्वीकार करता हूँ कि मैं पृथक् सतक नहीं रहा । मैं केवल अपनी ईमानदारी और सच्चाई का ढोल पीटता रहा । मुझे जन जन के हृदय में मेरी सच्चाई की जड़ लगानी चाहिए थी । सामूहिक हित को व्यक्तिगत हित से अधिक महत्ता का प्रचार देना चाहिए था । मेरा घर ली मेरे बस में नहीं था । दाप किसका है ? मेरा ही तो । रामसिंह की अपना नियन्त्रण मैं नहीं रख सका । उसे क्या आवश्यकता थी कि इस अवसर पर बाहर गाराव के निमन्त्रण पर जाये । न वह बाहर जाता और न यह नौबत आती ।

मैंने कहा माफ करना श्यामलजी आपने बात याद रखवा दी । मैं कह ही दूँ । आप पर हित मैं घर हित खा बने । आप पर की

व्यवस्था अच्छी नहीं है। आपने पुष्पा के जीवन के साथ खिलवाड़ किया। रामसिंह के जीवन का तमाशा बना लिया। परिणाम आपके सामने है। पुष्पा पागल हो गई है और रामसिंह गराब पीकर वास्तविकता को विस्मृत करना चाहता है। यह सब कुछ आपके और माजी के नेतृत्व में हुआ।

मैं सब कुछ समझ गया हूँ, मेरे बच्चे 'श्यामलाल बाबा', 'जो' हो गया सो हो गया। मैं इस पर पछता रहा हूँ। किंतु आज का युग बड़ा पेचीदा है। इस युग में मनुष्य की महत्ता धन शक्ति और मन गति पर न होकर जन शक्ति पर है। यदि जन शक्ति है तो ऊपर तक उनकी कदर है और काम बनते हैं। यदि जन शक्ति नहीं है तो आप अपनी योग्यता विद्वता और क्लृप्त निष्ठता की लेकर एक काने में उठ रहिए आपको कोई नहीं पूछेगा। आज का नियम है कि सत्ता में कहीं न कहीं हाथ डाले बैठे रहिए, आप सुख से ज़िन्दा रह सकेंगे। सत्ता से अलग हो जाइये आप पर भ्रम, बरसने लगना ज़ुलम आपकी जड़ उखाड़ दगे। आपका जीवन डूब ही जायगा, किंतु मैं क्या क्या ? मुझे नाति प्राप्ति है, राजनीति नहीं।

इतना कहकर श्यामलाल ने एक बीड़ी निकाली और सुलगा कर पीन लगा। मैंने कहा यह बीड़ी कद से सीख ली आपने पहल तो नहीं दिया करते थे।

बीड़ी की जोर से मुँह खींचते हुए श्यामलाल ने कहा, पराजय सब कुछ सीखा देती है प्रकाशजी। बड़ी बड़ी कल्पनाओं में मरे दिमाग में थी, किंतु सब कुछ मर चुका प्रकाश, सब कुछ मर चुका।

आप तो हार का चिपका कर बैठ चुके, मैंने कहा जीवन प्राप्ति और वर्षा का अनुभूत मिथुन है। आप तो किसान हैं। क्या हर साल अकाल

प्रेमवता

पटता है ? क्या हर साल अधियाँ आती है ? क्या हर साल येन सूखे पड़े रहते है ? उतार चढ़ाव तो आता ही है । मनुष्य अपार शक्ति का भंडार है । मन जीवना के केन्द्र बिन्दु है । मन ही समग्र शक्ति का स्रोत है । महान् पुरुषों का मन बलवान् होते हैं और वे कितने बड़े हो जाते हैं और बड़ी बड़ी प्रतिभायें मन की निखलता से बढ जाती है । यह द्वार मुझे स्वीकार नहा । चाप फिर अपने आप को सम्हालिये रखिए क्या रस निरंतरता है ।

मैंने द्योताल क पीठ पर एक थपथपी लगाई । मनुष्य पनाकित नेणो म जैसे चमक आ गई हो और उत्सास की लहरें चहरे पर दोढ़ गई हा और मुभी हुई बीड़ी के टुकड़ को फेंकते हुए द्योताल बोला, भाई अब एक काम करना चाहता हूँ और काम तो वह घर का ही है । सामन का यह तिरवारी देखते हा—दूरी पूगी । हमको बनाने का विचार है ।

माजी और हरिसिंह भा आ गए । क्षापद से विमूर्तियाँ इस तिरवारी के निर्माण की योजना में सम्मिलित हा ।

माजी और हरिसिंह फिर वही चुनाव की बात से आए और उसमे विरोध पतराम की बचा बाजी और रामसिंह पर साधन । हरिसिंह की भाँसा में आध की लालिमा थी कि वह बस पड़त परराम को छाड़गा नहीं । और मैं साफ साफ गवा म कहा म चुनाव का परिणाम चाह कुछ भी निकले हा, कि तु यह तो सही है कि जनतन्त्र जानी अच्छी पर परामा का लेकर लहो आ रहा । भारत का एक सुदृढ़ जनतन्त्र शीघ्र देश बनना है । पूव और पश्चिम का सबसे बड़ा जनतन्त्र शीघ्र देश भारत का अपने गांधी और नेहरू पर गुरु करता है इस तरफ की परम्परासा का लेकर आगे बढा तो भविष्य कैसा होगा ? यह कहना सम्भव नहीं । कुछ धुंधलापन तजर

आता है मुझे आगे । यह सब कुछ जा रहा है ऊपर से । ऊपर के लोग ऐसा करते हैं ता नीचे वाले भी उसी का अनुकरण करते हैं और यह सब कुछ होता है सत्ता के लिए, बुर्जी के लिए और पद के लिए । पसा लगाकर सत्ता सनाया तो बेइमानी है । यदि वे भ्रष्ट तरीके अपनाते हैं तो या बेवकूफी है यदि वे बुद्ध की तरह पड़े रहना चाहते हैं तो ।

यह बेइमानी है भाई साहब ' हरिमिह भावावेग में जाकर बोला, मैंने साफ साफ बत दिया हम बड़े भाई का कि हम इस पड़पड़ में पढ़ने की जरूरत नहीं । यह तो दुनिया के सबसे निरक्षर आश्रमिया का काम है जो हर तरह से गये गुजर रहा । यह आपका पतराम जो अफीम की चार बाजारी करता है सान का तस्कर व्यापार करता है भ्रष्ट नौकरों से माठगाठ रखता है दुनिया भर का सम्मान है । हम नहीं टिक सकते इसके आगे । जरूरत क्या थी हम बिना मतलब पसा लगाने की । य मंत्री और एम एल ए के बच्चे कितनी बार आए हैं हमारे यहाँ । हम किसी काम से जाते हैं तो दो दिन तो इनका मिलने की कुमत्त नहीं । फिर मिलने आते हैं तब पहचानते नहीं साथे कुछ बात नहीं करने । फिर किसी का सिफारिश करते हैं तो यह नौकरशाही इसकी बात नहीं मानती । याद नहीं हम शोलाल का वह मिर्चाई भन्ना क्या आया था । हमारे पानी के मोगे का भगडा था । कइ सौ रुपये उसका स्वागत में खर्च हुए थे । वह हुकम दे गये एस डी आ की । एस डी ओ सामने तो हाँ हाँ करता रहा । कि तु उमर निकलते हा ऐसा भगवान् डाला कि काम आज तक नहीं बना । वरना कबल सौ रुपये की मार थी । ओवरसियर ने भागे । काम बन जाता । किंतु ये तो आत्मवाणी बनने जा रहा है । मेरी बात नहीं मानी । ले लिया मोगा ।'

माजी ने सिर खुजलाने हुए कहा, 'अपनी खेता सुधारो, बाढ़ो करो और मौज करो। क्या खेती है इस पचायत में। खेती का होड़ नहीं होता। खेती सबसे मोटा धन है। तुम्हारी इन पचायतों से सारा ता खत खराब हो गया और सारा घर बिगड़ गया। अब भी सम्मेल जाओ ता भी अच्छा है।'

हरिमिह ने बात बीच में काटते हुए कहा प्रभाजी आप एक राय देना। सामने की निधारी दीख रहा है न आपको। यह दूध फूल गढ़ है। मेहमाणा के ठहरने की जगह है। इसकी हम बनाता चाहते हैं। हम सब गोशाला जाति के लोग न हम पिछली बार बनाया था। गुप्त में क्या हमारा जाति के लोगों का घर था। व उठकर खन गए। नम्बरवारी हम लोगों की थी। हमने उनकी जबानी दूजाजन में उनकी इत काम में सला और यह निधारी बनानी। अब हम फिर क्या बनाना चाहते हैं कि तु हमारे गोशाला में से एक घर हममें समान हो गया है। उसने हमारे पिछले बो भी गिरा थे। अब वह झंडा हुआ है। हम सबने पस इकट्ठा कर लिया है कि तु वह तयार नही है। गुना है कि उसमें सरपंच से बात करनी है। वह चा ता है कि हममें भगडा होना। आपको क्या राय है ?

मुझे हम विषय पर सोचना पड़ा क्योंकि यहाँ विषय नहीं था। सामने व सम्मेलन में मैं राय न कहना था। कि तु यह राय नता एक देना और थी। अब नही मनभिजना जाहिर करना और भी मूखता थी। मैंन गांधी समझ कर कहा मेरा राय में ता निधारी बन जाना चाहिए। फिर भी आपका राय क्या मसुदा है कि यह निधारी जाहिर है ?

'माना न जरा हमने दूना कहा हम पचायतों रात्र में सपूत और बाढ़ने से निराम मरता निधारी जाता। हममें ता समझा और पराया

ही कानून है । जिसने चोट लिए कानून उमका साथी है और जिसने नहीं लिए कानून उमका विरोधी है । आप सत्रुत की बात क्या कर रह है ? फमला हमार विपक्ष में होगा क्योंकि हम उनके नहीं है ।'

फिर भी कोई आधार तो होगा ही ? बिना आधार के वे कैसे किसी प्रकार का आदेश दे सकेंगे ? मैंने अपने गामा-य ज्ञान का प्रयोग करते हुए कहा ।

हरीसिंह, 'इसमें एक सिलालेख है जिस पर चढ़ा देने वालों के नाम लुटे हुए हैं ।

माजी जरा श्रेधावश में बाली, सब गांव वालों को पता है कि गोशरो ने मिलकर पसा लगाया है । फिर एक दुश्मन हमारा क्या कर सकता है ?'

'काचर का एक बीज मना दूध को फाड़ सकता है ।' योलाल ने कहा ।

हरीसिंह ने रोप में आकर कहा हम सब कुछ देख लेंगे । हम बल ही इसको फुटवाने हैं । देखते हैं कौन भाई का लाल सामने आता है । बालन बाल की जाट निकाल लेंगे ।

माजी बोली बेग कोई कुछ कहने वाले नहीं । बुराई तो बुरा काम में होती है । अच्छे काम में हम किस बात की ।

हरीसिंह ने फिर कहा नहीं मा हम तो दुनिया से डरते डरते तग जा गए । ठोड़ी के हाथ लगाते लगाते अंगुलियाँ घिम गई । मीठे बोलते बोलते जवान की कांटे लग गए । भुक्त भुक्त कुबट बन गए किन्तु यह दुनिया सचमुच जून की है । अब मुझे परवाह नहीं । मेरा भाई हार गया ।

एक भाई को राम के मारे फौज में भर्ती होना पड़ा। अब मैं ल
रगा ।’

माँजी ने रोकते हुए कहा तुझे गोर करने क्या जह
अपना दाम कर । जो होगा सो देखा जायगा ।

दूसरे दिन द्योलाल और हरीमिह ने अपने गोगरा
एक सभा बुलाई और निबारी के सम्बन्ध में समस्त समस्याएँ
ढाली ।

मैं त्रिनेत्र के घर पहुँचा ता दन्वा कि मुघा कमर में जवनी ही गुनगुना रही थी। छीली ताली घोंगी बिबर दूध बाग बिना मेकनर का स्वच्छ धवल मुखटा, बलाई में एक एक खूनी, गीरी, पतली अंगुठियों में पेन और हमरे हाथ में कागज। मुझे दन्वत ही मुक्करा कर घोड़ी का पल्ला खींच कर मिर पर ल लिया और उठ बनी। 'आदय नादय' कह कर कुर्सी खींच कर बठने का निवेदन किया। मधुप स मिलन के डरान परही बार भने मुघा का दन्वा था। मधुप की नदी हुई कहानी चित्र की तरह जने एक बार दोहराये गई हा ऐमा आभास हुआ मुझ। एक संकल्प में बहुत लम्बा समय लग गया हो, ऐसा लगा। मैं बठ गया और अस्वाभाविक रूप से मुघा की ओर निरन्तर देखने का साहस कर लिया। मैं त्रिनेत्र की मुघा में मधुप की मुघा को देखने लग गया। अचानक मुघा ने हस्तगत कर लिया, वह बोली— 'गीत पेय या गम पय ?'

पिलाये बिना तुम नहीं मानाया। अत गीत पय हीले आया।'

मने कहा ।

गुप्ता ठंडा गरवन बना कर ले आई घर गिलाग रगार ब
'गरवन की बोतल मगसाली थी बिछन जिन जव बापूजी मडो गए
तसे अवसर पर काम था जाना है ।

मने कहा आप भी ता पीजिए ।

मैं तो अभी अभी चाय पीकर बठी हूँ । यह बोली जिन नगी
लग रहा था । इसजिन उम हो जन्म उगारर गुनगुनाने लगा । इसने
म आप आ गए ।

मैं जाना यह तो मन्म हुआ था । मैंने अनुभव किया कि
निरयक ही 'डिस्ट्रिक्ट' कर रहा हूँ कि तु जब आ ही गया ।

बीच में ही गुप्ता बोली उठी बाह बी बाह डिस्ट्रिक्ट जिस बात
का ? अच्छे अवसर पर आ गए । कई दिनों से आपकी प्रतीक्षा में थी ।

मैं चार पांच घूट गरवन के पी हुआ था । चाय की तरह ही
गरवन पीने लगा । गुप्ता दूसरे कमरे में गई और एक डायरी ले आई ।
तब तक मैं पूरा गिलास खाली कर गया । बठते ही बोली 'हाँ तो मैं
पूछना भूल ही गई कि आप कहाँ चले गए थे ?

मैंने मुस्कराते हुए कहा 'निली भारत की राजधानी ।

गुप्ता ने हमते हुए कहा 'अच्छा तो आप बहुत बड़ी जगह हो
आए । कोई विशेष काम था ?

हाँ विशेष ही समझिए । मैं बोला ।

गुप्ता का नाम मुह से निकलते निकलने रह गया । मने फिर कहा,

‘भाजवल कविता को क्या गति है ?’

सुधा न सकाज स टायरी आगे रख दी । येन टायरी के पन पलट । पहले पलट पर था ‘प्रेमलता’ यह टायरी का शीपक था ।

मैंने पूछा यह क्या ?

मैंने कविता समग्र प्रकाशित करवाने का विचार कर लिया है’ वह बोली ।

मैंने कहा तो आपन यह साहस कर हा लिया ।’

मैंने हमरा पलट लाता । लिखा था—भेंट मधुप का मैंने कहा ‘तो आपने मधुप जी का भेंट कर दी अपनी प्रेमलता ।

मेरा हतना कहना था कि सुधा का मुह लज्जा से रक्तित हो गया । मुह से बोलने में असमर्थ हो गई । मुझे ही कहना पड़ा अच्छा है अपने गुरु का सम्मान तो होना ही चाहिए था ।

मैंने हमरा पना उलटा । ‘दो गाने में दो पलट लिखे हुए सुधा के । मैं आश्चर्यचकित रह गया । साधारण भाषा में कुछ मन की बातें थी । उसने उपरान्त कविता-समग्र प्रारम्भ हुआ । कबल तो पलट की पुस्तक थी । कुछ गीत थे और कुछ कविताएँ । मैंने सुधा से एक गीत सुनान को कहा । सुधा ने अपना प्रिय गीत सुनाया । कितना माधुर्य था इस गीत में । एक पीढा, एक दर्जन, एक टीस थी सुधा की अपनी । विरह और वियोग का गीत किससे ? क्या मधुप से ? मेरे मन में घनायास ही यह विचार आ गया । गीत समाप्त हो गया । मेरी इच्छा जाग्रत हुई कि सुधा से हमरा गीत सुनू । किंतु कहने का साहस नहीं हुआ । मेरा और सुधा का क्या सम्बन्ध था ? मुझ पर बैठना ही नहीं चाहिए था इसका पनि की अनुपस्थिति में । आ भी गया तो ये बात बरके चने जाना

चाहिए था । किन्तु इतना कागे चढ़ना ही ठीक नहीं । मुझे क्या अधिकार था ? मने बेबल इतना ही कहा, सुधा जो धायम प्रतिभा है । भाग एक दिन हिन्दी की प्रसिद्ध कवियिनित्रिया में होगी ।

सुधा ने एक सप्ताह सोम ला । इस सोम में भी दद का गीत था जिसका अर्थ में भली प्रकार समझ रहा था । कितना आशय होता है इस भारत भूमि में और इस हिन्दू जाति में । देग कितना आगे वृत्त का ठकोसला कर रहा है । ये छोटे मोटे रीति रिवाज नहीं तोड़ सकता । फिर इस भारत का धार्मा गायण विपमना और विदग्ध आत्ममरण का क्या पार कर सकता है ? इस देग का मनोवैज्ञानिक बौद्धिक परीक्षण करने लग गया है कि अमुक बातक के लिए अमुक विषय ही पढ़ाना चाहिए । क्या इस देग का धाय अपने पुत्र तथा पुत्री का परीक्षण कर उसकी रुचियों का ध्यान रखकर उसके लिए उचित कर नहीं दूँ सकता ? क्या सुधा के लिए मधुप की तलाश नहीं हो सकती था ? सुधा का गिरह किसी महान् मिलन में परिणित हो जाता और सुधा वास्तव में देश में सुधा बरसाता और भारत के मानस आगम में रत्न के नष्टा किन्तु जागरण के फल खिलते और देग का नविष्ण सुन्दर बनता । मैं यह सोच ही रहा था कि त्रिग न आकर भर भाव प्रवाण को भग कर दिया । उसकी आँख लाल थी चेहरे पर खुशकी थी । उसने कमर में प्रवेश किया । अपनी नकली हँसा से मेरा अभिवादन स्वीकार किया किन्तु उमर मने की गगनिके भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट थे । सुधा एक क्षण मे त्रिग के लिए पान का पानी ले जाई । उसने पानी पा तो लिया किन्तु चेहरे पर चमक नहीं आई । सुधा फिर चला गई और स्नान के लिए पानी रखकर अंदर आई

दीर बोली 'पानी रख दिया है आप स्नान कर लीजिए ।'

दिनेश ने कपड़े उतारे । मैंने दिनेश के मनामालिय को दूर करने के लिए बस ही कह दिया 'बढ़ी गर्मी है आज ।'

दिनेश के चेहर पर लक्षित भावा में कोई अन्तर नहीं आया । वह 'हाजी कह कर स्नान के लिए चल दिया ।

मैं अपराधी की भाँति विगुच्छ हो गया । चोर की तरह भागने की सोचने लग किन्तु सम्मान का भी प्रश्न था । मैं अकेला मन ही मन सोचने लगा कि मैं न तो अपराधी और न ही चोर फिर यह हृदय में घुबलता कसी आई ? मैं न तो तन से पापी और न मन से । मन के भाषा की ध्वनिया अहस्य तरंगों द्वारा प्रत्येक मन के काने तक पहुँच जाती हैं । ब छिपाने ॥ छिपती नहीं है रोकने से शक्ती नहीं । मन अपने हृदय की टटाला ता देखा कि एक काने में छिपी हुई एक सौन्दर्य की प्यास अवश्य है । यह प्यास बबल मेरे में नहीं सभी हृदयों में हाता है । सुन्दरता का प्यार करना तो बुरा नहीं पाप भी नहीं है । फिर यह किन्कर क्या ? समाज की अनुशासन चाहिए था । इसीलिए यह एकाधिपत्य से समाधान हुआ है । पाप और पुण्य की सजाये दी गई हैं । मैं शायद अनुशासन भग करने का तो अपराधी नहीं था । फिर दिनेश का मूड खराब क्यों हुआ ? मैं साब ही रहा था कि दिनेश खाना खाकर आ गया । सुषा उसके पीछे थी । दाना आने सामने बैठ गए । दोनों मौन थे । मैंने मौन भग करने का साहम किया । मने कहा, 'आज काम अधिक था क्या ? बस बेचन हो ?'

दिनेश का मुँह ताल हो गया । उसने अपनी पेट से लिफाफा निकाला और मेज पर मारते हुए बोला, 'यह देगिए आपकी बवियारा क प्रेमलता

कारनाम !'

मेज पर डाला हुआ लिफाफा खुला था। सुधा ने लिफाफे की धोर हाथ बनाया। दिनेश ने एक हाथ से सुधा का हाथ रोक लिया और दूसरे हाथ से मेज पर पड़ा लिफाफा उठा लिया। त्रोध से श्निेश के होठ फड़फड़ाने लगे। सुधा का मुह उतर गया। मं मौन बठा रहा। सुधा ने खड़े होकर लिफाफे को छीनने का प्रयत्न किया। सुधा हँसने का बहाना कर रही थी और दिनेश का पारा चढ़ता जा रहा था। दिनेश न गम होकर कहा, छीन क्यों रहो है ? अभी बताता हूँ तेरी करतूत।

सुधा फिर से कुर्सी पर बठ गई और कहन लगी बताइये बताइये। सुधा की नकली हँसी सुप्त हो गई थी।
दिनेश न लिफाफे में से पत्र निकाला और पढ़न लगा -

प्रिय सुधा,

दिल्ली,

७-७-६४

पत्र मिला। मुझे यह जानकर अति हर्ष हुआ कि तुम अपना कविता-संग्रह प्रकाशित करवाना चाहती हो। तुमन अपनी पुस्तक मुझे भेंट की है इससे भी मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। पुस्तक की पाटुलिपि तैयार करके तुम मुझे प्रेषित कर दो। मैं यही इसके मुद्रण की व्यवस्था कर दूँगा। रायल्टी आदि की भी उचित व्यवस्था करवा दूँगा चिन्ता मत करना। मैं अपनी पुस्तक भी प्रकाशित करवा रहा हूँ। मैं यह पुस्तक तुम्हें भेंट कर रहा हूँ शायद तुम्हें एतराज नहीं होगा।

तुम अपने पिताजी के यहाँ बब आ रही हो, लिखना ताकि मैं भी

तुम से मिलने की व्यवस्था कर सकूँ । तुमसे मिलने को दिल करता है । तुम्हारे यत्न आना तो इसलिए उचित नहीं समझता कि शायद तुम्हारे पति को किसी प्रकार का एतराज हो । तुम्हारी याद तडफाती रहती है । तुमने मेरे कविहृदय को अनुप्राणित किया, इसके लिए मैं तुम्हारा बहुत बहुत अनुग्रहीत हूँ ।

पत्र दत्ते रहना । पांडुलिपि सीधे ही भिजवा देना ।

तुम्हारे प्यार का ऋणी,

तुम्हारा—

मधुप ।

पत्र का प्राप्तिपान्त पढ़कर दिनश अपने माथे पर हाथ लगाकर बैठ गया । मुधा चुप न रह सकी । वह अपने अपराध को छिपाने का तक ठूँड चुकी थी । उसने तुरन्त अपने चेहरे का रूप बदल लिया और भावना का कृत्रिम रूप बना कर बोली, 'आप तो बहमा हैं । इस बहम का इलाज तुम्हें हुक्माम हुक्मी भी नहीं कर सकता । आप बताइये इसमें कौनसी ऐसी बात है जो मेरे चरित्र पर लाइन लाती है । मैं मानती हूँ कि मधुप का और मेरा प्यार था, किन्तु प्यार का तात्पर्य केवल वासनात्मक प्यार से नहीं है । वह मुझे बहम मानता था और मैं उसे भाई । प्रकाशजी, आप भा निश्चय कर दीजिए ।'

प्रकाश (मैं) तो सब कुछ जानता था । क्या कहता ? क्या मैं इस बने बताये महल को अपनी सच्चाई के भ्रमबम से ध्वंस कर देता । मैंने भी यही कहा, दिनशजी, ये तो साधारण सी बातें हैं इस युग में । आज की नारी घर की चहार दिवारी में नहीं रहना चाहती । हम क्या जानें इन

वाता की ?' हम तो युग बदलना है। युग बदलने में नारी ही सहायक हो सकती है। अगर स नाचे तक आज की नारी मनुष्य के साथ बंध स कथा मिलाकर तभी रह सकेगी जब हम उसको ऐसा अवसर दयें। जरा जरा सी बातों पर हम बहम करन लग गये तो फिर काम बस चलेगा ?

वि तु मेरी दलील निश पर काम न कर सकी। उसका रोप कम नहीं हुआ। उसने फिर कहा सब कुछ ठीक है। किन्तु मैं यह तरीका पसन्द करता कि मरी स्त्री को कोई दूसरा पुरुष पन लिखे। मैं एक नहीं बई पत्र इसके पकड़े है। सभा पत्रों में यही प्यार। क्या समाशा है यह ? मुझ मुखा पर कतई विश्वास नहीं। आज तक मैं स्त्रियों के धूँट पाता रहा चुपचाप रहा। मैं अपना काम को जगकर बिना रत्ना पसन्द नहीं करता। मुझे क्या पता था कि यह इतना बुरा है। मैं कभी यह विवाह नहीं करता।

मुखा का पारा मेरा कुछ सहारा पाकर अधिक चढ़ गया। वह बोली रहने दीजिए मुझे सब मालूम है। आप तो भले हैं न। छिप छिप कर मिला करते ये पुण्या से। वह पागल हो गई आपने वियोग में। मैंने सब कुछ सुन रक्खा है। जो कुछ पापी हाथ है उसका सारा जग पापी ही पापा निर्माई देता है। आप पापी हो तो क्या मैं भी पापी हूँ।

मुखा ने अपना साराप छिगने के लिए दूसरी स्त्री की। किन्तु निश के हृदय में अब भी पाडासी का यह पुत्र छिपा हुआ था जो एक दिन किसी स दहकने लगा आ साधारण पानी के छींग में बुझना सम्भव नहीं था। वह सोर भस्म करने लगा तू क्या समझती है मर बार में ? मैंने पर नागी का रूप तब नष्ट किया। क्या मैं तेरा तरह गया बीना हूँ जो

जगह जगह घूल चाटना फिक्क ? कहा पुष्पा और कहा तू ? कहा राम
राम और कहा टाय टाय ?

सुधा अपने व्यक्तित्व पर इतना प्रहार सहन नहीं कर सकी । वह अपनी समझ में पुष्पा से किसी रूप में कम नहीं थी । इस चोट से सुधा के हाट फड़फड़ान लगे । उसने और क्रोध में आकर कहा, 'यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस घर में आई । मैं अपने आप का किसी भी तरह इस घर के योग्य नहीं समझती, आप क्या समझें मेरे बारे में ? आपने मेरा सब कुछ चीपट कर दिया । आज तक मैं पता नहीं कहा पहुँचती और क्या करती ?'

दिनेश यह सुनकर खड़ा हो गया । मैंने समझा गायद यह सुधा पर हाथ खना देगा किंतु उसने सुधा का हाथ पकड़ा और कहा आप अभी अभी इस घर से जा सकती हैं और अपना रास्ता ले सकती हैं । मुझे आपकी आवश्यकता नहीं । आप अपना रास्ता बनाइये, उन्नति कीजिए और जहाँ चाह वहाँ जाइय ।'

सुधा यह सुनकर घबरा गई । वह रोने लगी और बीच बीच में बोलती भी गई, 'मुझे यह पता नहीं था कि आप तीसरे आदमी के सामने मेरा इस प्रकार अपमान करेंगे । आप अकेले में मुझे कुछ कह भी देते मुझे अपमान नहीं होता । अब मैं एक मिनट भी इस घर में नहीं रहूँगी ।'

मैंने फिर हस्तक्षेप करने का साहस किया । मैंने कहा दिनेशजी देविए, घर में हमें छा छोटी छोटी बातें होती ही रहती हैं । मैं तो आपको इतना कहने की आवश्यकता है और सुधाजी, न आपको । अभी आप बच सकती हैं । हा सकता है दिनेशजी मेरी उपस्थिति से आपके शिर्माग में एंगी बाधा आ गई हो । मैं भविष्य में ऐसा नहीं करूँगा ।'

प्रेमलता

दिनेश का पारा कुछ ठड़ा पड़ गया। उसने कहा, 'नहीं नहीं, प्रकाशजी, ऐसी बात नहीं। मैं ठीक कहता हूँ और यह मानती नहीं।'।

मैंने कहा मैं मानता हूँ दिनेशजी आप ठीक कहते हैं। किन्तु यह क्या करे? यह उनके पड़ोस में रही है। आपस में मिलने जुलते रहे हैं। दोनों बर्बतायें करने रहे हैं। इनका प्यार भी हो सकता है बहन भाई का सा। पत्र भी लिख दिया करते हैं। इसका एक ही उपाय है कि मुझा मधुप को लिख दे कि वह पत्र नहीं ले। जो हा गया सा हो गया आपकी भयना गृहस्थ चलाना है। इस तरह की छोटी छोटी जानी से घर से निकलने और निकालने की बातें स होगी ता काम बच तक चलगा ?'

दिनेश शांत हो गया और मुझा क धीमे भी सुन गए। मुझा वहाँ से उठकर अन्दर चली गई और मैं भी थोड़ी बहुत अपने भीम की बात करके घर आ गया।

मैंने दूसरे दिन सुना कि मुझा और दिनेश में फिर झगडा बढ़ा। मुझा नाराज होकर मुझ की ट्रेन से अपने पीहर जाने को बस में लड़े पर पहुँच गई। दिनेश उसे मनाकर फिर घर ल गया। वह नहीं आसकी।

इस गाँव में गादारा जाति के सौलह घर थे । इनमें बपालाल का ही धन्ना तक्का था । कहते हैं कि यह कौम किसी दूसरे गाँव से आकर बसी थी । उस समय इस गाँव में केवल पंद्रह ही घर थे । इस जाति का केवल एक ही घर था । चारों ओर जंगल ही जंगल था । ठाकुर जातिने के लिए जबरन जमीन दिया करता था । काश्तकार इससे बचने की बौद्दिश में रहता था । घन जन में यह घर माना जाता था इसीलिए गाँव की चौघर इसी घर की थी । समय के साथ इस जाति का भी जतना बिस्तार हुआ गया कि केवल गादारा जाति के सौलह घर हो गए । गाँव में प्रायः रिवाज है कि करीब पन्द्रह सौलहवर्ष की आयु में लड़के की शादी कर देते हैं । अधिक उम्र में लड़का बीन (दुल्हा) मुँदर नहीं लगता । लड़की भी बराबर की उम्र की होती है । लड़की लड़के से आयु में प्रायः बड़ी दिमाद दनी है । लड़की थोड़े से वर्षों के बाद चार पाँच बच्चा की होकर बूढ़ी नजर आने लगती है और लड़के के गरीब पर कोई बिनाय भतर नहीं आता । वही वही तो यह भ्रम हुआ जाता है कि यह इसकी बहू है या माँ । थोड़े ही समय में पुत्र पिता के सामने छोटे भाई से मात्र म प्रगल्भा

होते हैं। लड़का विवाहित होने से कुछ ही समय उपरांत अपने माँ में
 घल्लग हो जाना है। वह अपनी जमीन और जायजान बाँट लेता है और
 घल्लग होकर अपनी सती करने लग जाता है। कहते हैं कि इसका कारण
 पुनः स्वयं नहीं होता। पुनः वधू अपनी माँ और ननद से भगडा करके
 अपने पिता को घल्लग हान को प्रेरित करती है। किन्तु द्योला ल का घर
 इसका अपवाद रहा। इसका विनोद कारण माँ का सद्बिष्णुता काय-
 पटुता दूरदर्शिता तथा सभी के अधिकारों के मर्यादा की समझता हुआ माना
 जाता था। द्योला ल के पिता के दो भाई थे। द्योला ल तथा उनके भाई
 अपने पिता के बड़े भाई को 'बाबा जी' कहते थे। उनके भी चार बेटे थे।
 द्योला ल के बाबाजी का नाम बुद्धाराम था। बुद्धाराम द्योला ल के अग्र
 गोनारा भाइयों की तुलना में निकटतम था किन्तु बुद्धाराम के घर में
 द्योला ल के परिवार के प्रति सदा से ही ईर्ष्या की अग्नि दहकती रहती थी।
 घर तो पास था ही किन्तु छत भी पान पान था। कभी छत में गाय घुस
 गई तो भगडा हो गया। तो कभी लड्डू न मत्तीरा तोड़ लिया तो भगडा
 हो गया। एक भगडे के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा इस तरह
 भगडा की एक लम्बी कतार बन चुका था। द्योला ल का परिवार सदा
 से ही इन भगडा की अपेक्षा करता रहा। चुनाव के समय भी बुद्धाराम
 के परिवार ने कभी द्योला ल का साथ नहीं दिया। यह स्वाभाविक ही है
 कि ईर्ष्या की अग्नि निकट में ही प्रज्वलित होती है। यही यह अपवाद कैसे
 होता।

तिवारी के निर्माण का प्रदल उठा तो समस्त गोनारा जानि
 सगठित रूप से साज हुआ। सभी गोदारा भाइयों को द्योला ल ने अपने

कमरे में एकत्रित किया। नियम से बुद्धाराम के परिवार को भी निमंत्रित किया कि उस परिवार का कोई भी व्यक्ति सभा में नहीं आया। आज से दस वर्ष पहले जब तिवारी का निमाण हुआ था तब भी बुद्धाराम ने एतराज उठाया था, किन्तु उस समय चुनाव आदि का बात चर नहीं थे अतः वह इतना बह्लि अधिक घिरनार नहीं आ सकी थी। उस समय बुद्धाराम के परिवार ने एक बार तो आनाकानी की थी किन्तु अंत में मान गए थे और उसे भी दे दिए थे। इस बार यह परिवार पतराम से इतना घुसमिल गया था कि ईपा को प्रणिगीत का धवसर मिला और यह अवसर भी हमके लिए अति उपयुक्त था। दो बार बार बुलावा भेजन के बाद भी जब बुद्धाराम नहीं आया तो इयालाल ने अपनी सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की। उसने अपने सभी एकत्रित भाइयों से कहा, भाइयों आप इस बात से निराश न हों कि पचायत हमारे हाथ में निकल गई है। हम चुनाव में हमारे साथ धोखा हुआ है। किन्तु हम काम करना है और मौजूदा पचायत को भी सावजनिक विकास कार्यों में सहयोग देना है। चन्दा आदि देने में कभी पीछे नहीं रहना है। हमारा गाँव अभी बहुत पीछे है। अभी गाँव में बहुत काम करने है। हमें में जूम है कि कोई भी गाँव का काम आपसी सहयोग के बिना घागे नहीं बढ़ सकता। हम समय मेर सामने एक छोटा सा काम है। आज तक गाँव के काम में उत्साह हुआ था, इसलिए हम काम की ओर ध्यान नहीं गया। आज मैं बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त हुआ गया इसलिए यह बात ध्यान में आई। आपका सामने यह निमारा है। हम तिवारी की सून गिर चुकी है। इतने एक एक करके उठ रहे हैं। तिवारी अपने बड़ी काम की रही है। घाने वाला मेहमानों का तिरा बड़ा

मरणा की वृत्तियाँ हैं। सभी का समाप्ति है। मैं जानता हूँ कि यह
 निवारी होगी बने कि इसमें मरणा का वृत्त सभी गुणधर्म हैं। एक बड़ा
 कमरा एक स्नान घर, एक पागाना घोर नाम में एक स्नान बन जाए
 ताकि छोटे भाई बिना मेरुमात्र को कोई निवृत्ति है। मरणा के बाद तेरा ते
 बन्ना रहा है घोर इस बन्ने समाप्त व नाम इस भी बन्ना है। मैंने
 कई स्थान पर ऐसा है कि बने नाम प्रतिवि शून्य यानी एक हाउस बने
 हुए हैं। प्रपत्ति यह निवारी अब प्रतिवि शून्य बटलायेगी। मेरे अनुमान में
 इस घर इस हजार से अधिक नाम नहीं हाता पाया कुछ कम भी हो।
 इस यह पता आपस में जुड़ा लगे। प्रत्यक्ष घर पांच ती इस के तो नाम
 घटा जायगा। मैं सोचना हूँ और मुझे पुरा कि नाम है कि आपसी मरी
 बात अच्छी लगेगी और आप साथ की तरह सहयोग दोगे।

एक ने कहा, हमारे लिए भा बटने बात करने, विचार करने
 के लिए अच्छी जगह बन जाएगी।'

दूसरा बोला हम प्रत्यक्ष भी मगाते रहते और इसमें बटकर
 पड़ते रहते।

तीसरे ने कहा एक रेडियो सट भी मगा ले तो क्या हज है
 ताकि सभी भाई बटकर रोजाना की खबर भी सुनते रहते।

चौथा बोला उनका कोई भी आदमी अंदर प्रवेश नहीं कर
 सकेगा।

शोलाल की कहना पडा ऐसा न कहिए। यह गाँव के सभी
 साधियों की चीज होगी। अथ जातिया के सामने यह एक उदाहरण होगा।
 वे लोग भी ऐसे ही प्रतिवि शून्य बना सकेंगे।

फिर एक प्रस्ताव आया कि कुछ रुपये और बन जायें तो ग्राम साधन भी उपलब्ध हो जायें ।

श्यामलाल ने कहा, य आप लागू की चीजें हैं । आप जानें । मैं तो घर जैसा कहूँगे वैसा ही कहूँगा ।'

इतने में बुद्धराम का भा प्रसंग था गया । यह बात भी चली कि वह उनके रास्ते में रोड़ा भटकायेगा । श्यामलाल ने जान बूझकर प्रसंग की उपमा की कि उस बात धाई ही न हो ।

दूसरे दिन तिबारी के खड्डहों को धराशायी कर दिया गया । देखते देखते सारी तिबारी ईंटों और कूड़ाकरकट में बदल गई । छत का मलबा भलग कर दिया गया ।

दूसरे दिन चढ़ा एकत्रिन हुआ जो नौ हजार तक पहुँच गया । दोप राशि दो चार दिनों में धाने की सम्भावना थी । नौ कारीगर काम के लिए तैयार किए गये । मजदूरों के लिए यह नियम रखा गया कि हर एक घर एक एक आदमी बारी से देता रहे । दो कारीगरों के लिए पाँच मजदूर पर्याप्त थे । एक मजदूर गारा बनाने के लिए दो गारा पहुँचाने के लिए लिए और दो ईंट आदि सामग्री पहुँचाने के लिए । बस हजार ईंटों की साईं दे दी गई और कुम्हार के गये ईंट लेने लगे ।

दो दिन के बाद काम शुरू होना था इसलिए उसी रात का एक मीटिंग बुलाई गई । अपने एकत्रित भाइयों को सम्बोधित करने हुए श्यामलाल ने कहा, 'दो दिन के बाद हम काम चालू करेंगे । नौ हजार रुपये इकट्ठा हो गए हैं । मैं चाहता हूँ कि रुपया एक विशेष व्यक्ति के पास जमा रहे । एक आदमी इसका हिसाब रखे और एक साथी इसकी जाँच करता रहे ।

आठ घाँसिया की एक कमरी बन जायेगा। काम करने का नियम करना रहे।'

न्यायालय के कथानुसार आठ घाँसिया की एक कमरी का गठन हो गया। कोषाध्यक्ष चर और एक क्लर्क की भी नियुक्ति हुई। यह नियम भी तैयार किया गया कि जो न्याय का काम प्रारम्भ कर दिया जाय।

जाने में एक प्रश्न था। प्रधानवर्ती ने उठ कर कहा मुझे रात्रि की एक सूचना मिली है कि युद्धराम सरपंच बन चुका गया और उसने बतलाया कि यह जमान जिस पर वह अतिविधर बन रहा है वह अपना नहीं है। बिना हरिजन की ही आज्ञा से पचास साल पहले छोड़ कर चला गया था। इस जमीन पर वह नाजायज बंढवा था। ईंटे उसी की बतलाई गई है जिनका उपयोग हो रहा है। पतराम सरपंच ने युद्धराम का यह आश्वासन दिया बताते हैं कि वह हरिजन अतिविधर नही बनने देगा। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए ?

सभी एक्जिक्युटिव सदस्य असमञ्जस में पड़ गए। आपस में बाना फूँसी करने लगे। अलग अलग मस्तिष्क का अलग अलग मन था। किसी ने कहा, 'हमें काम शुरू ही नहीं करना चाहिए। किसी का विचार था, काम शुरू कर देना चाहिए। समय आने पर देया जायगा।' आदि आदि। किन्तु ह्योलाल ने सब ठोकर कहा हमने यह नियम लिया है कि हम काम शुरू करना है आज से दो दिन बाद। काम शुरू करने पर किसी प्रकार का भी आदेश जा जाए, हमें काम शुरू रखना है। जो भी परिणाम हावे हम भुगत लेंगे।'

इयोलाल के प्रेरणादायक शब्दों ने उसके साथियों का मनोबल बढ़ गया। सभी एक ही विचार के सूत्र में बंध गए। सबको इयोलाल के नेतृत्व का विश्वास था। सभा के विमर्जन में बिलम्ब नहीं हुआ।

पुण्या जब समुरान मे बाग धार मो उगरी पदपातो म ममप
 गही सगा । थहरे का पीसापूँब का-मा यामाग गही था । तेगा मानुष
 दुषा जमे उगरे सार स रवा मो ग विषा हा । समुराल में बहू बा कर
 रही था इगलित उगरी गानकान बहू की-मा हो गई थी । ग रिती ग
 बालती थी और ग बाग हा करती थी । इमथ बिगरीन निरतर काय म
 सलान रहती थी । पाँच बजे प्रात धननी मां क साप हा उठनी थी गाया
 भैगों को पारा डालती, जिन को उजाता होत ही बडे बड़ पड पर कर
 पानी लानी और गारे पंडे मे पानी हा पानी कर देता थी । साने पीने से
 निवस्त होरर घर के सारे बहन मांजनी रीन जाकर पगुषा क लिए हरा
 चारा से घाती और फिर शाम को उसा दूग से पानी सान म लग
 जाती । मांजा कहती थी कि पुण्या अब सयानो हो गई । समुराल
 जाकर सम्भार हा गई । इसको एव महीने यही रखकर फिर समुरान
 ही भेज देंगे । मेरे से भी पुण्या का बोलना करीब कराब बन्द था । मं
 इस परिवर्तन का अर्थ नहीं समझ सका । मेरे विचार म इतना ही भाषा
 कि सम्भवत इमकी बड़ी बहन का बर्ताव अच्छा रहा होगा । मांजी की

दृष्टि में देवता का दीप था और वह दूर हो गया । किन्तु यह सही था कि पुष्पा पहले वाली पुष्पा नहीं थी । उसकी छोण्तर काया का देखकर मेरा अनुमान भी सही नहीं था । आश्चर्य की बात तो यह थी कि दिन रात काम करने के बावजूद भी उसमें कहीं थकावट का नामोनिशान नहीं था ।

आसेज का महिना था । कुछ मज्जीब से दिन थे । यर्पा के दिन समाप्त हो चुके । दिन में सूर्य के ताप में बड़ी तीव्रता थी और रात्रि को सर्दी अनुभव होती थी । किसानों के काम का समय था । लोग घर में नहीं रहते थे । दिन भर खेतों में ही व्यस्त थे । सावणी की फसल पकने जा रही थी । एक विनाश कारण और भी था । खेतों में खाने पान का मिल जाता था । घर में रहने को दिल नहीं रहता था । शिवारा का दिन था । मैं घर पर पड़ा पड़ा ऊब गया । इतने में बाहर शिवारा की आवाज आई । क्या अदर ही हो गया ? मैं दिनेश की आवाज पहचान गया । मैं उत्सुकता से खड़ा हो गया । मैंने कहा 'शिवारा शिवारा, रास्ता भूल गए क्या ? दिनेश ने बाहर से ही कहा, 'बाहर ही था शिवारा, कुछ काम है आप से ।

निशान हो । वे नय ढंग से रोनी करें । रोनी का सांभा रूप हो । मनीनों का प्रयोग किया जाय । पूरी मिर्चाई हो पूरी गान् । देग का घन बड़े ।

इमोलाल हमने लगा चापरी सरदार मम और समरिका की पुस्तकें पानी है या जनता व पस से मम और समरिका हा घानो हैं । उसी प्रकार का जीवा भारत के विमान पर घोषणा चाहती है । दग की शहरी सरकार भारत व किसान की घोषणा व गान के मम म दमती है । वह उसका दिल टोल कर मनी दमती । भारत की सरकार का भारत व विमान के मन की पाना हाया । कल्पनाओं म उन्ने मे किसान का महल उही बनगा । कितना परिवर्तन आया है भारत व जीवन म । किन्तु भारत का किसान वही है । पानी आया है हमारे पास किन्तु हमक साथ द सान के भेष म ऐस भड़िये आत हैं जिनका वेग हमार तुल स नहीं हमारे मास से भरता है । गिदा आई है हमार दहाना म कि तु वह हमारे आत्मी पकड़ पकड़ कर गहरा म ले जा रही है । जा नती जा पाते के मम मिट्टी म और धूप म काम करने लायक महा होने । व आकारा की भति या तो गलिया म फिरत है या किसी ठडी जगह म बठकर तास चौपड़, जूझा खेलत है और गराव पीते है । इतना कहते कहते मयानाल उठ गया और पाम ही से एक मतीरा तोर कर ले आया । कहने लगा ये बाते तो होती ही रहेंगी । बहकने की आदत हैं । एो मतीरा आओ ।'

इमोलाल न अपना कहानी स मनीरे के पेट मे छे किया और मुठिका ■ मतीर के दो टुकटे दिए । मतीरे की 'मोरी' साज गुनरा की तरह मनाहर थी । एक छुपरी मने सामन और दूसरी खुपरी निनेग व सामने रख कर इमोलाल उठ कर चला गया । हमन साचा कि इमोलाल

और कुछ लाने गया होगा । दिनेश ने खुपरी खाते हुए कहा, 'खाओ यार, मीठा बहुत है ।'

हम दोनों ने मतीरा खाना प्रारम्भ किया । मतीरा राजस्थान का सर्वोत्तम फल है । इसके मिठास की उपमा मिसरी से दी जाती है । किन्तु इसका मीठास अनुपम है । राजस्थान के किसान इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं । इसको कई बामारियों की औषधि भी बतलाते हैं । मुझे तो इसका प्रत्यक्ष गुण यह मिला कि एक खुपरी खान से ही पेट भर जाता है । इतने में माझा और पुप्पा भी आ गए । माझी हमें देख कर बड़ी प्रसन्न हुई किन्तु पुप्पा अलसाई पत्ती की तरह झलजल होकर बैठ गई । दिनेश पहले ही भैंसा हुआ सा बठा था । पुप्पा को देखकर और सिकुड़ गया ।

पुप्पा दिनेश के विपरीत मुड़ करके बैठ गई । माझी को मुस्क-राहट का संकेत उसका एक दात या जा बेचारा अपने समूह में झकेला रह गया था । माझी न बठने ही कहा, 'मुझे तो दूर से हाँ दिल गए थे । आज दिनेश बाबू को यह खेत कैसे पाद आ गया ?'

दिनेश ने अपनी भूप भिटाने हुए कहा, 'आपके ही खेत आ रहा था मैं तो ।'

प्राया कर, बेटा । हम कोई दूसरे चाड ही है ।' माझी बोली ।

दिनेश ने बाद में कुछ नहीं कहा । माझी ने अपनी भोली से कटु-सी ककड़ियाँ निकाली । सभी पीले रंग की मोटी मोटी ककड़ियाँ थी । ककड़ियाँ के बाद माझी ने दो मोटे मोटे मतीरे निकाले । कहने लगी, 'तुम लोगों के लिए लाई हूँ । इस प्रकाश को तो कई बार कहा है । आजकल खेत तो स्वयं है । खेता में बड़ा आनंद है । खाने

पीने की बड़ी मौज है । यह एक महीने की थीर है । फिर यह मौज नहीं मिलेगी । यह तो घर पर ही पड़ा रहता है । बड़ा आलसो है ।

माजी ने अलग अलग करके सभी ककड़ियाँ सूखी । यह अच्छी पुरी की पहचान का तरीका था । सर्वात्म ककड़ी का चदन करके दाती स चीर कर, धोज निकाल कर जानी घोटणों के पल्ले पर रखी हुई नमक मिच की गठड़ी खाल कर दोनों भागों के उचिन मात्रा में नमक मिच लगा कर हम दोनों का एक एक भाग दे दिया । हम दोनों ने ही कहा माजी हमन तो अभी मतीरा खाया है । पेट में अब जगह कहाँ ? माजी ने कहा यह नुकसान देने वाली खाज नहीं है वेटा । बड़ी हाजमा है यह । बहुत ही स्वादिष्ट है । मन सूख कर उठाई है । इसके खाने का बान मतीरा बहुत अच्छा लगेगा ।

माजी ने सामने हम इन्कार नहीं कर सका । अपना अपना हिस्सा हमन से लिया । ककड़ी वास्तव में बड़ी स्वादिष्ट था । ककड़ी को खाने ही माना पट में दूसरी खनी खुल गई । अब तो पेट भूख का से भर गया । माजी ने लगते ही मतीरा फाड़ लिया । एक एक गुपरी हमारे सामने रखी । हम दोनों ने इन्कार किया । माजी, के अधिक जोर दन पर मन कहा 'माजी पत्र में तिल रखन का भी जगह नहीं ।'

माजी हम कर जानी 'बाहू भाई बा' अच्छे जवान हुए । मर निताजी इनन नक़्ते थे इनन तक्ते थे कि जब मन्तार गान के ते थे ता ज़ना गान थे इतना गान थे कि माजी गुरियाँ गाना बाना नक़्ते पटुव जाना थी थीर यह है मात्र के जवाना का गेव । एक मन्तारा भा नी

खाया गया। मरे ताड़जो इनने तकटे थे कि मस्त ऊँट को लाठी मारते तो ऊँट गिर जाता था। इतना कहकर माजी ने एक एक खुपरी हमारे आगे रख दी और बोली, 'लो यह मेरे साथ की और खाओ। बजाकर लाई हूँ। बहुत ही मोठा मतीरा है। माजी की बात तो माननी ही पड़ी, क्योंकि यह हमारी जवानी का अपमान था। गया स्यो हमन मतीरा और खा लिया। माजी ने हमरा मतीरा फोरा और खाना गुरू कर दिया। माजी की इस स्नेहमिक्त वातावरण में रामसिंह यात्रा आ गया। माजी बोनी 'जब कभी मैं मतीरा खाता हूँ, मुझे रामसिंह यात्रा आ जाता है। पीरी भर गले में घटक जानी है। भरा रामसिंह पता नहीं कहा होगा? उसको मतारे बहुत पसंद था। इन दिनों में वह घर ठहरता ही नहीं था। कहते हैं, लडाई गुरू होने वाली है। माजी आगे नहीं कह सकी। उसका कंठ भर आया। मा की भमता जाला से टपकने लगी। माजी ने अपना मले आँखों से आँखें पाछ की। मैंने पुण्या की ओर देखा तो मानूस हुआ कि वह भी इस वातावरण में प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। मैं तू कितनी महान् है। कितनी विनाल है। मैं साबने लगा, 'कितने बामल त तुमो से बना हुआ है तरा हूय। ममता सहानुभूति प्रेम स्नेह, सद्गुणा, उदारता आदि समस्त मानवगुणों से आतप्राप्त है तेरी काया। प्रेम का एक विराट समुद्र है तू'। यह भगुण्य तो केवल तरा अंग मात्र है।

दयालाल ने आशमन से प्रमग ही बदल गया। उमर दूर से ही यह प्रश्न कर दिया 'गारद वह उसी उमर बुन में घूम रहा था, दिनेशजी, कितन लटके है आपकी स्कूल में ?

निने ने कहा, 'क्या ६ स लेकर प्यारदुकी तक डेड भी से कम ही हैं ?'

तब तो यह स्कूल टूटेगा । "योगाल बाबा :

निने ने कहा 'स्कूल का स्थिति तो क्या बननाऊँ ?' अध्यापक और प्रधानाध्यापक यहाँ रहकर सजुज नहीं हैं । सभी भाषन के बक्कर म है । सभी यह चाहते हैं कि गहर मिले ।

गहर में क्या मिलता है इनको ? क्या जान ने कहा मकान का किराया गेगा । लकड़ी पानी, गाब मकड़ी सभी का खचा है वहाँ । यहाँ सब सुविधाएँ हमन दे रखता है ।

दिनेश ने कहा केवल इन सुविधामा क मूल नहीं हैं पल्लव । गहरी सजुति में पले हुए जाव है य । हजानार मकान लकड़ी मकड़ी ताजे फल मिनेमा माई की पत्ते दर्जे की दुकान, घूमने फिरने का अरन डग की सोसाइटी यहाँ कहा है ?

कितना अंतर है इस गाव और गहर के भावन में ?' क्यालाल ने कहा हम चाहते हैं कि एस गाव इन अगहा में आए जो गावा में सेवा का भाव रखते हैं । किन्तु नहरे पुन न ता उचउ छल और स्वार्थी मुक्का को अम दिया है । इन देहानो में पेंग-मूग पहने वाल व्यक्ति घूमते नजर आते हैं । स्वतन्त्र भारत में भारतीयता लोप होता जा रही है ।

मैंने कहा सेवा भाव तो, चौबरी जी गावों में साथ गया । सच पूछो तो निम्नित नीकरपणा आदमी तो यहाँ कमाल के लिए आता है । आप पमा दा आराम दा सुविधा दा सब यहाँ पड़े रहने । सेवा भाव तो जमे इस गगन से उठ ही गया । आपक पचा और सरपचा में क्या रह गया है ?

अब ता गांधी की ख़दर को लज्जा आ रही है ।’

इसके बाद दिनेश न स्कूल की वर्तु स्थिति का विवरण दिया जिसमें ठेकेदारी भ्रष्टाचार और दयूशन का लज्जाजनक वर्णन था । अध्यापक दयूशनें करते हैं उत्तीर्ण कराने में ठेकेदारा करते हैं और उत्तर-पुस्तिकाओं में अंक वृद्धि कराने में पैसे लेते हैं । मैंने कहा, इस विभाग का भी भट्टा बैठ गया । देश का भविष्य जिन बालकों पर निर्भर करता है उनके सहचार हम भ्रष्ट वातावरण से निर्मित होंगे तो भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करना निरर्थक है ।’

दिनेश ने एक और रहस्य का उन्घाटन किया, अध्यापक अकेले खोपी नहीं हैं प्रकाशजी अभी अभी जा तीन स्थानान्तरण हुए हैं व कृपा राम जी द्वारा हुए है । आपके एम एल ए माह्व और प्रमुख व्यक्ति भ्रष्ट मार चुके । रुपया पहुँचा और काम बन गया । आपका भ्रष्टाचार ऊपर में नीचे आ रहा है । भ्रष्टा रो रहा है, पिस रहा है और खाने पीने वाले मौज कर रहे हैं ।’

इमोलाल का चेहरा जैम उतर गया हो । उसने मन मार कर कहा क्या होगा हम देश का ?’

‘जो होगा सो देखते जाओ । मैंने कहा ।

माजी और पुष्पा इस बीच पना नहीं बच चली गई थी । इमोलाल का किसान बकार न रहे यह सोचकर हम दोनों उठ खड़े हुए । दिनेश ने उठन हुए कहा, ‘हम युग में एक बात और समझन का मिली कि पाप बुरा नहीं है पाप का जगाड़ना अनर्थ है बनेटा है अपन ऊपर आपन मान खना है । पाप में सम्मिलित होकर प्रफुल्लित हो सक्ने हो, चुप रह-

प्रेमलता

कर जो सबते हो और इसक विरुद्ध बालकर अपन लिए सकट मर कर मरते हो ।’

दयोलाल चुपचाप हाथ म दांती लकर चला गया । सूय मरना चल को जा रहा था । उसको अंतिम साहित्यपूर्ण विरणा स धारा का धरती का आवाज सुनकर रहा था । ऐसा लगा कि यन् इन बन्नी तस्वीरों पर गग हो ।

निश ब साथ मकेले होन या यह पहला ही मरसर था । चारा मार हर भरे खेत सहनहा रह थे । किमान का चल धरती पर बिखरा पड़ा था । कपाम और गने की मेलिया भी कही कही म्मिवाई न रही थी । यह मूमि साना निपजगी किन्तु इस साने का चाली म यह तरर क्या है जिनसे इसकी आवाज बगड गई है । चारों ओर नरान्य और मुन्निगी । भारत का जन मानस हँसना चाहिए या रो क्या रहा है ?

निश ने मर विचार प्रवाह को यह कह कर मोड़ लिया,

‘आपने पुण्या को देखा ?’

म ता राज दलता हूँ ।’ मैंने कहा ।

निश का तात्पर्य पुण्या को अपना आँखा स खिलाना था ।

कितनी मुरभा गद है वह । निश वाला ।

मैंने कहा मन ता उस इमी रूप म दखा है ।’

निश न कहा मार क गुलाब की तरह सुन्ने थी यह । सावण की दरवा की तरह उभरा हुआ था इसका भोला घोवन । हम दाता का आपस का आना जाना था । म भी यहा पन्ता था और वह भी । घरवाला म पत्त काई बातचात नगी था ।

‘क्या तुम निकट से मिले हो ।’ मैंने पूछा ।

‘प्रति निकट से’ दिनेश बोला ‘एक दिन पुष्पा अपनी मा के थ मेर घर आई था इसी नये घर म जिस नये घर म मेरे पिताजी रहते । पुष्पा सदा स ही सकोचशील है । म ऊपर के कमरे म बैठा था । वह मती फिरती मेरे कमर की ओर आ गई । मुझे इसका आभास तक नहीं । ज्योड़ी मेरी दृष्टि पुष्पा पर पड़ी वह भाग कर नीच आ गई । मने पा को पहले ही कई बार देखा था नि तु उस दिन की नजरें ही कुछ और । मैंने बसी आखें उस समय तक नहीं देखी थी । म उस दृष्टि मे हिल गया । सारे शरीर के रोगने खड़े हो गए । मारा रक्त मनभना उठा । म धि आ गया । वह अपनी मा के साथ जाने लगी । ज त समय वह मुड र एक बार फिर भाव गई ।

दिनेश फिर चुप हो गया शायद अपनी पूव स्मृतियों को बढीर हा था ।

मुझे भी सुनने की उत्कृता जागी । मने कहा फिर ‘पुष्पा मुझे बेचनी दे गई । दिनेश न कहना प्रारम्भ किया, ऐसी बेचनी मन पहल कभी अनुभव नही का थी । स्कूल मे पुष्पा मलती ही थी । कभी कभी धाँपें चार हो जाती और शरीर म एक कम्पन नी दौड जाता ।

‘एक दिन पुष्पा किसी पुस्तक के बहाने मेरे घर फिर आ गई । ताताजी घर थी । पुष्पा ने निबंध की पुस्तक मागी । मने पुस्तक द दी । ताताजी के पास हम दोना बैठ गए । हम दाना ने चाय थी । वह जाने को थी । मैंने बसे ही बहाना बनाया पुष्पा, तुम्हारे खेत से हमारा खत भच्छा ।

।

पुष्पा ने कहा 'नहीं, हमारा खेत अच्छा है ।'

मैंने फिर त्रिदू की । उसने कह ही दिया, 'अच्छा दितामा ।'

'हम दाना खेत देखने के बहाने खेत में चले पडे । ज्वार के भुरमुट्टे में हम अकेले खडे थे । शीतल बयार बह रही थी । सावण की घटाभा ने नभ को छिपा रखी था । मैंने पुष्पा का हाथ अपने हाथ में ले लिया । मैंने कहा पुष्पा, तुम बहुत सुंदर हो । पुष्पा ने अपना हाथ छुटा लिया और वापिस भाग गई । मेरा चेहरा फफ हो गया । मैंने समझा कि पुष्पा बुरा मान गई । पुष्पा घर चली गई ।'

मैं रात भर इसी उधेड़ चुन में रूना कि कभी बात पिताजी के पास पहुँच गई तो क्या होगा ? वह अपनी माँ को भरी गिवायत पर देगी और फिर उसका माँ भरे पिताजी का । रात भर मुझे नींद नहीं आई ।

दूसरे दिन स्कूल में मैं पुष्पा से अकेले में मिलन का अवसर ढूँढ़ने लगा । अड़बिठाता में वह पाता थी रही थी । मैं भी जा पहुँचा । मैंने धीरे से कहा नाराज हो गई हो पुष्पा । उसकी मुस्कान ■ मेरा भ्रम हटा हो गया और मेरा हृदय पुष्पा का जगता ■ तिराहित हो गया ।'

कुछ ही समय उपरांत हम कुछ समय के लिए इस गाँव के घर में रहने का वाक्य होना पड़ा । पुष्पा प्रायः मेरे घर में जाती और घर में बठी रहती । कभी कभी किसी प्रश्न का पूछने के बहाने मेरे निजद बैठ जाती ।'

रात का समय था । पुष्पा मेरे घर में आई थी । गगिन का प्रश्न पूछने मेरे पास बैठ गई । उसने पुष्पा मेरे आगे रख दी । प्रश्न का उत्तर तब मिल रहा था । बाबाजी का नींद घान लगा । वह अपने कमरे में

जाकर मो गई। प्रश्न का हल न मेरी समझ में आ रहा था और न उसके। मेरे सामने दूसरा प्रश्न आ गया जिसकी उसे प्रतीक्षा थी। मेरा हृदय धक्-धक् करने लगा। रक्त की गति तीव्र हो गई। हाथ से कलम छूट गई। सम्भवतः यही स्थिति पुष्पा की होगी। मैंने पुष्पा को कह ही दिया 'तुम एक दिन भी नहीं आनी हो तो मैं मन उखाट हो जाता हूँ।'

पुष्पा ने कहा 'ऐसी क्या मैं परी हूँ।'

तुम बहुत मुँदर लगती हो मुझे।' मैंने कहा।

'माफ़ ता मुझे बना रहें हो।' पुष्पा बोली।

मैंने पुष्पा के गानों पर चपत उगाने हुए कहा 'कितनी प्यारी हो तुम।' पुष्पा का चेहरा लज्जा से लाल हो गया। वह मेरे से भाव नहीं मिला सकी। मैंने उसको टिकट लेकर उसके कपों को खूँम लिया। उसने मुझे हटाने हुए कहा 'उसे घाटे ही किया करते हैं। कोई देख लेगा।'।

कितना माधुर्य था उन क्षणों में। मैं उनका वजन नहीं कर सकता। मुझे ऐसे क्षण आज तक नहीं मिले। मैं पुष्पा को घर तक पहुँचा कर आया।'

दिनेश कहता गया एक दिन और— भावों की वियामल घटाओ न नभ की नातिमा छिपा रखी थी। भीनी भीनी शीतल हवा बह रही थी। कितना मिठास था उस वातावरण में। मैं और पुष्पा एक वक्ष के तले बैठ हुए थे। कोई नहीं था वहाँ— केवल मैं और पुष्पा। चिड़ियों का एक जोड़ा वक्ष पर एक नोड का निमाण कर रहे थे। पुष्पा ने कहा, मेरी माताजी मेरे भाई माह्य से एक बात कर रही थी।

मैंने पूछा, 'क्या?'

कहानी बाग़ मुन्दारी घोर हमारी थी ।
—ह बात तो जारी करीब तब हो गई है । मैं बड़ा ।

पुण्य रक्त मेरी बाग़ात में था गई । मेरे घरवा बचिष् प्रार
लेकर बोनी पुन बिता मचो हो । मैं उमरे भवों को भूम तिया ।
उा घरवा में अनोख मायुष पा घोर हृदय में एर दुलम घडवन । पुण्या
अग गोरूप मुके घात्र गज किमी नारी में नही गिताई गिया शतनी मुन्द
सग रही थी बह । यह पुण्या वह पुण्या नही है प्रवाग । वह पुण्या तो गई
ताग ब निग गई ।

हमारी सगाई हो गई । उमके बाग़ का मिलन एक कल्पना की
दुनिया थी घोर भावी बाग़ाओ की भूमिका । दुर्भाग्यवत्पचायतो का प्रथम
पुनाव आया । मेरे गिताजी घोर ब्योलास के दो दल बन गए । हमारा प्रासा
कह गया । मुके पुण्या अतिथ बार मिली उत्तीस्थान पर जहाँ पर हम प्राय
मिला करते थे । पुण्या मेरे से लिपट गई सता की तरह कुरी तरह बिललती
हुई दिनेग में हूब रही हूँ । मुके बचा लो । मैं तुम्हारे में समाना चाहती
हूँ । भाग चला दिनेश यहाँ से । मैं इस दुनियाँ में नही रहना चाहती ।

मैं इस विलाप का कारण नहीं समझा । पुण्या ने बताया कि
उसकी सगाई उसके बहनोई से हो चुकी थी । मेरे पर सडखडा गये । मेरा
हृदय काप गया । मेरे प्राप् सूख गए । हमारे सुनहले सपनों पर तुपारापात
हो गया । पुण्या चली गई और सदा के लिए चली गई ।

दिनेश की बात समाप्त थी । सुन भी क्षिप्त चुका था । उसकी
किरण प्रब भी अवशेष थी । पश्चिम की आचन की लातिमा में पुण्या के
मौवन रूप की कल्पना थी । दिनेश की वार्ता का उपसहार उसकी गहरा

सास से हुआ ।

दोनों चल पड़े । रास्ते में अकेली सुधा को खेती में कहा,
‘आप अकेली इधर कैसे ? दिनेश जी छूट कर तो घर से नहीं निकल गए थे ।’

सुधा ने नतमस्तक होकर कहा, ‘आप तो मजाक करते हैं ।’

‘दिनेश तो सचमुच आपस नाराज है ।’ मैंने मजाक की ।

‘वे तो सदा ही नाराज रहते हैं ।’ उसका उत्तर था ।

बातों ही बातों में सुधा की पुस्तक के प्रकाशन की बात आ गई ।

सुधा ने कहा ‘मैंने मुद्रण के लिए अपनी प्रेमलता’ भेज दी है ।’

गांव के समीप आकर हमने अपने रास्ते अलग कर दिए ।

युग का नेतृत्व अपने पीछे अपनी प्रतिष्ठाया छाड़ जाता है। उसका प्रतिरूप देग का गली गली में खिंचा जाता है और उसकी भस्म प्रत्येक अंतर में भस्म हो जाता है। भारत का निर्माण-युग अपनी भव्य भावनाओं के साथ आया और देग के कोने कोने में पहुँच गया। गाँवों में हमकी लहरो का इतना प्रादुर्भाव हुआ कि यह अपनी विद्वतियों के साथ भी गतिहीन नदी हो सका। इंदोलाल के संस्कार इसी युग की देन थी किंतु अधिकार से चुन होने के कारण अतिथिगृह का निर्माण ही उसका वायव्य बन गया। निश्चित निधि के निश्चित समय कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इंदोलाल में जितना लगन और साहस था उससे किसी भी अंग में उसके साथियों में कम न था। दो कारीगरों ने अपना 'करणी' सम्हाली, दो मजदूरों ने बटोलत, एक आत्मी ने गारा बनाने लगा और दो ईंटें पहुँचाने में जुट गए। नींव खुदने के बाद यह कार्यक्रम चालू हुआ। इंट के खनकरों से नींव भर दी गई और दोवार ऊँची उठने लगी। सभी इस जागरण में थे कि सरपंच की आर से 'काम बन करो' का आदेश आया। सूर्यास्त से पूरा हो सभी अपना काम छोड़कर चले गए किंतु आश्चर्य आश्चर्य

। बनी रही ।

रात्रि के समय पूर्ववत् श्योलाल के यहा सम्भवत एक सभा जुड ई । 'काम बंद करा का आदेश आने पर सभा चकित थे । इस सम्बन्ध में भिन्न भिन्न मत सामने आए । एक ने कहा पतराम का विचार इस साधारण भगड में पटना नहीं है । 'दूसरा बाला, 'वह हमारे संगठन में प्रान्तिक ही गया ।' तीसरे का मत था, 'बुद्धराम हरिजन की अपना नहीं बना सका । एक आवाज यह भी आई कि पतराम ने अपना गुप्तचर अव्यय भेजा था । इसी अनमजम में सभा विसर्जित हो गई । रात्रि को श्योलाल और माजी को कुछ दर जगना पड़ा । बूढ़ा बीमार था । मामी के कारण उस बैचनी थी । इसलिए मुझे भी दर तक नींद नहीं आती ।

करीब ग्यारह बजे आल लगी । मुझे एक भयंकर स्वप्न आया । मन देखा कि सारे गांव में आग लग गई थी । एक विनायक रामस अद्वयन अवस्था में अट्टास कर रहा था । बड़े गांव के एक आदमी को पकड़ पकड़ कर फेंकने लगा । 'मने में उसका पुष्पा भी दिखाई दी । राक्षस को देख कर पुष्पा भागी किन्तु दैत्य ने उसे पकड़ लिया । मेरे गले से अचानक एक चीख निकली और मैं जाग गया ।

मने देखा कि मेरा सारा शरीर पमीने में तर था । आकाश में केवल सारे टिमटिमा रहे थे । रात मुझे अत्यंत डरावना लगी जैसे सारे गांव का अपना में समाना चाहती हो । सामने का दुग्ध भी तमसय हो रहा था । मेरा भय खान को दोड़ा । मने अपने शरीर के पसीने का अपने तौलिए में पोंछ लिया । उठकर पानी पिया और सिगरेट सुलगाई । मेरे मस्तिष्क में स विचारा की लहरें दौड़ने लगी, मेरे मा बाप, भाई, बहन और

प्रति निवट आने वाला साथी । प्रेम, माँ बाप का प्रेम, माई बहन का प्रेम और साधियों का प्रेम । कितना विगात हृदय होता है माँ का ! प्रेम की चरम सीमा है माँ ! माँ के प्रेम का समता इतिहास की कहानियाँ नहीं दे सकी । माँ नारी का उत्कृष्ट रूप है । जीवन की नारी के प्रेम की विषमता के कारण ही कुछ आदम बन कर जीवित रह गई है । मैं अपने व्यक्ति पर आ गया और आकाश अधिक गूँथ हा गया । तारे भी आकाश से झोझल होन लग । अडिग ध्रुव को देखने लगत । अडिग प्रेम की भाति तुम भटल हो, अमर हो ।

विस्तर पर गरीर को इधर उधर लुढ़काने पर भी नींद नहीं आई । आँखें बंद कर फिर प्रयास करने लगा । विचारों का फिर ताता बन गया । मन स्थिति कुछ विचित्र हो बन गई । दिवाग क दूँ पर फिर कुछ विष आए जिनक निकट तक भे गया था । चित्र एक से एक मनाहर थे । जीवन के अति निकट आकर लुप्त हुए वैसे ही पत्तों से मिट गए । एक क्षिप्त आँख समझ पर ठहरा । बात भा हुई । पहल वह चित्र हँसने लगा मचाने लगा और फिर अट्टोलेलियाँ करने लगा । बड़े बादले किए । विवश होकर वह भी चला गया और फिर वही गूँथता सपकार और नरास्य । आँखों न कुछ अपना ली और पास में गुद की आवाज से नींद उचट गई । बिन्नी पाँव कर दूसरे कान में गई थी । कितनी बुभुक्षा है इसे 'पेट की भूख' । अरे यह सबसे बड़ी भूख है । भूल से ही दुनिया गति गार है । पेट ही पाप और पुण्य का खोन है । पटा में भी धनर है । किसी का पेट मोटा और किसी का छाटा । मोटा पेट भोग पाप करता है और छोट का साधण करता है । समाज में कितने कितने

महारथी भाए । सबने अपनी अपनी फिलासफी रखी इस पट की मुमुक्षा के लिए, किन्तु सब हार गया । यह गापण जिन्दा है । गांधी जैसा दबतुल्य सत्त भी सतप्त था । नेहरू भी इस ताप को नहीं जला सका । हार कर चला गया बचारा । उसकी मौत हार की मौत थी । उसका भी एक स्वप्न था । वह स्वप्न पूरा नहीं हो सका । वह उलझ गया और भर गया । भगवान् की दिवित्रता मनुष्य की गतिन में पर हैं । ललित और माक्स भी अपना स्वप्न रख गए । पूरा नहीं हो सका उसका चेली से । केवल साम्यवाद की डींग हावत है य । इमान की इमानियत को कल के पुत्रों में डालकर विद्वत् व बाजार में फास पीटते हैं । डाल का स्वर दिगड चुका है । किसी और माक्स और गांधी की प्रतिष्ठा में है यह मानव जाति । बहुत आर्योगे और अपनी डफनी बजाकर चले जायेंगे । भगवान् की सट्टि घसावनू बनी रहगी ।

फिर भी नींद नहीं आई । विश्व-कल्याण का चिंतन करने वाला को कभी नींद नहीं आई । मन में गाति नही तो विश्व के मन में शांति कहा ? सो यह सुधा का चित्र जा गया । मधुप में प्यार करनी थी, दिनेश के घर में आ गई । मधुप को अधिकार नहीं था समाज व नियम के अनुसार किसी से प्यार करने का इसलिए प्रेम की भिन्नारिन का निनेश के गले में बांध दिया । मन व प्यार और समाज के प्यार में इतना अन्तर ! समाज ने अथ पर ना नियन्त्रण कर ही रक्खा है मन पर भी नियन्त्रण है । दूबर पुष्पा हाथ धोकर रह गई । नय राज की नई व्यवस्था ने इसका निनेश छान लिया । निनेश पुष्पा का राता है सुधा मधुप को और पुष्पा ? यह दिनेश की अवश्य रोती होगी ।

अति निकट आने वाली साथी । प्रेम, माँ बाप का प्रेम, भाई -
 और साथियों का प्रेम । कितना विशाल हृदय होता है माँ
 की चरम सीमा है माँ । माँ के प्रेम की समता इतिहास की
 नहीं दे सकी । माँ नारी का उत्कृष्ट रूप है । जीवन की नारी
 विपमता के कारण ही कुछ भादस बन कर जीवित रह गई है
 व्यक्ति पर आ गया और आकाश अधिक न्यून हो गया । तार
 से भोझल होने लगे । अडिग ध्रुव को देखने लगा । अडिग प्रम
 तुम अटल हो, अमर हो ।

विस्तर पर शरीर को इधर उधर लुढ़काने पर भा
 भाई । भाई बंद कर फिर प्रयास करने लगा । विचारों का नि
 बन गया । मन स्थिति कुछ विचित्र सी बन गई । दिमाग व
 फिर कुछ चित्र आए जिनके निकट तक में गया था । चित्र ए
 मनोहर थे । जीवन के अति निकट आकर लुप्त हुए वस ही प
 गए । एक चित्र अधिक समय पर ठहरा । बात भी हुई । पहले
 हँसने लगा, मचलने लगा और फिर अट्टखेलिया करने लगा । व
 किए । विवश होकर वह भी चला गया और फिर वही न्यूनता
 और नराश्य । आँखा ने कुछ झपका ली और पास में खुद व
 से नींद उचट गई । बिल्ली फाद कर दूसरे जाने में गई ।
 बुभुक्षा है इस । पेट की भूख । अरे यह सबसे बड़ी भूख है
 दुनिया गति शील है । पेट ही पाप और पुण्य का स्रोत है ।
 अंतर है । किसी का पेट माटा और किसी का छाटा । मा
 पाप करना है और छोटे का शोषण करता है । समाज में

मायारण भोको से गान नही होगा । दम बडवानल को मउयानिउ गीनल नही कर सकेगी । ममत्व तुम्ह मिला नही नही मिला और न मिलेगा पुण्या । बड सो गई होगी । उमको नीन नही आई हागी और मुक भी नही आई ।

प्रभात क पशियो के कलरव स पूव ही में घर मे निकल गया । दूर भित्ति के आसपास धनगोजा की रागिनी हृदय को खींचन लगी । सडक क एक ओर एक धारे पर खंडकर उम राम का रसपान करने लगा । म हतना नमय नी गया था कि म जीवन भर इसी स्वर म जीत हो जाऊँ । तम का आधिपत्य अभी दूर नही हुआ था । धनगोजा का स्वर अचानक बंद हो गया और मेरा मन फिर चलायमान होने लगा । वातावरण में बानायनो से एक ही चित्र बड लो म भासने लगा । पुण्या न्तिन की पुण्या और फिर नमन पुण्या ? फिर न्तिन की मुठा या मधुप की मुधा अलड मुठा । इनने म एक मसुर गत दूर स जाना म आने लगा भूमन हागो मा पधारा म्हार देग (भूमल चना हमान देग आआ) स्तिता मानुय था इस पात म । मैं फिर भूमने लगा । पूवाकाग स आभा फूटने लगा । खट खट करना एक धागे पर एक सवार नजर आया दूर स स्पष्ट नही देख सका । समीप आन पर मुठे लड हाकर नमस्कार करना पडा । सरपच पतराम था यह ।

घोडा टहर गया । पतराम ने उपालम्भ क स्वर मे कहा, प्रकाशजी, कई महीनो स मिले हो नही । क्या जान है ? नाराज हो क्या ?'

समय ही नही मिलता । और क्या कहता ?

आलो ने फिर झपकी ली । सट कीन ? मन म पुकारा । मुह
से आवाज नहीं निकली था ।

यह क्या ? प्रत्यक्ष रूप से पुराना चित्र नया रूप लेकर आ
गया । मैं पहले नहीं समझ सका । हृदय की धड़कन बढ़ गई । गरीर
अमकणों से भीगन लगा । वस्त्र बिहीन नारी चेहरे पर केवल बालों का
बिलराव और छोटी स एडी तक बचल नग्न रूप । नग्न सौ दय मृत्यु का
आह्वान लेकर आ गया क्या ? भय स विस्फारित हो गई मरी आय ।
मन म सोचने लगा यह कीन है । मुह से आवाज नहीं निकल सकी ।
नारी बोली माग आग पानी पानी । इस आवाज से कुछ ठाडस
मिला । यह पुष्पा थी । पुष्पा तुम नग्न निरावरण ? इस विचार से
हृदय आलोडित होने लगा । चार की तरह दबा हुआ सीना नहीं था कि तु
ढाकू की तरह सीना तान थी । आखें जलती हुईं नजर आईं । आशोश
और वितुष्णा का मूत्त रूप था वह । कितना भयावह था वह नारी का
मग्न रूप । मेरा आँखों की विश्वास नहीं हुआ । स्वप्न का प्रत्यक्ष देयने
म असमय था म । मन अपने मुह को आवत कर लिया । इस हलचल स
पुष्पा उ ही परो स वापिस लौट गई ।

मनाविकारा का एक तरंगित प्रवाह मस्तक म पूरे वग से दौड़ने
लगा । पुष्पा का नारीत्व । कलौ विकसित हात ही आधी न झकरोरा स
गिर गई और कुचल दी गई एक बूट खू सट बल क गुर स । आलाकन
करने वाला मातृत्व नहीं मिल सका । तुम बचन विकल विह्वल हा ।
रात्रि क तमावत कालाहल बिहीन गायलता स अपने विश्व हृदय का
गात करन क लिए निजल गयी हा । अगात सागर का यह अभवात म

साधारण भोक्ता से गान्त नहीं होगा। इस बड़बान्ध की मलबानिल गीतन नहीं कर सकगी। समस्त तुम्हें मिला नहीं मिला और न मित्रगा पुण्या। वह सो गई होगी। उसको नील नहीं आई हाथो और मुझे भी नहीं आई।

प्रभात के पक्षियों के कलरव में पूव ही मैं घर से निकल गया। दूर क्षितिज के आसपास अलगोजो की रागिनी हृदय को पीचन लगी। सड़क के एक ओर एक घोरे पर बैठकर उस राग का समान करने लगा। मैं कतना नम्र हो गया था कि मैं जीवन भर इसी स्वर में लीन हो जाऊँ। तब का आधिपत्य अभी दूर नहीं हुआ था। अलगोजो का स्वर अचानक बदल हो गया और भरा मन फिर चलायमान होने लगा। वातावरण ने वातायना से एक हा चित्र कई रूपों में भासने लगा। पुण्या, त्रिनेत्र की पुण्या और फिर नम्र पुण्या? फिर त्रिनेत्र की सुधा या मधुप की सुधा अरुहड मुधा। इनमें मैं एक मधुर गीत दूर से जाना मैं आने लगा, मूमन जानो सा, पधार गृहार दस (मूमन जानो हमारे देश आभा) कितना मानुष था दस गीत मैं। मैं फिर भूमने लगा। पूवाकाग से आभा फूलने लगा। खट खट करता एक घाड़ पर एक सवार नजर आया दूर से स्पष्ट नहीं देख सका। समाप्त आने पर मुझे खड़े होकर नमस्कार करना पड़ा। सरपच पतराम था यह।

घाना ठहर गया। पतराम ने उपालम्भ के स्वर में कहा, प्रकाशजी कई महीना से मिल ही नहीं। क्या बात है? नाराज हो क्या?

समय ही नहीं मिलता।' और क्या कहता?

आधो कोठी चले । कहकर पतराम घोड़ से नीचे उतर गया ।
 पतराम और मैं दोनों पल साय चल पड़े । जाते ही चाय का
 आदेश देकर पतराम बात करने के मूढ़ में मेरे सामने बैठ गया । पतराम
 ने बैठते ही कहा आप शायद मेरे से नाराज होंगे या यह कहें की मेरे
 सम्बन्ध में आपके विचार अच्छे नहीं होंगे ।
 मैं इतना ही कहा नहीं तो ।

प्रकाशजी, पतराम बोला जनतंत्र समूह का उपाधिपूज है ।
 यकिन का जास्तित्व समूह के साथ है । जनतंत्र का यक्ति स्वयं में
 य है । मैं सरपंच हूँ । सरपंच यकिन रूप में महत्वहीन है । सरपंच
 य एक समुदाय है जिसमें अपने साधियों का सहयोगी स्वर है । समुदाय
 इच्छा ही सरपंच की इच्छा है । सरपंच दोषी है तो उसका समुदाय
 दोषी है । मैं फौज का सनापति नहीं हूँ मरानेवृत्त तो उस वाले के
 समान है जो गीजे रहता है ।

पतराम क्या करना चाहता था मैं उस बात से किसी निष्कर्ष पर
 नहीं पहुँचा । मेरे मन में एक प्रश्न पैदा हो गया । मैंने पूछा आप अपने
 समुदाय के आधार पर बतायें कि चुनाव में कौनसा बल अधिक महत्वपूर्ण
 है ?

पतराम कई चुनाव लड़ चुका था । मेरा प्रश्न उसके मन की बात
 प्रकटी थी । वह बोला आज का मतदान इतना अपरिपक्व है कि उसको
 किसी भी प्रवाह में बहाया जा सकता है । भले आर बुरे की पहचान नहीं
 है । जिन क्षणों में वीप्रस ने काय किया वहाँ वह बुरी तरह परास्त हुई
 और जहाँ काय बिल्कुल नहीं हुआ वहाँ वह जीत गई । मैंने अपने प्रथम

सरपंच काल से निमाण में मन लगाकर काम किया। मेरे पर अनेकों लाछन लगे और मैं बुरी तरह परास्त हुआ। राजनीति, छल, कपट और धोखे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

दिनेश की मा ने भी चाय रखते हुए मेरे आगमन पर आश्चर्य प्रकट किया। आज सूरज बिघर उभेगा ?'

ऐसी क्या विशेष बात होगई ? मैंने पूछा।

मैंने तो सुना है कि दिनेश के पक्के दास्त हो, फिर हमसे नाराजगी क्यों ? वह वाली।

पतराम भी बीच में बाल गया, 'जरूरी थोड़ा ही है कि बेटे का दास्त बाप का भी दोस्त हो। आज भी पकड़ कर लाया हूँ।'।

अपने आप ही घ्राए।' यह बोली 'कौन बूटो मा को सम्हालता है ? कभी उसे भी पकड़ कर लाओ न।'।

'दिनेश कभी आता ही नहीं क्या ? मेरा प्रश्न था।

'वह तुम्हारा ही तो दोस्त है। तुम आओ तो वह आए।' पतराम का उत्तर था।

'अबकी बार मैं लाऊंगा पकड़कर। आता कैसे नहीं ? मैंने अपनी आर ॥ बात समाप्त कर दी।

व्याह के बाद बेटा बहू का होता है, बेटा।' दिनेश की मा बोली।

उसमें भी तो नहीं बनती उसकी।' पतराम ने कहा।

फिर पतराम ने दिनेश और मुधा के सम्बन्ध के बारे में विवरण के साथ कहा। पतराम ने इस कथन से दम वाता का भूत हो गया, 'वह

मेरे चारा आर श्योलाय के शक्ति का घरा था इसलिए पतराम का चेहरा भी मेरे सामने स्पष्ट था। इस बुद्धलपन में उसका निमग्नता भी दाग की तरह चिखलाई दे रही थी।

पतराम में भी मैं भारी मन लेकर उठा रास्ते की लम्बाई में रिवारा की मुत्थिया न घाटी कर दी और उर्म प्रवाह में दिनेश के घर चला गया। मैंने कहा कि निनेश जका ही एक टूटी खाट पर पड़ा एक दिन में जमान पर उल्टा माघी रखाये खींच रहा था। मकान के भी दरवाजा खुले पड़े थे। 'आइय कहकर दिनेश ने मेरे आगमन का स्वागत किया। मैं बस गया कि तु निनेश कैसे आ लेटा रहा। मैंने पूछा, आज ऐसी है?'

एकाकी जीवन भर एकाकी। निनेश ने कहा और उसकी आँखें छनछनता आईं।

निनेश का नाम जाना की राह से बिखरने लगा। उसका गला भर गया और बाग़ा अवरुद्ध हो गई। मन बाध पूछने के लिए सात्वना के कुछ में न पूरे। निनेश ने आँखें पाछी। उसका गला साफ हो गया। वह कहने लगा आज सुधा चली गई अपने पीहर। वह जाने वाली तो नहीं था तुमने कुछ बुरा भला कहा होगा। मैं बोला।

म क्या बोलता? साधारण सी बात का था राजाना का तर। बस उस कवि के बचने का फिर पत्र आ गया। समझ रहा।

सुधा कुछ लिखती बिखती है। इस सम्पन्न में पत्र डाल दिया होगा। मैंने कहा।

'वह हराम की बच्ची उसका पत्र लिखती हाथों तभी तो वह डालता है। वह बोला।

मैंने फिर समझाया, मुधा की पुस्तक प्रेस में गई है। इस समय में उसने कुछ लिखा होगा।'

दिनश फिर आवश में आकर कहन लगा 'मुझे पसंद नहीं यह कविता कविता। मैं सौ बार उसे कह चुका हूँ। उसने तो मेरा मजाक बना रक्खा है।'

मैन धयपूजक उसके आवश पर छोट डालत हुए कहा 'भा' मातिर उसमें प्रतिभा है। उसका उपयोग तो होना ही चाहिए।'

'उपयोग के मतको रास्ते हैं।' वह फिर जोर से बोला 'जरूरी है कि दुनिया में प्रकाशन का मारा वेद्रीयकरण उस मधुप के बच्चे के पास ही है।'

मातिर तुमने मुधा से क्या कहा कि वह चली गई।' मन पूछा। वह बोला 'मैंने साफ साफ कह दिया कि मेरे घर में कोई स्थान नहीं है।'

'और वह चला गई? मैन पूछा।

'वह क्या करती? उसने कहा।

'आपन उसे निकाल दिया। या कहना चाहिए।' मन कहा।

तुमने और कुछ भी कहा होगा? मन पूछा।

वह आवश में बोला, मैन कहा कि तेरे हाथ पर काट दूंगा यदि तू मरना रानी ता।

'तुमने अच्छा नहीं किया, मिन।' मन कहा, नारा का भी अपना व्यक्तित्व होता है। वह भी अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है। पुरुष को उसमें बाधा नहीं

नारा का कह बतव्य है कि ५

के लिए। दिनेश अश्लील बोल गया।

‘तुम्हें इस प्रकार का समन्वय करना चाहिए था जिससे उसका विकास भी चलता रहता और तुम्हारी प्रतिष्ठा को भी धक्का नहीं लगता। मैंने समझीतावाणी बात की।

‘मुझे यह सह अस्तित्व का सिद्धांत पसंद नहीं। उसने कहा। मुझे भी जाना आ गया। मैंने कहा ‘तो तुम्हारा मतलब यह हुआ कि नारी पुरुष के कठोर नियंत्रण में रहे और पुरुष उसकी अपना तिलीना बना कर खेलता रहे।

दिनेश कुछ डोंग पड़ गया। वह बोला, ‘नहीं, ऐसी बात तो नहीं का मो प्रकाश। गुस्मा क्यों करते हो? तुम्हारे सामने क्या मने उसे समझाया नहीं? क्या मैंने कम सहन किया है? वह बात बात में रीब टालती है। यहाँ तो रखे मूल दुमकड़ है। त्यागो और मीज करो। इशत से घर में रहो।

खर आडो वह गई हा। भक मार कर तुम ही लाओगे।’ मने कहा।

वह फिर रीब भरे गानों में बोला, अपना ता कभी नहीं जायेंगे। मुझे उसकी परवाह नहीं। रोटी बनायग और खायेंगे।

अच्छा बाबा मत लाना। अब ता छोडा। हा गया।’ मन कहा।

मैं उसी म्प में दिनेश को छाडकर आ गया। मुझे दिनेश और सुधा के भगडे में विशेष सार नजर नहीं आया। मैं घर आया ता माजी बहुत प्रसन्न थी। उसने जोर से आवाज दी, प्रकाश आज तो रामसिंह आ

गया है। एक महीने को छुट्टी है। माजी का मने बघाई ही और खाना खाकर निन म हा सा गया।

रात की नीद थी और कुछ थका हुआ भी था इसलिए नीद आ गई।

बिडिया ने कोलाहल से मुझे जगा दिया। मेरे कमरे में बिडिया ने कई नींद निमित्त कर रक्के थे। व दिन भर चरचराहट करती थी। मैंने कई बार तग आकर उनका भगाने के लिए एक कपड की मद बना रखी थी और रस्सी का छत का कडा म बांध रक्का था और उसी के द्वारा उनको भगाने का प्रयास किया करता था। कभी कभी उन पर सदा नुभूति और दया के भाव न। उमड पडत थे इसलिए व मरी दुःखता का पूरा लाभ उठानी थी। मैं इनकी दुनिया को गौर से देखना भा था। इनकी प्रवृत्ति का मानवीय प्रवृत्ति से सुननात्मक अध्ययन भी कर लिया करता था। इनका भी एक समाज है। मानव का तरह इनका भी नियम है। व अपने बनाये नियमों का उत्तपन भी करते हैं। इनकी सुभान के लिए कती यायालय नहा है फिर भी इनकी समस्याओं का समाधान भा हाता है। आज भी एक भगडा था जिगने मुझ ना म जमाया। एक माता पर दो नरों का भगडा था। दोनों में मय्युद्ध हो रहा था। धादिर माता का निगम भी हो गया। एक नर का वह माता मित गई। दूसरे नर ने अपनी हार स्वीकार कर ली बजाकि माता उसके पास गयी थी। वह परास्त हावर उड गया। प्रेम यही भा विद्यमान है और अनिम विनय प्रेम की ही हानी है। एकर विचारन मनुष्य न प्रवृत्ति के नियम बन कर अपने ही हानि निम बना रहा है। वह अपने बन का मरोवरि मात कर गये

इतिहास के अनुभवों की उपेक्षा करता आ रहा है और हिंसा और प्रतिशोध के खूनी खेल करने में लगा हुआ है। क्या आज का पशु इस मानव से अधिक समझदार नहीं ?

मैंने अपनी छत की ओर दृष्टि डाली। सभी युगल अपने निमाण काय में लगे थे। मैंने स्टाव सिलगा कर चाय बनाकर पी और एकांत में सभी तरफ के दृश्य देखता हुआ मन रजित करता रहा।

रामसिंह का पुष्ट शरीर जगहर में प्रकटित हो गया। उनके रक्त में भी घात हो गया था। जब वह घर में मिलने आया तो अति प्रसन्न था। मने उसको उसी नीकरी पर बधाई दी और स्वास्थ्य निर्माण पर हृदय प्रवृत्त किया। इस तरह रामसिंह ने आनन्द सनिक स्वभाव से शरीर निरुद्धता का निवारण किया। उसके अग्रिम में निर्मासित जीवन तथा अग्रज्येष्ठता का प्रमाण था। बाता ही आता में आनन्द और पाकिस्तान के आनन्द का भी निरुद्धता था। मने कहा, हम अत्यन्त में पढ़ते हैं कि भारत की सेना का मनावल बहुत ऊँचा है। रामसिंह ने कहा, हम आगा का दिल बड़ा मजबूत है। हम तो चाहते कि हम एक बार आपस मिल जाय, फिर देखो हमारी हिम्मत। दुश्मन की चार तरफ से देखें। मने कहा, हमने तो सुना है कि हमारे पास बड़ा पुराना हथियार और पुरानी ट्रेनिंग है।

रामसिंह ने उत्तर दिया, वे दिन गए। अब तो हम पूर्ण रूप से सुसज्जित हैं। पाकिस्तान तो हमारी आँखा में डरना है। मैं आजकल कश्मीर में लगा हुआ हूँ। पाकिस्तान की फौज उधर छोटी हुई जरूर

है किन्तु ऐसा मालूम होता है कि उनका शरीर ही जिंदा है हृदय टूटा हुआ है । कभी केवल हमारे नेताओं की है कि हमें आनमण का आदेश देत ही नहीं । टिफेन्स' की गोलियाँ चलाते हैं ।'

मैंने कहा नेताओं की नाति मराव नहीं है, रामसिंह । युद्ध की विभाषिका बड़ी भयंकर है । हम और हमारे साथी आदेशों में बात करते हैं । ये बातें बहुत सोच समझ कर करने की । आज भारत, चीन और पाकिस्तान तथा अन्य पड़ोसी देश बहुत पिछड़े हुए देश हैं । अभी समस्त एशिया युद्ध करने की स्थिति में नहीं है हम अभी अपने निर्माण और विकास में लगे हैं । चीन की छेड़छाड़ उसकी भयंकर भूल थी । एक ओर उसको भी अपनी आर्थिक स्थिति को दृढ़ करने का प्रश्न है और दूसरी अपने सिद्धांतों को फलाने की चिन्ता । वह दोनों ही दृष्टियाँ से घटे में रहा । पाकिस्तान और भारत के सामने भी अपनी जनता के लिए रोटी और राजी का प्रश्न है । यदि ये दोनों देश युद्ध में उलझ जायें तो जो कुछ उठाने पाया है उसको पुनः प्राप्त करने के लिए कई दशक और बीत जायें । आज भी दोनों देशों का अपनी सुरक्षा के लिए भरपूर का खर्चा है और उनका कोई उपयोग वास्तविक उत्पादन में नहीं है ।'

सैनिक द्रव्यता का व्यक्ति मेरी दलील से प्रभावित नहीं हुआ । युद्ध के दुष्परिणामों की कहानियाँ इनका नहीं मुनाई जाती । विषवासा का ज़हन, अनाथा के आसूँ नूले सगङ्गा की विवर्णता और इसके साथ युगों से अजित ससृष्टि का विनाश एक अपरिमित घनराशि और अरथा की जन-हानि से द्रवीभूत होने की गाथाएँ इनके निक्षेप में नहीं होती । प्रेरणादायक साहित्य की इनको हमने हमें मौत की ज्वाला में गिरने को

आह्वान करता है। रामसिंह ने उमी प्रवाह में अपनी प्रतिभण की बातें, अपने साधियों की कथाय और मोर्चे पर घटित होने वाली घटनाओं का विशेष विवरण था। इतने में बाहर कुछ हल चल दिखाई दी। हमने खिडकी से देखा कि तिवारी के काय में सलग्न सभी नारीगर एवं मजदूर एक स्थान पर एकत्रित थे। रामसिंह भी यह दृश्य देखने बढ़ा चला गया। रामसिंह ने पुन आकर मुझे सूचना दी कि स्टे आडर लेकर चपरासी आया था। पचायन का आदेश था। दयोलाल ने आदेश लेकर उसे फाड़ कर फेंक दिया। चपरासी को भी खरी खोटी सुना दी। तब भर काय पूववत् चलता रहा।

रात्रि को दयोलाल ने अपने साधियों से गोरनीय मरणा की जिसका भेद मुझे नहीं मिल सका। माजी काय में निवृत्त होकर समय काटन की नियत से मेरे पास आ गई और बठते ही बाली बेटा, समय कितना खराब है ?

मैंने कहा माजी, कैसे ?

माजी ने अपने उस समय की बात की जब गंगा में ठाकुरशाही और किलो में राजगढ़ी थी और किमाना के घरा में जूशाही और गून्ड शाही थी किन्तु ससार में सबसे मीठी घनीत की स्मृतिषा होता है। मैं माजी का काय कैसे देना ? माजी का घसना रोष तो आज की घटना पर था। मैंने मजाक में माजी से पूछा माजी एक तरफ देग का प्रधान मंत्री और दूसरी ओर अपने राजाजी खड़े हो तो वोट किससे दोगे।

माजी ने भ्रष्ट से कहा अपने राजाजी को बेटा राजा के राज में बड़ा सुख था।

कैसा सुख था, भाँजा ? मने पूछा ।

‘बड़ा तप था राजा का बटा । माँजी बोली, पतराम जैसे ऐरोगरा की थोड़ी ही चलती थी । मर्जी आई जैसे कलम रगड़ दो और काम बन्द करने आ गए । उनक बाप की जमीन है । बरसा स हम सब का बरजा है उस पर ।’

शांति म बीच ही म आकर दो चार उल्टी मँधी गालिया पतराम और उसक परिवार को निकाल टाका । दोना दठकर चली गई ।

दूसरे दिन दोपहर का म दिनेग क यहाँ चला गया । निनेग उल्टा मुँह किए एक पनग पर पड़ा था । सारा घर कूटा ककट से भरा पड़ा था दापद सुघा क जानै क बान कमरे म भाटू ही नली लगी थी । कुर्मी मज, सभी अपने उचित पदा म अपनस्थ थ । कुर्मी की गद्दी ने निनेश के ताकिय का स्थान ले रख्या था । कुत्ता का आवागमन निबिध्न और सरल था । व स्वच्छन्दता स घूम रह थ । भरे पैरा की घाहट स दिनेग की तन्ना भग हा गई और वह अपनी आत्मा का ममल कर उठ बठा । मैंन पूछा घर का यह क्या हाल है ? सुघा के घाद भाडू ही नली निकली ।

निकाल लग मार निनेग बाला अभी क्या उल्टी है ? आज लडको का बुलाया है । व आकर निकाल देगे ।

मैंन कहा, यह टोक रही । माना पीना ता कर लिया हागा । वह बोला आज तो भूल ही नहीं थी । गाम का बनायगे वन गाम को घर जाकर ला लिया था ।

‘पर ता घोरन का ही है यार सग पुया ता । मैने कहा,
मुभा थी ता घात - था । सब ता घायन। पूरा मूरा खान्धि हा नगाव
नहा होनी ।

‘उमरा ता नाम ही मा सो । उमने कहा ‘पर म गानि ता
है । नहा ता रात नि बर बर भर भर रहता था ।’

मैने कहा ‘रहने का भाई । चक्रे पर लगे घडा हुई है । दो
नि स पट म बिन्दिया बिन्दिया रही है । च रे का बमक चल गई
है । पर कूँ स भरा पटा है । गया ही गत था क्या भागना और भाग
घर का ?’

‘रहने का यार इस बात का सो । दिनेग ने कहा ‘भाग लिए
चाय बनाना हूँ लेकिन दूध नहीं है । अच्छा भाग ठोरो ता दूध ल
माऊँ ।

मैने कहा अच्छा मैं स्टोव जलाता हूँ और गुप्त दूध ल आओ ।
बाज ‘सल्प सवित होयी ।

‘दिनेग दूध लाने चला गया । मैंने स्टोव उठाया । दो दिन से
उस पर भी गद जमी थी । कुत्ता की चाटी हुई पनीला का माँस कर
साया और पानी ठूँटने लगा ता घर मे कहाँ पानी नहीं था । नेग को
बिनाग स बचान के लिए पढोस मे पानी मागा और पानी चटा दिया ।
ढूँँ कर चाय तो ले आया कि तु बीनी नहीं मिली । इतने म ‘दिनेग आ
गया । मैने कहा ‘भाई मुझ के साथ घायन पास मुझ थी कि तु अब जल
भी नहीं ।

दिनेग ने अपना मिटाने हुए कहा ‘आ हो पानी तो आज मगाया

ही नहीं। प्रापन कैसे किया ?”

‘पहोस स मागना पडा क्या समझा होगा उ दाने ? मैंने कहा ।

वह बोना ‘समझना क्या है ? मैं दो दिन से पहोस स काम चला रहा हूँ । नई बात थोड़े ही है । आज मगाने का विचार है ।’

चाय उपनने लगी । दूध डाल दिया । कुछ ही क्षणों के बाद चाय उतार ली गई । हम दो कपों में चाय छान कर पीन को तैयार हुए । दिनेश ने घूँट लेते हुए कहा ‘इसमें चीनी तो है ही नहीं ।’

मैंने कहा ‘चीनी रस डूँढी थी । मिली नहीं । मैं पूछने वाला था लेकिन भूल गया ।’ मैंने अपना उपालम्भ उतार दिया ।

दिनेश ने अदर जाकर चीनी को तलाश की । चीनी नहीं मिली । वह फिर भागा और बाजार से चीनी लाया । चाय का ताप शांत होने से पूर्व ही चीनी का पहूँची । चाय का स्वाद मटपटा था किंतु प्रयास का फल मीठा था ।

चाय पीन के बाद साधारण सा बातें हुई । दिनेश और मैं दाना ही साथ चल पड़े । हम दोनों एक गली को पार कर दूसरी गली में पहुँचे तो ‘बोलाल ब घर की ओर काहराम सा सुनाई दिया । हम जल्दी जल्दी आगे बढ़े । तिबारी के पास एक अच्छा जमघट था । एक ओर श्यालाल और रामसिंह खड़े जा रहे थे और दूसरी ओर पतराम था उनके चारों ओर अच्छी खासी भीड़ थी । हमारा अनुमान था कि भीड़ और भगड़े का कारण तिबारी के सम्बन्ध में काम बंद करों का आदेश ही होगा जिसे श्यालाल ने फाटकर फेंक दिया था । दिनेश ने यह दृश्य देखकर बदम तंत्री से बड़बुदने शुरू किए । मैं भी उसी प्रकार थोड़े चम्के लगा । दिनेश

भीड़ में घुस गया। बात यही तक बन्द नहीं हुई कि हाथा पाई का नीबल लगे
गई। धीरे-धीरे भीड़ अपने-अपने घरों के आगे भीड़ लग गई। धीरे-धीरे
को धीरे से गालियों की भी बौछारें प्रारम्भ हो गईं जो हर प्रकार के
अदलील थीं। माजी धीरे-धीरे पुण्या भी घर से बाहर निकल आई। माजी भी
भीड़ में जा फंसा। उसके पीछे पुण्या भी चली गई।

शिष्ट व्यक्ति अनिष्टता पर उतर चुक था। जाध की भयानक
अग्नि की ज्वाला ने मानवीय व्यवहार को खस कर दिया था। कुछ लोग
बीच बचाव में भी पड़े किंतु पतराम और श्योलाल दोनों। इच्छा में उलटने
चुके थे। माजी की धीरे से भी गालियाँ की भीषण वर्षा हो रही थी।
गिना संशतल किया हुआ दिनेश भी गम हुआ गया। उसने माजी की चोटी
पकड़ ली। धड़ाम में गाली का आवाज आया। गोली दिनेश पर चली
थी किंतु पुण्या का गरीब निधिल होकर नीचे गिर गया। एक बार भया
मक शांति छा गई और उसके एक क्षण उपरांत पुण्या के गरीब का गिरा
हुआ देखकर नन्ममय कीहराम गुरु हुआ गया। माजी पुण्या पर धड़ाम से
जा गिरी। पतराम और दिनेश नाटकीय ढंग से गायब हो गए। सबने
रामसिंह की ओर देखा। गोली रामसिंह ने छोड़ी थी। रामसिंह बच आया
गया और जब बन्दूक लेकर बाहर आया वह किसी को भेद नहीं था।
रामसिंह हवा बरबाद बन्दूक लिए गया था। श्योलाल ने भयंकर से
रामसिंह की बन्दूक छाना और उस आँख से गया। पुण्या के चारों ओर
पड़ोस के आँखों की ओर धीरे-धीरे भीड़ लग गई। पुण्या का गरीब अभी
छप्पटा रहा था। गोली छाती के पास सगी थी और गरीब के भार पार
हो चुकी थी। कपड़ों मारे लाली नुगन हो गए। भूमि पुण्या का रक्त पीने

किसी ने तुरन्त डॉक्टर लान की भी सम्मति दी । किंतु कुछ छटपटाहट के बाद पुष्पा का शरीर शिथिल हो गया । घरा पर केवल पुष्पा का शिथिल पायिव शरीर था और प्राणों का पछी उड़ चुका था । पुष्पा गई सदा के लिए इस भौतिक संसार को छाड़कर चली गई ।

पुष्पा के मृत शरीर पर एक घबल आवरण ढाल दिया गया । लाश स्थान से नहीं हिलाई गई । घर में कोहराम मच गया और उसके साथ एक श्रातक का घानावरण आच्छादित हो गया जिसका स्पष्ट रूप सबके सामने था । पुलिस के आने और लाश के पोस्टमार्टम में श्यालाल की कायपटुता के कारण तीन चार घण्टे से अधिक नहीं लग सका । रामसिंह अपनी बटूक के साथ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया । बूढ़े से लेकर एक बच्चे तक वे चेहरा पर एक काली छाया आ गई । बिपाद और वेदना का जो वातावरण इस घर में व्याप्त था उसका वणन किसी कवि की लेखनी ने बना का बात नहीं थी ।

सभी के प्राण जैसे झूय हो गए हैं । रोदन की बिघाड़ धीरे धीरे सिसकिया में बदल चुकी थीं । सहानुभूति के लिए आने वाला औरतो से सामुहिक रोदन फिर पूर्ववत् व्याप्त हो जाता और फिर घटना के विवरण का पुनरावृत्ति हो जाती । सूयास्त से पहले पहले आसपास के सम्बन्धियों की भी भीड़ लग गई । श्यालाल पुलिस के साथ ही चला गया था । घर में समझदार पुरपा में केवल पुष्पा का बाप हरीराम था जो बार बार घन्दर आकर 'राम भज, राम भज' की ध्वनि के साथ सात्वता देकर पुन वमरे में चला जाता । आने वाला की भीड़ के उपरांत बूढ़े की

पुसत नहीं मिली । कुछ समय पश्चात् ही पुष्पा की लाश घर में आ गई । फिर कोहराम मच गया । अर्थाँ अविसम्व तैयार कर दी गई । दो घंटे के पश्चात् पुष्पा का भौतिक शरीर भी राख हो गया ।

पुष्पा को मृत्यु उस प्लि धर धर को चर्चा थी । अनेको विचार इस मौत को लेकर चले । कुछ लोगो के मत में पुष्पा को जान बूझकर गोली का निशाना बनाया गया क्योंकि घर वाल उससे तंग थे । कुछ लोगो के विचार में गाली पहराम को मारी जा रही थी कि तु निगाना ठाक न होने पर पुष्पा के लग गई । वास्तविक स्थिति हमसे भिन्न थी । रामसिंह दिनेश पर गोली चला रहा था और पुष्पा जान बूझकर इनक बीच आ गई । गोली चलाने के बाद रामसिंह गुमगुम होकर घर में पड़ा रोता रहा और पुलिस के आत ही स्वय ही पेश हो गया । रामसिंह को फरार कराने की बात घर के किसी व्यक्ति के दिमाग में नहीं थी । रामसिंह पुलिस की हिरामत में आने तक मौन हो रहा ।

सहानुभूति के लिए आने वालो में उन लोगो की संख्या अधिक थी जो वास्तविक तथ्य की खोज में थे और इसीलिए उनक प्रश्न भी गौध भूय होते थे । मात्री ही उत्तर देने में असमर्थ थी इसलिए वह यह कहकर ही टाल देती थी तबगीर हमारी आगी है कि बहन मर गई और भाई गिरफ्तार हो गया ।

पुष्पा की मृत्यु की रात्रि मरे जीवन की भयानक रात्रियो में थी । इस गाम को किसी ने माना नहीं स्थाया । घर के झूठ में आग मुलगी ही नहीं । अडीस पचीस में भी इस मौत का कतना विषादमय प्रभाव हुआ कि किसी घर ने रात्री नहीं पचाई । परम्परा के अनुसार कुछ निम्न

के व्यक्तियों के घरों में रोटियाँ आईं किंतु घर के कुत्ता ने भी रोटियाँ का
 नहीं छूआ। घरवालों का दद तो पिघल कर आँखों की राह बह रहा था
 किंतु मेरा दद अंदर ही अंदर धुलने लगा। रात्रि के बारह, एक बजे तक
 घरवालों की तिसकिया बंद नहीं हुई थी। उसके बाद सभी ने सोने का
 खेड़ा की। इस घण्टी में तल वायु भी शीले बरमा रही थी।
 डलती रात निस्संश्रुता झूत सी भयावही लगने लगी। पुष्पा की तस्वीर
 मेरी आँखों से प्रोक्त नहीं हो रही थी। समस्त वायुमंडल पुष्पामय बन
 गया। मृतपुष्पा का भूतरूप मेरे सम्मुख आने लगा। और मैं अपनी खाट
 उठाकर दरवाजे के बाहर आ गया। बूढ़ा हरीराम और हरीसिंह भी वही
 सो रहे थे। मैं बूढ़े की छटिया के पास खाट डालकर लेट गया। बूढ़े ने
 लेटे लेटे ही कहा

‘कीन ? प्रकाश ।’

‘हाँ, बाबा ।’ मैंने कहा ।

‘नींद नहीं आई, बेटा ?’ बाबा ने कहा ।

‘नहीं, बाबा’ मैंने कहा ।

‘नींद नहीं आएगी बेटा, नींद ने गर्म पुष्पा । रामसिंह ने यह
 क्या किया । बाबा ने कहा ।

भावी प्रबल है, बाबाजी । जिसका कमूर नदी ।’ मैं बोला ।

बाबा बोला ‘हाँ बेटा, भावी प्रबल है ।’ यह कहकर उसने एक
 नम्ब्री सात खोँची और अपने स्वभाव के अनुसार वही राम भज की रट
 लगाई ।

मैंने कहा ‘नींद ले लो, बाबा ।’

‘नींद नहीं आएगी, बेटा ।’ बाबा बोला, नींद ले ली जितनी लेनी थी । मेरा बुढ़ापा खराब होना था सो हो गया । मुझे भगवान् पहले ही उठा लेता तो ये दिन देखने नहीं पड़ते ।’ बाबा ने सिसकियाँ भरती गुरू कर दी ।

आसमान के तारे भी रो रहे थे । बहती हुई वायु मिस्र रही थी । दूर फुत्ते बराह रट रहे थे । कितना डरावना रूप था इस रात्रि का । जीवन इस प्रकार की पाछा नकर आना है तो इस समार से विरक्ति हो जाती है । सभी निरर्थक हैं बेकार हैं निस्मार हैं । यह भाग दीड किमत लिए हैं ? बिम्बिए हैं ? क्या हैं ?

विचारा व मयन के उपरांत जनमत सही नियम से चुका था। पुष्पा ने दिनेश का बचाने के लिए अपना जीवनात्मक कर दिया। पुष्पा और दिनेश की कहानियाँ भी साथ ही चलने लगी। पनराम के हृदय में प्रतिशोध का भावना घघरने लगी। तिवारी का काय तो स्वतः बढ़ ही गया। श्यालाल मुकद्दमे के चक्कर में भाग लौट करने लगा। रामसिंह पर भारतीय कानून के अंतर्गत धारा ३०२ लागू हुई। "याला" चाहता था कि मुकद्दमे की जड़ कमजोर कर दी जाय और यह तभी सम्भव था जब कि पुलिस इसमें पूरी महायत्ना करे। श्यालाल अपने सरपंच काल में अपने निकटवर्ती गाँव में अच्छा प्रभाव जमा चुका था। पुलिस विभाग के बड़े बड़े अधिकारी उसके घर आया जाया करते थे। उसने कई अभियोगों में पुलिस की सहायता भी की थी। "यालाल" को पूरा विश्वास था कि महान् सकल में पुलिस की सठानुभूति इस मिलेगी।

पुलिस का सब इंसपेक्टर "यालाल" से परिचित था। वह इसी धाने में पहुँचे हैंड कामटेबल पर रह चुका था। इस परिचय का अब तक एक ही लाभ मिला कि कारागृह में खाना रामसिंह की रचि के अनुकूल पहुँचने

रगा । इन बातों का ज्ञान मुझे पहले घर जाना से ही हो गया था किंतु
इमोलाल ने रात को अपने वार्तालाप में इनकी पुष्टि कर दी ।

दूसरे दिन इमोलाल से फिर बात चीत हुई । प्रदन मेरा था क्या
पुलिस स्थिति को सुधारने का प्रयत्न कर रही है ?

इमोलाल ने कहा 'अंश' हम सम्बन्ध में पूरी कोशिश में हैं किंतु
पतराम हमारे विरोध में बुरा तरह से लगा हुआ है ।
आपने अपने प्रयत्न में कितना कर लिया है मैंने पूछा ।
'शायद का कोई आदमी समूह नहीं बन रहा । पतराम दिनेश को
तैयार कर रहा है । इमोलाल ने कहा ।

क्या पतराम की पार्टी भी तैयार नहीं है । मैंने पूछा ।
'इससे पतराम की पार्टी का क्या गुजस्तान हुआ ? इमोलाल
बोला, यह मामला तो पतराम का व्यक्तिगत बन गया ।
'पुलिस ने आपका क्या आश्वासन दिया ? मैंने पूछा । इमोलाल
ने कहा, यहाँ केवल एक ही प्रश्न है जो अड़ा हुआ है । पतराम पुलिस का
जोर दे रहा है कि वह गवाह स्वयं तैयार करे । वहाँ दिनेश की भी आवश्यकता
नहीं पड़ेगी । किंतु पुलिस गवाह तैयार क्यों करे ? यह सब कुछ
आर्थिक प्रलोभन पर निर्भर रहेगा । मैंने यह भी सुना है कि पतराम पाँच
हजार रुपये देने को तैयार है । सब इस सप्ताह के एजेंट ने मेरे से दस हजार
रुपये माये हैं । मेरी आत्मा भ्रष्टाचार के लिए साधी नहीं देती ।

मैं भी चिन्ता में पड़ गया । इमोलाल मेरी सम्मति की अपेक्षा
करने लगा । मैंने कुछ विचार करके कहा 'भ्रष्टाचार के युग में आप
इससे अलग रह कर जीवित बस रहेंगे ?' इमोलाल ने विश्वास पूर्वक

प्रेमलना

कहा मैं एम० एल० ए० साहब की मारफत जाऊँगा । वे मेरे निकट के आदमी हैं ।

दिनेशलाल ने मत की स्वीकार कर लिया । दमोदान हे भगवान्' कह कर उठ गया । इस हे भगवान् म एक अतृप्त धी जा समकी विवशता की छोनक थी ।

तारा की छुँछली छाया मे मैं दिनेश के यहाँ पहुँचा । दिनेश लाल ट्रेन के प्रकाश म सरकारी फाइल को टटोल रहा था । कुर्मी पर बैठने ही मने कहा, लाना पीना कर लिया है या बिना भोजन भजन कर रहे हो ? दिनेश फाइल के पन्ने स ध्यान हटा कर चाला भाजकल तो घर वाला की बड़ी गरज है ।'

ता बड़ी सेवा होती होगी ? मने पूछा ।

लाना मरी आ जाता है नीकर के साथ, दिनेश बोला ।

सब ता मुधा का भूल गण हो है न ? मैंने कहा ।

'भाज ता मुधा का पत्र आया है दिनेश बोला ।

'क्या लिखा है उसने ? मन पूछा ।

लीजिए, पत्र भी पढ़ लीजिए । आपसे क्या लिखाना है।

दिनेश न यह कह कर मुधा का पत्र आगे कर दिया ।

छुले लिफाफे स पत्र निकाल कर मैंने पन्ना मुरु किया । पत्र इस प्रकार था —

— --
दि० — ।

मेरे प्राणनाथ

परमेश्वर !

मैं जब से आप से विमुख हो गया हूँ मेरा जिन चहरे के चित्र
 रहता है। जिन भर उन्मत्त पड़ी रहती हूँ। न तो काम करने को दिन
 करता है और न पढ़ने लिखने को। रात्रि का आपके विरह में नभ के
 तारे गिनती रहती हूँ। अब सोचनी हूँ कि मैं आप से क्यों लड़ो ? किन्तु
 वह समय है ऐसा था कि आपका नाम भी मैं भी उल्लेखना भी वह गई।
 सामोप्य मैं जिनका आपका प्यार नाम था उनका ही अब बन गया है।
 पिताजी और माता जी मरने उपलब्ध हो करत है। मैं अनेकी यत्ना किता
 विकल हूँ इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि मेरे शरीर का
 भार पाँच पौण्ड कम हो गया है। शहर का चहल पहल मुझे खाने को
 बौद्धती है।' प्लाजा विण्टर मे सगम विरह आपका। सभी न इसकी
 तारीफ की। मुझे सहेलियों ने सान से जाने के लिए आग्रह भी किया
 किन्तु मैं नहीं गई। आज तक एक भी पत्र पत्र दफने नहीं गई।

मैं अपनी भूल का स्वीकार करती हूँ। आपको मधुप से चिड़
 है। मधुप मेरे लिए शत्रु का पात्र है। वह कवि एवं साहित्यकार है। वह
 मेरी कविता का गुरु है। उसने मेरा मार्गदर्शन किया और अब भी कर
 रहा है। आप उसने प्रति इस प्रकार के भाव न रख जिससे मैं नारीत्व
 पर किसी प्रकार की शका हो। नारी हमेशा अपने पति का ही होती है।
 भारतीय नारी का आत्म आपका सम्मुख है। आप मेरे पर किसी प्रकार
 से भी अविश्वास न करें। जब आप इस प्रसंग पर आते हैं, मेरी इच्छा
 होती है कि मैं आपका अपना हृदय खोल कर दिखा दूँ। आप उसमें
 आपकी ही तस्वीर पायेंगे। मेरे हृदयेश्वर, नारी अपने पति का परमेश्वर

तुम्हें मानती है। मेरे दिल में आप मेरे परमेश्वर हैं। किंतु साथ रहने से पारस्परिक भगड़े स्वाभाविक ही हैं। हरेक घर में ऐसी घटनाएँ होती ही हैं। मेरे पिता और माँ का भी इस प्रकार का झगड़ा रहता है। मेरे पिता कभी माँ की बातें नहीं निवाँलते। व दो तीन दिन तक कभी कभी नहीं बोलते। रोटी भी मैं ही पकाकर खिलाती हूँ। मैं जब कभी बाहर चली जाती हूँ लौटने पर मुझे हँसत हुए मिलते हैं।

पिछले दिन। इस शहर में एक घटना हो गई सब ने मैं और भी देखी होगी। एक मुहल्ले में दम्पती में झगड़ा हो गया। स्त्री ने रात को पति का गला काट दिया और स्वयं कुएँ में गिर गई। उनके कोई बच्चा नहीं था सुनने में इतना हुआ था कि अकेले में रहना करते थे। उनके घर में दिन रात बल्ब थी। रात को पति ने उसको धमकाया कि वह उसका रात को साईं नुई का गला काट देगा। पता नहीं औरत के दिमाग में क्या उन्माद उठा कि वह सोय हुए पति का गला काटकर स्वयं मौत के मुँह में चली गई। यह घटना सुनकर हृदय कापने लगा और आज तक मेरे हृदय को गान्ति नहीं मिली। इच्छा होती है कि उठकर आपके पास आ जाऊँ और गले में नमक रखूँ रोऊँ इतना रोऊँ कि आपका दिल पसीज जाये। मेरे सर्वेस्वर मेरे देवता, आप मुझे कैसे सगते हैं ? इस पर मैंने एक कविता भी लिखी है। मैं आपको सुनाना चाहती हूँ किंतु आप मेरे निकट होते हुए भी बहुत दूर हैं। यदि विद्रोह की वेग अधिक लम्बी हुई तो मुझे भी कालिदास की तरह मेषदूत लिखना होगा। मेरे दुःखत, मुझे गुरुत्व की तरह सताओ मत। मैं तो सीता की तरह बनवास में भी आपकी सेवा करना चाहती हूँ।

‘आपको एक गुप्ताखबरी और सुना हूँ । मुझे तिखते हुए गम आती है । अब आपने घर में भूना खरीना होगा । फिर हमारे तिन और भी आनन्द से गुजरेंगे । आप जब दरबार से लौटेंगे, मुना आपका जी को बहालेगा । किंतु जब मैं आना पकाऊँगी तब आपको उस लना होगा । बस, आठ महीने की देरी है । मैं आता मैं निर्माण काय करना चाहती हूँ ।

मेरी इच्छा यही है कि आप आ जाय । मैं पिताजी और मौसी जी को कुछ भी नहीं कहता है । मैंने तो यही बहाना बनाया है कि उनको फुसलनी थी । मेरा आना आवश्यक था । पिताजी भी आपने आने की प्रतीक्षा में है ।

आप मुझे पत्र अवश्य लिखें कि आप कब तक पधार रहे हैं । अभी ‘सगम चल रहा है । मेरी हार्थिक कामना है कि हम दोनों साथ साथ सगम देखें ।

पत्र की प्रतीक्षा ॥

आपकी ही—

सुधा ।

मैं पत्र को आधीपात पढ़ गया । सुधा के सम्बन्ध में अनेक विचार लाने से पूर्व दिनेश का बधाई का जीर उसमें अनुरोध किया कि वह तुरन्त जाकर ले आए । दिनेश ने कहा मैं उसकी लान के पक्ष में नहीं हूँ ।

दिनेश जिद्द नहीं किया करते हैं । मैंने कहा ।

दिनेश बोला, ‘तुम क्या जाना स्त्री की बात । तुम तो अभी

कुँवारे हो ।’

मैंने कहा, ‘स्त्री कोई दुनिया से निराली है ।’

दिनेश ने कहा, ‘स्त्री के सम्बन्ध में सुधा ने अपने पत्र में लिख दिया है कि वह अपने पति का मार कर कुएँ में गिर गई । इससे बढ़िया सघूत आपको और सुधा को क्या मिलेगा ?’

पाचो अगुलिया तो बराबर नहीं होती । मैंने कहा, यदि ससार की सारी स्त्रियाँ ही ऐसी होती तो ससार कैसे बसता ?’ दिनेश ने कहा, ‘राजा भोज चौदह विद्याओं का पारंगत होने पर भी त्रिया चरित्र को नहीं समझ सकता था ।

मैंने कहा ‘अरे यार हम चापची सली में कसे चौथी सदी की बात कर रहे हो ?’

दिनेश ने तब जोर देकर कहा भाई मेरे समाज बदल जाता है, राज बदल जाता है किन्तु मनुष्य की प्रकृति सभी युगों में समान होती है । आज बीसवीं सदी की स्त्री तो अधिक बेचोड़ा हो गई । यह तो मर्दान का युग है । स्त्री का मर्दान के बज पूछें इतने उलझ गए हैं कि समझ में नहीं आता ।

तुम तो बहानी हो यार मैंने कहा ।

बहम नहीं है यह सही है । दिनेश बोला ‘उपना कर लो तो दूसरी बात है ।

मैंने कहा, ‘हम इतना गहनना म जायें तो जीवन दुष्कर हो जायगा । आज नारियाँ आत्मी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं । किसी क्षेत्र में चले जाइये, आपको तिसित महिन्याँ आत्मी के

माग नाम करना मिले तो । क्या ये सभी युग है ?

उहाँ सुर ही का सम्भावना है । निग साया ही आग
गुराई की परिभाषा ही बना ता घर की कहता मित्र मनेगा किन्तु
गुराई नहीं मित्र सजना ।

मेरा कहा माग वचन तारी का ही गार ना हो किन्तु पुष्प
की नजिबता स्त्री की निजता का गुणा जितनी निम्न स्तर की है, जरा
विचार ता करें ।'

यह मैं मानता हूँ । निग न कहा, किन्तु स्त्री का प्रजनन
का दायित्व है । वह मा बनने का अधिकार रखती है । मा ससार की
सर्वोपरि सत्ता है । वह बिहूँ हा गई तो समाज बिहूँ हो जायगा और
वही इस ससार का सधनाग का माग बनेगा ।

निग के ग ना म बस था । मैं उसको अस्वीकार नहीं कर
सकता था । मुझे दूगरे विषय पर आना पड़ा ।

मैंने कहा 'क्या पुष्पा ने तुम्हारे लिए अपना उत्सव नहीं
किया ?

दिन का मस्तक नन हो गया जब कि उस महान् दबी के
बलिदान का भार बहन करने में असमर्थ हो । निग के आला में पानी
चमकने लगा । वह बोला ससार में गीरी फरहाद सला मजदूर हार-
राभा की कहानियाँ प्रचलित हैं । इनमें नायिकाओं का बलिदान किसी भी
स्थिति में पुष्पा से अधिक नहीं ठहरना । दीपक जलता है इसलिए पतंग
जलता है किन्तु इस कहानी में दीपक बुझा हुआ था और पतंग जल कर
मर गया । मैं नहीं समझ रहा था कि पुष्पा मुझे प्रेम करती थी । वह

पागल थी शारीरिक दृष्टि से नहीं किन्तु मानसिक दृष्टि से । मने उसको नहीं समझा । किसी ने नहीं समझा । अब दुनिया समझ गई । मैं कुछ नहीं दे सका और न दे सकूँगा ।' यह कह कर दिनेश ने एक लम्बी सांस ली ।

मने पूछा 'क्या तुम्हारे पिता इस मुकदमे में तुम्हें भी घसीट रहे हैं ?

'प्रयत्न तो यही हो रहा है किन्तु मैं इस पाप का भागी नहीं बन सकता । दिनेश बोला ।

सत्य को सत्य कहना पाप है । मने मन की बात जानने की नियत से पूछा ।

दिनेश ने हट पूर्वक कहा सत्य से किसी का अनय होता होता हो वह सत्य किस काम का ।

'क्या राममिह ने गाली नहीं चलाई ? मैंने पूछा ।

गोली राममिह ने चलाई । दिनेश का उत्तर था ।

'क्या राममिह की नियत आप पर गोली चलाने की नहीं थी ।'

मेरा प्रश्न कानूनी दृष्टिकोण का था ।

'नियत निश्चित रूप से मेरे ऊपर थी । दिनेश बोला यह मेरे कुकर्मों का परिणाम नहीं मेरे बाप के कुकर्मों का फल था । गोली दिनेश पर नहीं पतराम के बड़े पर चल रही थी । जब समाज 'याद नहीं करेगा, तब मनुष्य स्वयं कानून की हाथ में ले जाता है । इसमें राममिह और उसके परिवार का दाप नहीं मेरा दाप मेरे बाप का है । उसमें प्रतिगाध की भाग है ।

‘क्या आपका पिता ने हम सम्बन्ध में कुछ कहा है ?’ मन
विरपूछा ।

‘कहा कुछ नहीं है कहने की नियत है ।’ शिगे का उत्तर था ।
दिनेश को फाइला में उलझा कर मैं घर चला गया ।

दो दिन के बाद की बात है —

इपोलास अपने मुझमें हुए चहरे के साथ घर आया । शीमाग्य
मनुष्य की समस्त दमक है तो दुर्भाग्य उसका विगरीत रूप । इपोलास का
दुर्भाग्य उसका चेहरे पर विभ्रम रेखाएँ ही नहीं किन्तु पूर्ण चित्र बना चुका
था । बनी हुई लाठी, पुती हुई कागिमा, सूखे हुए हाठ गाना में पड़े हुए
गड्ढे । पूर्णिमा के बाद पर ग्रहण लगा हुआ था । जिस चेहरे का
व्यस्तता में भी मैंने फूल के समान स्निग्धता हुआ देखा वुरे दिना में उसका
कितना कुरूप बना दिया था । हृदय में दुर्दिनो की वल्लि का केवल धुँआ
था । उसका चेहरे पर उस आग के प्रज्वलित रूप का पता तो बचन
इपोलास का ही था आर किसी को नहीं । अति निकट के साधिया की
महानुभूति तो शीतलता का काम अवश्य करता है किन्तु बाष्प में हसन
वाला की सख्या इतनी अधिक होती है कि उस आग में मिश्रित हुए घाँ पर
शीतलता का प्रभाव नहीं पड़ता ।

बैठते हुए इपोलास ने अपनी माँ से कहा ‘माँ शरीर टूट सा
रहा है । पर अब प्राण विहीन हो गये हैं । तिल का अब दम निकल
रहा है ।’

पास में बठी हुई माँ का हृदय आसुआ में उमर आया । इपोलास
ने भी अपने आसू पूछे । दोना का हृदय शीतल होन के बाद ही वाली

प्रेमलता

का रूप ले सका। मा ने कहा 'बेटा, दूध पीसे। तुरे दिल किसी से पूछ कर नहीं आते। घबराना नहीं चाहिए। तू ज्यादा हो। दाढ़म बधाने वाली मा ओर जा स रोने लगी, पुण्या कहा गई ? मेरी बेटी, मेरी आत्मा की ओर, लाटली तेरी मा की अरेली छोट कहा गई ?'

इयोलाल के आसू सूख चुके थे। वह माजी को दाढ़म बधाने लगा, 'मा, तू कह रही थी न घबराना नहीं चाहिए। तू खुद रो रही है। दिल के दह का उफान निचलने पर माजी फिर शांत हो गई। उसने 'योलाल को दूध पिलाया। धीरे धीरे माजी त पूछा, 'रामसिंह का क्या हाल है ?'

'ठीक ही है मा। इयोलाल बोला।

माजी कानूनी बारीकियों को क्या समझे ? इसलिए इयोलाल ने इतना ही कहा 'सब ठीक हो जायेगा।'

माजी बाली, 'मरा चाहे सारा घर फूट जाये मरा रामसिंह छूट जाये।'

इयोलाल से दापहर में बार्ने हुई। इयोलाल ने बताया, 'म और एम० एल० ए० साहब दोनों यानेदार के पास गए। एम० एल० ए० साहब यानेदार साहब से अलग होकर मिले। एम० एल० ए० साहब ने मुझे बताया कि बात अधिक मतोपप्रद नहीं रही। ताभी मैंने पूछा।

इयोलाल ने कहा 'एम० एल० ए० साहब ने बताया कि पतराम की ओर में मंत्रियों तक की सिफारिशें गई हैं कि मुकद्दमा दबना नहीं चाहिए। वह पैसे भी दे रहा है। मैंने आखिर कोई तराका पूछा। तब एम० एल० ए० ने समझाया कि विष्णु भगवान् भी लक्ष्मी के भागे भुक्ते

‘पमा के बल पर सऊडो दिनेश तयार हो सकते है ।’ द्योलाल बोना, आज तक वोटों की होड़ थी भब नोटों की होड़ होगी ।’
द्योलाल दृष्ट हृदय से बाहर चला गया ।

पतराम ने रात्रि को दस बजे अपने दल के साथ गुप्त मन्त्रणा की । इस आयोजन में खाने और पीने का कायनम था । पतराम ने विशेष रूप से 'कशर कस्तूरी' की तीन थोतला की व्यवस्था की । मासाहारिया के लिए दो मुर्गे थे और दोष व्यक्तियों के लिए शाक सब्जी के साथ मिष्ठान भी था । इस विशेष कायनम का अर्थ उसके दल के लोग पहले ही लगा चुके थे । पतराम की भी पूर्व आभास हो गया था कि उसके साथी उसकी योजना में साथ नहीं दे रहे थे इसलिए उनको भुक्ताने के लिए मुरा से उत्तम कोई आयोजन सम्भव नहीं था । मुग से साहम बढ़ता है और सस्कार घटता है । यदि सस्कार ने कही दल में निश्चलता लादा होगी तो मुरा उनको निरस्त करने के लिए उत्तम साधन था । समय पर सभी लोग आ गए । मदिरा पान ने कुछ ही क्षणा में अपना प्रभाव जतला दिया । पतराम ने उचित अवसर देखकर अपनी बात छेनी । पतराम ने कहा शोलाल के साथ खूब हुई ।

हा ठीक हुआ वच्चू के साथ बहन भी गई और भाई कदम

गया ।' एक ने कहा ।

'भन्नी साहब खूब तिवारी बनी ।' दूसरा बोला । तीसरे ने कहा, 'उसको अपने कर्मों का फल मिल गया ।'

पतराम ने या तो जान बूझ कर कम पाया उसको अपनी चिंता से नशे का असर कम हुआ किन्तु वह होश में बात कर रहा था । उसने कहा, किन्तु मुकद्मा चल नहीं पकड़ रहा ।'

मदिरा का घूँट लेते हुए उसके एक साथी ने कहा, क्यों ? उसने खूब किया है । उसको कद होगी ही ।

पतराम बोला बँद कैसे होगी ? पुलिस को अब तक सबूत नहीं मिला ।

उसके दूसरे साथी ने कहा 'भबूत की क्या कमी है ?' उसने भरे गुवाड में गोली मारी है ।

पतराम ने जज की तरह प्रश्न किया, 'किसने देखा ?' उसी साथी ने कहा, 'सबने देखा ।'

इस समय तक एक बोतल समाप्त हो चुकी थी । पतराम ने दूसरी बोतल खली । बोतल खलते हुए पतराम ने कहा—

नशा नहीं आ रहा है । ठेकेदार की बेईमानी मालूम होती है ।' 'नशा तो ठीक दे रही है ।' गायद आपकी नशा नहीं आया होगा । उसके एक साथी की राय थी ।

'धर ! यह धीर खोला ।' पतराम ने कहा ।

पतराम ने पहली घूँट ली और गिनाम का यह कहते हुए आगे किया, यह तो ठीक मानूम होती है ।'

धीरे धीरे दूर हो गया ।

धूमिल घामते वही विषय फिर आ गया । पतराम ने अपने साथियों को समझाया कि हमारे दल को रामसिंह के विरुद्ध अब तक सबूत नहीं मिल रहा और बिना सबूत के भुक्कूमा बिगड़ रहा है ।

पतराम ने इस सीधे प्रश्न को कोई उत्तर नहीं मिला । अंत में उड़ी में से एक साथी ने सुझाव दिया, सबूत तो दिनश है ही । आपको चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है ।

सभी का ध्यान दिनेश की ओर गया किन्तु पतराम इस वाक्य से सन्तुष्ट नहीं था । उसका ध्यान यह भ्रम नहीं था कि दिनेश उसके ध्यान का उत्तर देकर सकता था किन्तु उसका इतना ही विश्वास नहीं था कि उसके बयान में कहीं झलझलता आ सकती थी । इसको अपने मुँह से प्रकट करना भी नहीं चाहता था । उसने फिर कहा, यह तो है ही, किन्तु आप में से कोई तैयार हो तो डीक रहे ।

उसके सभी साथियों ने मौन धारण कर लिया । पतराम के गपनों पर सुनारोपान होने लगा ।

पतराम का पारा गरम होने लगा था किन्तु बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ की भाँति उसने अपने आपका सम्भाल लिया और अपने स्वर का स्वाभाविक बलान हट्ट बहने लगा, आपका भ्रम साफ़ निया है । अब आप मुझे साथ दें ।

इस प्रश्न का काँजीमरी बान्धू सामने आ गई । पतराम का दम झूमने लगा । एक ने माफ़ माफ़ कह दिया 'आपने हमारा साथ दिया । अब हम आपका साथ लेते सक्ती क्यों ?'

हमारे न इस वाक्य को पूरा किया 'आप अब क्या चाहते हैं ?'
 द्योलाल न अपनी बहन भेंट कर दी और भाई जेल में

वाक्य पूरा नहीं था किन्तु अब स्पष्ट था । पतराम का दिमाग
 हिल गया । उसने बीच ही में खाना सान का आदेश दे दिया । पतराम को
 खाने के बीच में प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं थी । पतराम के प्रश्नों
 का उत्तर हर स्तर में अलग अलग भाषा में गुँजने लगा जिसका एक ही
 अर्थ था, पतराम, नू फालतू द्योलाल के पीछे लगा है । 'द्योलाल लुट
 चुका है । यही हम चाहते थे । अब वह सटानुभूति का पात्र है । अब उसका
 पीछा करना बेकार है ।'

खाना समाप्त होने तक एक वाक्य और सामने आ गया 'तुम्हें
 झुल्ल करना है तो अपने बलबूते पर कर । तेरे पास पसा भा है और तेरे
 पास सबूत भी । अगिम् वाक्या का सारांश इस प्रकार था थूडे बडरो की
 परम्परा समाप्त होने जा रही है । हमारा द्योलाल में कोई बर नहीं था ।
 यह परम्परा जायम रहेगी । गाँव की उगाउना ठीक रही है ।

पतराम शायद यह कहना चाहता हो कि तुम सब मेरे यहाँ में
 निकल जाओ किन्तु कह नहीं सका । उसका दिमाग घूमने लगा । उनसे घन
 जाने के बाद वह ठाक स्थिति में नहीं आया । उसने पसल पर गिरने हुए
 हताश स्वर में क्या जिनैंग बेग अब तेरे सिवाय कोई नहीं है ।

पिता की इस झूठी पकड़ पर दिनेश मौन रहा । पिता पुत्र के
 इस मौन की सम्मति अगण मान कर सा गया ।

उपरास विवरण मुझे दिना से मिला । मैं इस विषय पर मयन
 नहीं कर पाया था । इसमें पूछ ही दिना ने अगहार्द लेन हुए कहा 'यार

रात ५। हप्ता बड़ा अच्छा आया ।'

'स्वप्न गुप्ता का या या पुष्पा का ?' मैंने पूछा ।

मार गाता गुप्ता को ' निनग न कहा ।

'गुप्ता के प्रति तुम्हारे इस प्रकार के विचार सोभनाय नहा है ।'

मैंने कहा ।

'मैं उसको छोड़ चुका हूँ, प्रकाश । निनग बोला ।

'छाह पुन हा ? एह उच्छ्वास के साथ मैंने कहा ।

'हाँ हाँ, छोड़ चुका हूँ,' निनग बोला, इसमें आगकी साय नहीं होना चाहिए । मेरे घर में उसने लिए जगह नहीं है । मेरे लिए चाह वह बही जाये ।

'यह हठधर्मी अच्छी नहीं है । मेरा मत था ।

'यह हठधर्मी नहा मेरा सही नियम है ।' दिनेश बोला ।

'यह नियम लेने से पहले तुम्हें फिर सोचना होगा । मैंने अपना मत दिया ।

दिनेश ने कहा मैं खूब सोच चुका हूँ । यह सोचकर ही नियम लिखा है । नारी वह खिनीना नहीं है कि उससे दूरे रख लेने की कोशिश करे । नारी पर पुरुष का एकाधिपत्य ही समाज की मर्यादा है । इन रूपायों मान्यताओं का नवीनीकरण करना मानव होगा ।

मैंने कहा, इन बदलती परिस्थितियों में नियमों की उदारता आवश्यक होगी, दिनेश । खैर ! छोड़ो इन बातों का । अभी बचपन है । इस आयु की ये विज्ञापतायें हैं । समय आने पर सब ठीक हो जायेगा । मुझे वह स्वप्न सुनाओ ।

दिनेश के बम्मीर और उदास चेहरे से फिर हास की चमक आई।
उसने मल्लिका का कालिमा को उड़ाने का प्रयास करते हुए कहा हा, तो
मैं सुबह देर तक सोता रहा। मैंने स्वप्न देखा। स्वप्न क्या था एक स्वर्ग
लोक का दृश्य था। रात्रि की चादनी की छटा चारा घोर फैल रही थी।
गुलाब बनेर जुही, मोतिया न माधूम कितने फूल खिल रहे थे चारा
घोर। मैं था घोर थी पुष्पा। उसी रूप में जिस रूप में मरा उससे मिलन
हुमा करता था। भाला भाला चेहरा, गुलाबी लालिमा हँसती भाव,
मुस्कराने होठ और चमकते दात।

‘क्या भिन्न खींचा है तुम्हें कवि का-मा।’ मैंने कहा। हा हाँ
सुनो तो हाँ मैं कह रहा था। वह बैठी थी एक सॉन पर और चारों घोर
फूल खिल रहे थे। मुझे यह आभास हो नहीं हुआ कि पुष्पा मर चुकी है।
मैंने उस देखा। उसने आवाज दी ‘मिनेश।’ मैं निकट चला गया और
उसके पास बैठ गया। वह बोली वहाँ थ तुम इतने दिन ?

मैंने कहा तुम्हें डूँड रहा था।

भव तो मिल गई न। वह बोली।

अपने गोल उरोजो को जिन पर मेरा प्राय ध्यान जाता था और
केवल उन्हीं पर मेरा स्वत्व था आबन से आवृत करती हुई वह वाली,
आपके बिना मेरा दिग नहीं लगता।

शुभ तो विवाहित हो। मरा अधिकार नहीं है तुम्हें पुन का।
मैंने कहा।

वह बोली, ‘समाज ने मुझे विवाह का नक्की बाना पहनाया था।
मैं विवाहित नहीं हूँ। जिनसे मरा विवाह हुआ व मेर पनि नहीं थे। वे तो

पिता तुम थे । मैंने उनकी सपना पति माना ही नहीं और न उन्होंने मुझे पानी का रूप दिया । उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली थी । वे मुझे अपनी बेटी की भाँति ही मानते रहे और मानते रहते । उन्होंने मुझे बचपन से ही मेरी भाँति गोद में बिठलाया था और उनकी गाद बटा की गाँठ पतनी की नहीं ।

मैं इसकी वस स्वीकार करूँ ?' मैं बोली ।

'भाप अपनी वस्तुधा का सम्मान कर देत लीजिए' वह बोली और अपने भाँवस का सावरण दूर कर दिया ।

मैंने उसके उराओ को स्पष्ट कर लिया । उनकी कठोरता यथावत थी ।

उसने अपनी शरीर को मेरी गाद में डाल दिया और मेरी सीढ़ी से चिपक कर आँखें पूछने लगी । मैं उसके गुलाबी कपासों पर हाथ फेरने लगी । वह आँखें पूछते हुए बोली 'दिलेश भाज मैं स्वतन्त्र हूँ, समाज के बंधनों से मुक्त हूँ । तुम भी भाग भागो ।' मैंने अपने हाथों से उसके शरीरों को धुमने के लिए भागे बढ़ाये और आँखें खुल गई ।

जिनेंग ने एक लम्बी सास गीची जोर सिगरेट की आखरी कण्ठ से निकालते हुए कहा, 'अकाश, दुनियाँ में प्रेम ही सबकुछ है । प्रेम नहीं तो समाज ही बेकार है । प्रेम ही विवाह तो झूठा दोग है । सुधा मेरे लिए प्रेम नहीं है । यह तो विवाह में लपेटा हुआ एक परेव है जिसका अतिक्रमण की दुहाई देकर समाज बनाये रखना चाहता है । समाज अपनी दुबलता पर पर्दा डालने के लिए अपने जालों का फनाव करता है । मैं सुधा को दोषी नहीं ठहराता ।'

मैंने कहा, 'दुबलता किससे नहीं ? हम क्या दुबल नहीं हैं । मनुष्य न दानव है न देव । वह तो सबल और दुबल के बीच का जोव है । ईश्वर तो सवगुण सम्पन्न की कल्पना है जिस तक पहुँचने या प्राप्त करने की बात की हम धम कहते हैं । समाज के नियम मनुष्य के दानव रूप का मोड़ कर उसे मानव से ऊपर ईश्वर तक पहुँचने की बात करते हैं । मनुष्य की पगुता अराजकता पैदा कर सकती है यदि उसे पूरा मुक्त कर दिया जाय । मनुष्य वास्तव में पगु है किंतु उसका पगुरव बचा हुआ है समाज के नियमों से । उसे उच्छ खल नहीं होने दिया जाय । पुण्या मुम्हारी थी । मुम्हें मिलनी चाहिए थी । मुम्हें नहीं मिल सकी । यहाँ मैं समाज के नियमों का समर्थक नहीं हूँ । किन्तु यह वह नहीं है फिर सुधा की उपेक्षा ठीक नहीं है ।'

दिनेश सम्भवतः कुछ और बोलता किंतु उसी समय डाक से एक पत्र आ गया । दिनेश ने लिफाफा खोला और यह कह कर कि यह पत्र सुधा का है मेरे हाथ में दे दिया ।

मैंने कहा 'पत्र आपके नाम से है, पढ़ लीजिए ।'

दिनेश ने कहा, एक ही बात है, कोई विशेष बात नहीं । आप पढ़िए, मैं सुनूँगा ।

मैंने पूछा, 'आपने पत्र लिखा था क्या ?'

'नहीं तो दिनेश बोला ।

'खर लाइये, मैं पढ़ देता हूँ ।' मैंने कहा और पाच पृष्ठा स रंग पत्र हाथ में लेकर पढ़ने लगा ।

पत्र इस प्रकार था -

प्रत्यक्ष रूप में अनुभव कर चुकी हूँ। मैं आत्म समर्पण करती हूँ। आप मुझे अंगीकार करें। नर के सबल हाथों में ही नारी का सौम्य सुराजि रह सकता है। बाह्य भ्रमवातों का सामना करने का सामर्थ्य पुरुष में ही है। नारी तो केवल घर की रानी है और घर में ही सुशाश्वत होती है। मेरे मन के राजा मैं अपना घर छाड़ आई थी। मुझे अपना घर प्रदान करें। मैं अब आपकी रानी बनूँगी।

एक घटना अभी अभी हुई है। मैं आपको सुना दूँ। सड़क के पास ऐसा घटना घटित हो रही है। एक रईस की लड़की अपने बाबा मास्टर के साथ भाग गई। रईस ने पुलिस में सूचना दी। पांच सात स्टेगनों के साथ एक स्टेगन पर दोनों सला मजदूर गिरफ्तार हो गए। सला तो घर के घर भा गई किन्तु मजदूर की पुलिस ने बड़ी दुर्गति की। ऐसी घटनाएँ नारी जीवन के लिए असमान जनक हैं। मैं इसकी क्षणिक भावुकता मात्र मानती हूँ।

अभी अभी मेरे पिताजी ने कहा है कि आप गोप्य हो जा जायें और मुझे से जायें। पिताजी स्वयं पत्र लिख रहे थे किन्तु मैंने ही उनका स्थान पर पत्र लिख दिया है। आगा है आप साधन ही पधारने का कष्ट करेंगे। आने से पूर्व पत्र से सुविज्ञ करें।

म आगा करती हूँ कि आने से मुझे क्षमा कर दिया होगा।

अद्वैतगती आगती,

मुधा।

मुधा का पत्र लिखे का भावो में डाकघर में कहा, 'लीटिंग, मुधा के लिखी पत्र, अद्वैत मुधा को सम्मानित। उस बैकरो का स

आइये । चलो मैं आपके सामान को बाध देता हूँ । आज गाम को चले जाओ ।'

'आप त्रिया चरित्र को नहीं समझते, प्रकाश बाबू यह पति को मार कर सती हो जाती है । दिनेश ने कहा ।

मैंने कहा आपन ता लोक-अर्थार्थ सुन रखी है । मध्यकाल में समाज का कुछ ऐसा ही खातावरण बन गया था कि स्त्री केवल मनुष्य के ऐश्वर्य की साधन थी । आज की नारी जागरूक है । वह मनुष्य से समान अधिकार की बात करती है । वह अपने कर्तव्यों से भी विमुक्त नहीं है । भोलेपन की झूठी की आपको उधे ग करनी होगी ।'

दिनेश ने फिर कहा आपने अभी सुधा का पत्र पढ़ा है । वह लिख रही है कि एक रहस्य की लड़की एक बाजामास्टर के साथ भाग गई । यह क्या है ?'

मैंने कहा हा हा मैं भी तो यही कह रहा था कि यह आयु का ही प्रभाव है कि जीवन के प्रारम्भिक काल युवक तथा युवती के लिए सबसे खतरनाक होते हैं । कुछ मन चले युवक अपना उत्तरदायित्व नहीं समझते । मा बाप ऐसे दुरजिम्मेदार अकितियों की अपनी युवा पुत्रियों को शिक्षा के प्रलोभन में सोंप देते हैं । नारी कीमल वस्तु की सुकुमार कृति है । वह संगीत और काव्य के प्रवाह में बह जाता है । काम की प्रवृत्ति की छत्रपति बना उनको पतन के गड्ढे में डाल देती है । मैं इसमें नारी की कतई भूल नहीं मानता ।

पतन पतन ही होगा है दिनेश ने कहा, 'इसका संगोधन नहीं नहीं होता । यह मरी मायता है ।

मैं अनुभव कर रहा था कि दिनेश के हृदय में कोई गहरी अनुभूति
 छोट कर चुकी थी। वह मुघा को विकार ग्रस्त मानता था। मैं यह भी
 अनुभव कर रहा था कि मुघा दिनेश के माप-जुज के अनुसार दोष से मुक्त
 नहीं हो सकते थे। मनुष्य से उसका गौरीरिक्त सम्बन्ध भी था। दिनेश का
 इसका पूर्ण भेद नहीं होना चाहिए था। वंश अनुमान मात्र से उसकी
 सगण्य था और उसको विद्वत् मान कर मुघा को फेंकने का नियम कर
 चुका था।

धर्माटाराम जीवन को घसीट रहा है। रूपासिंह रूपाधिहीन होने हुए भी दिन भर अपना कुछे दायण में देखता है और सूखे हुए अनार के स छबड़ाबड़ा तैले को देखकर स्वयं ही लज्जित हो जाता है। भागवती लूची गिबडी खाकर रात को दूटी खाट पर सोकर रात बिता देती है। गुरसिंह काल्पनिक भून की छाया से डरता है और रात को बाहर निकलने का ही साहस नहीं करता। रामनारायण राम के नाम में रत है। रात राम दिन भर कमाता है, रात को अनाज उधार लाता है। तब उसकी औरत अपनी घिसी पिटी चक्की से आटा पीस कर राटी बनाती है और ग्राह के स्थान पर पानी से ही रोटा निकल कर सो जाती है। फूलाग्राम अपनी चिलम में ही जीवन की मुक्ति मानता है। उमाराग एक पोवा घराब का पी लेता है। मागने वाले आते हैं तो लो चार गालियाँ सुना देता है। खेताराम खेती में ही मस्त है किन्तु सैठ भगवानाराम हर साल अनाज उसक खलिहान से ही उठा ले जाता है। वूत बड़ेरे हुक्क की 'गुडगुल' में ही मस्त है और आप्त अतीत की स्मृति पर शिदा है। लोकनेता युग के परिवर्तन की बात बताने हैं किन्तु परिवर्तन घर का ही नहीं होता। भविष्य की लम्बा लम्बी कल्पनाओं को लेकर बोट माग रहे हैं किन्तु पास घर का छोकरे

ही नही होत । भूखे देग के भूखे नेता न देस की ही भूख मिटा सकत है ।
 अपनी ही । पांच साल का एकत्रित धन फिर चुनाव के जुलूस में लगा देने ।
 और फिर फकीर के फकीर । जनता की गारियों और दुश्मना की गोलियों
 से घिरे हुए एक झूठी मुस्कान के साथ चरत हृदय से इधर उधर उल्टाट
 करते नजर आते हैं । मंत्री लोग जोड़ साउं में मगे हैं उनका अपनी पिक
 से ही फुसत नहीं । एकस ई गन के बाव ने अपना मजान बना लिया है
 और सेठ गुगनचंद ने अपनी हवली पन्वारी फूजचंद ने अपनी औरत क
 नये गहने बना लिए । गहरा में नवनिर्माण के धुलें उठ रहे हैं । गावों में
 विकास का दलदल हा गया है । इस उपयाम का पात्र इलाहाबाद चाहे
 दुनिया की नजर में भरा पूरा होगा किंतु अंदर से खोखला था । कहते
 हैं कि सम्भवत छप्पन के चार अकाल में सारे गांव की अनाज इस घर से
 मिला था । उस समय इलाहाबाद के बाप हरीराम के कोठे बाजरी से भरे
 हुए थे । खेत में घास फूस के ऊंचे छीवर लगे हुए थे । यह धन कई गुना
 होकर बहियों में पड़ा रह गया क्योंकि इलाहाबाद बोट के बाल नाव छोड़ता
 गया । इलाहाबाद ने अपने निजी पैसाला के पास चरकर बाटे कि तु
 लाला के पास पता नहीं था । पैसे वाले पैसे में चुक ये । उनकी बर्निया में
 केवल देनदारों के अगूठे लगे हुए थे । गत चार पांच सालों से सरकार
 जमीन की नीतामी कर रही थी । गांव वालों ने जमीन सरौं ली । उसके
 बाल सरकार पसा ले गई । अब पसा कहा था । पैसा था लेकिन जमीन
 के बर्न में । निराग इलाहाबाद माजा से सलाह मसौदा करने लगा । माजी
 न पूछा

'चेरा कहा कहाँ घूम आया ?'

‘सब जगद मच मार धाया, मा श्योलाल बोला ।

‘सठ मनीराम के पास गए थे ?’ माजी बोली ।

गाव क सारे चौघगिया धीर सठो के पास हा आमा । श्योलाल बोला ।

‘पसे कब चाहिए ?’ माजी न पूछा ।

‘भाज चाहिए दाम को, श्योलाल ने कहा, ‘शाम को चार बज का समय एम० एस० ए० साहस न दिया है । हम होना जायेगे, पूरे दस हजार रुपये लेकर । तब मुकद्दमा कुछ अपने हक में होगा ।’

माजी हतप्रभ हो गई । दस हजार रुपये किनने होते हैं ? एक आदमी बठा दत्ता खाए नौ दस साल तक उसकी काम करने की जरूरत नहीं । यदि दस हजार ब्याज पर दे दिए जायें तो उच्च भर उस खेत जाने की आवश्यकता नहीं । फिर माजी को अपने बेटे की याद आ गई । माजी न कहा, ‘बेटा, दस हजार देने हागे ?’

हां, मां, दस हजार, पूरे दस हजार । श्योलाल ने कहा ।

माजी ने बेटे की कीमत दस हजार से भी ऊपर थी । पुष्पा का दद बेटे के दद के नीचे दद चुका था । बेटे की याद ने उसे यह कहलवा दिया कि तने ही हजार नग जायें बेटा छूट जाना चाहिए । लेकिन तू ता कह रहा था कि धानेदार भरा दास्त है ।’

‘दोस्ती का जमाना चला गया, मा । भाज दोस्ती पसा का है ।’ श्योलाल ने कहा ।

अच्छा बेटा कोई नहीं पसे ता हाथ का मत है । आदमी के लिए पसा है । पसे के लिए आदमी नहीं । माजी ने कहा ।

किंतु मैं भाग्य का सिद्धांत दूंगरा है। आत्मा पैस के पाछे भागता है।' दयोलाल बोला।

माँजी बोली 'तभी तो पैसा, आत्मा बड़ा नहीं है। पैसा बड़ा है। पहले धादमी बड़ा था। आत्मा का जमान की कीमत थी। धादमी का अपनी कीमत था। भाग्य आत्मा बड़ा नहीं है। इसीलिए धादमी ने धादमीपन की कीमत नहीं। अब इमानियन नहीं है। इमानियन पैसे का पाछे बिकती है। लेकिन यह धरती है। धरती धम पर टिकती है। धमो धरती पर धम है। तभी तो धरती छोटी है। अभी इमानियन है दुनियाँ में। बिल्कुल गई नहीं वेदा। तू धारण रख।

धीरज की भी हँस है माँ' दयोलाल ने कहा।

'नही पैसा माँजी बाली, 'इंसान बड़ा है। बहुत बड़ा है। इसकी इमानियन भी बड़ी है। सब दिन एक स नहीं होते। यह सफट है। धादमी को सब कुछ फेकना पड़ता है। मुग्य दुग्य का तो जाडा है। दुग्य तो बरसान न पहुँचे ही सपत है। इसमें धराराना नहीं है। सब ठीक हो जायेगा। अपने जमीन पड़ी है। यह कब काम आयेगा? धर धेव दा। मैंने पूछा है। मनमुग्य जमीन स रता है। पस उसक पास है। तुम जाओ और बात कर भाभा।'।

दयोलाल ने अपनी बीस बीघा जमीन बागह हज़ार में बेच दा। मोटा आठ हज़ार में तय हो गया। एम० ए०० १०० साहब साप थे। भागा का कहना था कि एम० १०० १०० साहब पैसा पूरा नहीं पहुँचाते। इस प्रकार दयोलाल ने अपने मित्रों का सहायता स तनय काय कर पाया कि अब धानेश्वर पतराम ने कन्न से रामसिंह के विरुद्ध गवाह तैयार

नहीं करेगा। धानेश्वर ने अपनी दोस्ती के बदले में द्योलाल से एक बानूनी मुक्ता घोर तैयार किया कि वह मौका घर के बाहर का न बना कर घर के अंदर का दिखा देगा। एम० एस० ए० साहब से इस काय में जो सहायता मिली उसकी वृत्तज्ञता प्रकट करके द्योलाल रात को घपने घर धा गया। माजी का सारी बातें बनसा कर यह भी बनला दिया कि रामसिंह को अब किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। धानेश्वर ने सब कुछ अपने जिम्मे ले लिया था। अब द्योलाल के पास चार हजार रुपये दोष के जिनका वह मुद्दमे के दोष काय में खर्च के लिए पयाज था।

किन्तु एक घटना और घटित हो गई —

दूसरे दिन माजी ने धानि से भस का दूध निकालने के लिए कहा। गान्ति ने जब दूध निकालने के लिए बाल्टी उठाई उसी समय उसका नक्का चटा हुआ था। वह बाल्टी लेकर दूध निकाल कर लाई और सारी बाल्टी का दूध बिखर गया। माजी से न रहा गया। माजी ने सदा की भांति उसे फटकारा 'तेरे हाथ जल गए थे क्या? कुलपणी, इतना भी नहीं सूझता।'।

गान्ति माजी के स्वभाव को जानती थी। वह कभी प्रतिवाद नहीं करती थी। लेकिन आज वह चुप नहीं रह सकी। उसने कहा, 'मेरे हाथ का बलान करने की जरूरत नहीं कर लिया करो अपना काम। मेरे से तो जसा होगा वैसे ही कहना।'।

माजी चुप कैसे रहती? वह तो आगे ही दुख से भरी हुई थी। वह तड़क कर बोली 'अरी तेरे मुँह में जीम कहा से आ गई कुमाणस?'।

गान्ति ने आज माजी की बिल्कुल ही शर्म नहीं की। गाय

वर्गों का दम मरोटे हुए थीं । वह धारों में आकर बौनी, मेरा साया गाय
ता बाट पाया है । अब जीम आर काट ला ।'

माँजी से उड़ी रंग गया । वह थाव में झारर वाला, 'बड़ो घाई
नू जीम बटाये जाना, बजरो । यह दिगरी है बान्डी, उठा कर गिर काट
दूँगी ।

शान्ति ने गम के धूँध के साथ घाने मुँह का भी धूँधट हटा
लिया और माँजी की झार सीधी घाई, 'गिर काटने साथ मर गए । नू
काट कर तो देख । कसा मजा खाना है ?'

माँजी ने शान्ति को जोर से धक्का मिला और बाटो को लेकर
चली कि ह्योपाल का पिता हरीराम राम भज राम भज कला मा
धमका और माँजी से बान्डी छोन कर दोनों का साक्षिया दिखाने लगा ।
माँजी ने कहा, 'मे मया कर' ? यह तेरा ही कमूर है कि इस बुधराने की
मद माय म' दी ।

शान्ति भगन इसमुर की साथ में उड़ी रख सकी । वह धूँधट
की छोट लेकर लडाक से बोली 'कोई जरूरत नहीं मेरे पीछे वालों का
बुरा भला कहने की । अब मैं कुछ नहीं सुनने वाला ।'

माँजी फिर उसकी ओर चली लेकिन हरीराम ने माँजी का हाथ
पकड़ कर राक लिया और मक्का देकर बोला 'सलोमानस, मया यह बचन
सझाई करने का है ?'

माँजी घडाम से जमान पर गिर गई और जोर से लगी रान, 'घरी
बजरो, नू मरी पुण्या को ला गई । मरा बटा जेल में चला गया । जिस दिन
तुम मरु मर मे धुमी उसी दिन मे मेरे घर का सत्त्वानाश हो गया ।'

आदि आदि ।

उधर से शांति भी बड़बड़ाने लगी । वह कमल ओट कर अंदर
के कान में जाकर मो गई ।

रात में माजी ने श्योलाल के और शांति ने अपने पति हरीसिंह
के कान भरने शुरू किये ।

दूसरे दिन सुबह ही हरीसिंह ने माजी को जाड़े हाथा से लिपा ।
उसने कहा 'मा तेरी अबल अभी ठिकान नहीं आई ।'

माजी का खूबने वाली घरे । उसने औरत कहा 'तू उन राख
के सिवाये कह रहा होगा ।

मैं सब कुछ जानता हूँ । हरीसिंह बोला ।

क्या जानता है तू ? माजी बोली ।

'कमूर तेरा है । हरीसिंह बोला ।

माजी बोली, हा आज कमूर मेरा है । वह भली आदमन मैं
बुरी औरत नहीं भली । मर सामने बोलती है वह कुलखली ।'

दूतने में शांति भी आ गई । अपने पति के बोलने से कहल ही
वह जवाब पर उतर गई, 'इसके तो मुँह में जीभ नहीं । मैं सुनाती हूँ
तुम्हें । यह तो क्या कर आपको खिलाने वाला है । रात में यह पचे और
तामा तुम ।

मच्छा माजी बोली, यहा तक बात बढ़ गई । तू कौन है कमाई
टालने वाली । अपने पीहर से लार्ड को क्या ? यह तो मेरा बेटा है ।
कमायेगा और खिलायेगा । तू कौन है दाल भात में मूंगलचंद ।

और भा बेटे है तेरे, शांति बोली कितना बमात है व ?

खोना क्या किया है क्या सुन्दारे पास ?'

बूढ़े ने फिर हस्त रोप किया और गामसा एक बार फिर सात हो गया ।

हरसिंह ने स्निह से नेत्र नगा गया । गामति गाम को घटा पानी का लाने गई तो घटा फोड़ भाई । रात को माँजी ने दयालाल से बातें बड़ी । दयालाल बोला 'माँ, यह समय लड़ाई कराने का नहीं लड़ाई युमान का है ।'

माँजी ने समस्या को सामने रखते हुए कहा 'दा दिन से अँट घर छड़ा है । हरसिंह रोत ही नहीं जाता ।

दयालाल ने दालत देत हुए कहा 'मा, मैं उसका समझा दूँगा । कोई गड़बड़ नहीं होगी ।

माँजी ने फिर कहा 'बहु नीच डग से काम नहीं कर रही । आज घटा फोड़ भाई ।

दयालाल बोला 'उसका काम की कहने की जरूरत नहीं । तेरी बड़ी बहू भी तो है ।'

पर मे जो जीव हो उसका काम का करना ही पड़ता है' माँजी ने कहा ।

दयालाल समस्या की गम्भीरता का सोच चुका था । बात मन-सुनी करके चला गया । दूसरे दिन उसने हरसिंह को समझाया । बात उसके दूसरी समझ में आई हुई थी इसलिए भाई की बात समझ में नहीं आई ।

जब मन में गाँठ पड़ जाना है तो छोटी छाती बान भी बिगड़

रूप धारण कर लेती है अथवा बड़ी बड़ी बातों का भी कोई महत्व नहीं होता। शांति ने माजी से बातना करीब करीब बंद ही कर दिया था। जो कुछ करती थी अपनी मर्जी से करती थी। कभी धो का बतन खुला छोड़ दिया तो कुत्ता चाट गया। कभी दूध बिना ढक्के छोड़ गई तो बिल्ली ने बिखेर दिया। एक दिन खुले बिलोवने में कुत्ते ने मुँह डाल दिया तो माजी से नहीं रहा गया। माजी ने कहा, 'काम नहीं करना है तो मत किया कर। तेरा सहर कहा चला गया? यह तेरा बाप बिलोवने को जूठ गया।'

मेरा बाप क्यों तेरा बाप।' शांति ने जोर से कहा। माजी के हाथ में लौटा था। उसने शांति के पीठ पर लगा दिया 'यह लो तेरा बाप। तेरी सबल ठिकाने रह'।'

शांति ने रात भर घर उठा लिया। लगा शोर मचाने धरें मार दिया रे मेरा शिर फाड़ दिया रे। उधर माजी ने बेटी को याद करके विलाप शुरू कर दिया। घर में कोहराम शुरू हो गया। बूढ़े का हस्तक्षेप भी अमफल हो गया। उसने माजी के दो जूत लगा दिए। पड़ोस पड़ोस की स्त्रियाँ और बच्चे यह तमाशा देखने इकट्ठे हो गए।

सूर्यास्त होने से पूर्व ही हरीसिंह भीर श्यालाल में सघप शुरू हो गया। इस सघप की ऐसी ही प्रक्रिया होती है। हरीसिंह ने साफ साफ कह दिया 'मैं इस घर में एक मिनट भी नहीं रह सकता।'।

अानी लड़ाई के दौरान उमने यह भी स्पष्ट कर दिया कि श्यालाल को बीस बीघा बेचन का हक नहीं था इस बीस बीघे में उसका अधिकार छीना नहीं जा सकता।

इस पर श्यामलाल का माथा टनका । यह समय-समय पर पड़ गया कि जिन घर में आज तक अनाति नहीं पड़ी थी अचानक बिस्फोट कम हुआ ? यह बात ध्वारण नहीं हो सकती थी । उसने मोह गमक कर कहा 'यह जमीन तुम्हारी नहीं बिका, हमारा बिकी है । गौ बाधा जमीन को पहले धपना थी उसका तोमरा हिस्सा तुम्हें मिलना ।'

किंतु माजी फिर बीच में दूध पड़ो । उसका स्वर कठोर था । वह बोली, 'तुम दोनों घर से निकल जाओ । तुम्हें एक बीघा भी जमीन नहीं मिलनी । धपना बमाओ और छाओ । श्यामलाल कौन है जमीन देने वाला ?'

'आति इन स्वरों को कस सहन कर सकती थी । उसने कहा 'माजी आज तक हमन बमाया है । तुम लोगो न त्याग है । बड़े बेटे न पचायतों का और छोटे बेटे ने पगई । अभी गेन जाकर देखा हान । मरा आदमी काम करता करता काला पड़ गया और मरी कम भूक गई । अब जब बाटने के दिन आए तब कहती है कि एक बीघा जमान नहीं मिलनी । हम तो धपनी जमीन लेकर रहेंगे । घर में से घर लगे और जमीन में से जमीन ।'

माजी का स्वर कुछ ढाला पड़ गया । वह बोली 'तुम लोगो न रोकता कौन है ? इसी बीघा में से जितना हिस्सा चाहती है मित्र जायेगी ।'

'हम तो अपने बाप का हक लेंगे । हरासिन्धु बोला ।

श्यामलाल ने माजी को आति हान बं लिए कहा । हरीसिंह को भी धारण बधा कर असह्य कर दिया । श्यामलाल समस्या की गम्भीरता को अनुभव कर चुका था । पांडा दर पश्चात् सबने मिल कर यह निष्पत्ति

लिया कि हरीसिंह को सारी जमीन का तीसरा हिस्सा मिलेगा और घर का भी ।

दूसरे दिन हरीसिंह अलग हो गया । गाँव के पाँच सयाने बुला लिये गये । खेत में जाकर अच्छी में से अच्छी और बुरी में से बुरी जमीन के तीन हिस्से हो गए । हरीसिंह को कह दिया गया कि अपनी माँजी से एक हिस्सा ले लेव । हरीसिंह ने अपनी माँजी का एक हिस्सा ले लिया । घर में से भी इसी प्रकार हिस्से कर दिए गए । बतन भाड़े भी बंट गए । गहने आदि में किसी प्रकार का बंटवारा नहीं किया गया । शान्ति अब सतुष्ट थी ।

इयोत्तल और रामसिंह का हिस्सा अब इयोत्तल के हाथ में था जिसमें से बीस बीघा जमान निक चुकी थी । इस जमीन की चिन्ता इयोत्तल का था । इयोत्तल और उसकी औरत ने कभी पसीना बहाकर काम नहीं किया था । औरत तो प्रायः बीमार रहा करती थी । हरीसिंह अलग क्या हो गया इयोत्तल की बाहु टूट गई । इयोत्तल नहीं चाहता था कि यह स्थिति पन हो । हरीसिंह को मनाने का भी प्रयत्न किया था किन्तु असली तार तो शान्ति की ओर में चल रहे थे । माँजी भी अगर समझ बूझ में काम लेती तो गाड़ी और निभ सकती थी किन्तु माँजी अपना अधिकारपूर्ण दायित्व कैसे छोड़े । अब माँजी और इयोत्तल को नानी याद आ गई । खेती का सम्हालना न इयोत्तल के बग की बात थी और न बहू का ।

काल चक्र अपने निदयी कर रहा था इस घर का पतन की ओर ढवेल रहा था । दशकों से दन पात्रा के प्रति सहानुभूति की मात्रा उपहास की मात्रा में कम थी । परिस्थितियाँ अभी बनाये नहीं बनती थे तो स्वभावतः

प्रेमलता

ही बनती हैं । आलोचक भले हा अच्छी बुरी आलोचना करे, यह तो प्रकृति की प्रक्रिया है । श्यालाल को ये दुर्दिन देखने ही थे ।

मनुष्य साहस रखता है किन्तु जब भगवान् पीछे पड़ता है ता उसके साहस को भी झकझोर देता हैं । उनके दिल और दिमाग दोनों झूट हो जाते हैं । श्यालाल ने आज तक ऐसी परिस्थितिया नहीं देखी थी । माँ बाप के बल पर बूढ़े वाला अपने भाइयों के बल झूठने लगा । जब बूढ़े माँ बाप का बड़ा भाइया का भी सहानुभूति स भा हाथ धो बैठा । अब उसका कौन था ? उसने आँखों में आसूँ भरते हुए कहा 'प्रशाश, इंसान का भी नहीं अब तो ईश्वर का सहारा चाहता हूँ ।

मैंने श्यालाल की पीठ थप थपाई जब कि म साहसहीन को साहस दे रहा होऊँ ।

दिनेश ने सुधा को पत्र लिख ही दिया । उसकी नज़ल उसने मरे सामने प्रस्तुत की --

केवल सुधा,

तुम्हारे दो पत्र मिले । बाबू जी मनोवृत्ति के अनुसार मैंने तुम्हारे पत्रों का उत्तर नहीं दिया और न देखने वाला था, किन्तु प्रकाश ने जो नारी हृदय को नहीं पहचानता बहुत आप्रह किया तो मुझे उत्तर देने को विवश होना पड़ा ।

तुम कवियित्री हो कविता करती हो और कविता करती रहो, । कहते हैं कि कवियों को निराशा निधनता और निराश्रयता कविता करने में बड़ी सहायक होती है अतः तुम्हारे लिए यह अनुकूल अवसर है ।

तुमने अपने हृदय परिवर्तन की बात लिखी और कुछ विलाप के अश्रु भी बिसरे, किन्तु नारी के आगू तो कृत्रिम हाते हैं । मैं तुम्हारे आमुओ में वही भी वास्तविकता का अनुभव नहीं करता ।

तुम नारी हो और फिर कवि हृदय भी रखती हो । तुम्हारे में

नारी घोर व्रि के दो हृदय का समन्वय है। कवि व हृदय में तो कल्पना द्वारा अनुभूतिया उत्पन्न हो सकती है, जब तुम्हारे हृदय में मुझे मग्न है।

मैं नारी को ईश्वर की महान् कृति मानता हूँ, किन्तु मैं यह भी स्वीकार करने में नहीं हिचकिचाता कि यह प्रकृति की अद्भुत रचना है। इसका समझना पुरुष के सामर्थ्य से परे की चीज है। नारी का हृदय स्पष्ट नहीं है। उसमें अनेक यथियाँ हैं जिनको टटोलना साधारण बात नहीं।

मैं नारी का महान् मानता हूँ क्योंकि उसकी निमलता सद्गुण न हो। मोती का मूल्य तभी तक है जब कि उसका प्रत्येक कोर सुरक्षित हो। मोती का मोल्य उसका मूल रूप में है। नारी बाह्य सौन्दर्य से अन्तर्गत नहीं होती। वह सौन्दर्य ही क्या जो समय के प्रहारों से बिखर हो जाय। सौन्दर्य तो हृदय का है जो अनुभूतियों में निश्चरता है।

तुम्हें दिनेश की आज्ञा करने का क्या आवश्यकता पड़ी? तुम्हारे तो कई कविमित्र हैं जिनमें तम कवियों मुनो और अपनी कवितायें उनको सुनाओ। तुम तो गहरी वातावरण में रहती हो। वह चहलपहल और गारतियाँ की दुनिया है। हम ग्रामीण वातावरण में पल हुए ऊँड़ तावड़ पुरुष तुम्हें याद कैसे आते हों? आश्चर्य!

मैंने एक निष्पत्ति लिया है और मैं यह आज्ञाकारिता अनुभव करता हूँ कि तुम्हें अपने निष्पत्ति की सूचना दे दूँ। मैं तुम्हें त्याग चुका हूँ और सदबन्धन लिए त्याग चुका हूँ। तुम यह सूचना अपने माता पिता को दे देना।

गायक तुम यह अनुभव करा कि मैं कोई दूसरा विवाह रचाने के पारम हूँ। मैं तुम्हें यह भी बतला देना चाहता हूँ कि मैं अब विवाह के

पक्ष में नहा हूँ । मैंने तुम्हारा झुझट भी यश में मोन ले लिया जिसमें तुम्हारा जीवन की भी धक्का लगा । तुम दोषी हो या नहीं हो मैं इस विवाद में नहीं फँसना चाहता । भुक्तता यह विश्वास है कि तुम्हारा और मेरा संयोग सस्वारा से विपरीत पड़ता है । मैं अपनी ही समझना प्रकट कर देता हूँ इसलिए मैं तुम्हें निबाह नहीं सकता ।

मैं यह भी लिखने में नहीं हिचकिचाता कि तुम्हारा रास्ता भ्रम भ्रुता है । मैं तुम्हारे यश का वाचक नहीं हूँ । तुम स्वयं विचरण करो मैं मेरी ओर से स्वतन्त्र हो ।

तुमने पुष्पा के सम्बन्ध में पूछा है भक्त लिख देता हूँ । पुष्पा सत्ता के लिए चली गई । रामसिंह को उसका हत्यारा माना जाता है । वह पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है । मुकद्दमा चल रहा है ।

प्रकाश भ्रम भी यही है । तुम्हारे जाने से उसका धाँवे को मुक्तान पहुँचा है । वह तुम्हारा बहुत पक्ष करता है, किन्तु उसकी प्रेरणा का अभी तक मेरे पर कोई प्रभाव नहीं है ।

माताजी और पिताजी दोनों प्रसन्न हैं । दोनों ही तुम्हें याद करते हैं ।

रोटी मैं स्वयं बना लेता हूँ इसलिए तुम्हारी याद आने का प्रदा नहीं पैदा होता । कभी कभी जाता घर बाँक भी मिलता देते हैं ।

तुम्हारे माताजी और पिताजी को नमस्त कहलवान मैं मुझे कोई एतराज नहीं है ।

तुम्हारा हितैषी,
दिन ।

मैंने पत्र को मेज पर रखते हुए कहा, 'क्या तुम यह पत्र डाल चुके ?'

'बिल्कुल,' दिनेश बोला ।

'तुम वास्तव में विचित्र प्राणी हो, मैंने कहा भले आत्मा, औरत बड़ी महंगी चीज है । मेरे आई औरत मिलती कहाँ है ? औरत लक्ष्मी है लक्ष्मी । पर आई लक्ष्मी को छुकराते हो । यह नवानी है मेर दोस्त । हमारे मद में भ्रम रहे हो । रोमांचे अपनी करतूतों को । बुढ़ापे में नानी याद आ जायेगी । कोई पानी पूछने वाला भी नहीं मिलेगा । भगवें पहन कर हरिद्वार में बैठ जाना ।'

दिनेश ने कहा मैं न तो साधु बनूँगा और न ही दूसरा विवाह करूँगा । मैं तो इसी तरह रहूँगा फक्कड़ । एमी औरत से तो पक्कड़ जीवन ही घण्टा । औरत घर की बल्ल के बलावा क्या है ?

मुझे फिर गुस्मा आया । मैंने कहा घर भाई यो कहो कि मुझे घर का धंधा करना पसन्द नहीं । औरत होगी तो नमक फिर का भा इन्तज़ाम करना होगा । यो दूध की भी व्यवस्था करनी होगी । उसका हित भी साबना होगा । उसकी कमी कही जा हज़ूरी भी करना होगी । किन्तु औरत के मने औरत का साथ ही है । अरे भय आत्मा मुझा जगो सुनील औरत कहाँ मिलेगा ?

दिनेश को कहने का मौका मिल गया 'तुम उसको गुलाबना की बार बार प्रणाम करते हो । मुझे उसका गुलाबना में ही पत्र है ।

'क्या पत्र है ? मुझे बताओ । मैं जाना ।

दिनेश का चेहरा लम्बार हो गया । मुझे बिनाश है कि मनुष्य

का सम्बन्ध सुधा मे अच्छा नहीं था।' दिनेश ने कहा।

मने कहा, दिनेश तुम वास्तव मे पागल हो। मधुप मेरा मित्र है। मैं दिल्ली मे उसमे मिला था। रातभर मैं उसके साथ रहा। सुधा की भी बात खली थी। उसने जो कुछ बतलाया उसमें सशय करने का कही भी स्थान नहीं है। मुझे सुधा के जीवन के लिए झूठ बोलना पडा।

दिनेश अपने मत मे अटन था। उसने कहा 'प्रकाश, ससार का सारा काव्य, साहित्य और संगीत प्रेम और वासना से ओतप्रोत है। प्रेम तो सात्विक है किन्तु वासना के बिना यह अधूरा है। वासना प्रेम का मूल स्रोत है। तन की वासना न सही किन्तु मन की वासना तो विद्यमान रहती ही है। मैं इसका स्वीकार नहीं कर सकता कि सुधा का कवि मधुप के कवि के सम्पर्क मे आकर वासना मे अछूना रहा हो। ॥ सुधा को स्वीकार नहीं कर सकता। -

मगर विश्वमनीय कथन भी दिनेश को मोड़ने मे असमर्थ रहा। मुझे यह कहना पडा 'दिनेश तुमन फायर का नाम सुना होगा। उसने बताया है कि बाप का बेटा से, मा का बेटे से भी वामनारमक सम्बन्ध होता है। इस प्रकार तुम गहराई मे जाओ तो ज़िंदा नहीं रह सकोगे। किसी राजकुमार ने अपनी विवाहिता को इसलिए त्याग दिया कि उसने अपने विवाह से पहले किसी अन्य राजकुमार की प्रस्ता सुनी थी। यह कोई दलील है? कौन किमका जानना है? पश्चिम मे एक एक स्त्री चार चार पति बदलती है और एक एक पुरुष चार चार पत्निया। उनका भी जीवन चल रहा है। यह तो भारतीय नारी है कि हर प्रकार के पति का चाहे वह कोटी हा हा निभाती है और जीवनभर उसका पाल देना है।

दिनेश मेरी दलीलो से फिर प्रभावित नहीं हुआ। वह कहने लगा 'भारतीय नागों की तारीफ करते करते भारत के कवि लखन दास निक श्रोत्र राजनीतिज्ञ अघाते ही नहीं। मैं आपका यह कहता हूँ कि भारत के नये प्रतिष्ठित शिक्षित पुरुष जो किसी भी दृष्टि में कम नहीं कह जा सकते अपने घर में अनपढ़ और फूहड़ औरता को निभा रहे हैं और एक भी शिक्षित महिला नहीं मिलेगी जो अनपढ़ और फूहड़ पति का निभा सके। मैं तो भारतीय पुरुष की तारीफ करता हूँ।

मैं दलील में तुमसे जात नहीं सका' मैंने कहा, किन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगा कि अशिक्षित औरतें भी ऐसी मिलेंगी जो शिक्षिता से बिनती ही अधिक गिष्ट और सुगील है।

यह तो नसमिक गुण और कुछ घरेलू संस्कारों का प्रभाव होता है। गिना तो बचल सगापन का काम करती है।' दिनेश ने स्वाकार किया।

इतना कहकर दिनेश कुछ समय के लिए मौन हो गया। मेरे लिए भा वाद विषय नहीं रहा। मैंने पूछा, 'तो आपन पत्र डाल दिया। क्या बाला ?

'कल जब मड़ी गया था। वह बाला।

मड़ी गए थे कल ?' मैंने पूछा।

हाँ, हाँ जाना क्या।' दिनेश बोला, 'उन पिताजी मुझे ल गण।' क्या ?' मैंने उत्सुकता में पूछा।

दिनेश ने गम्भीर होकर कहा, 'कल मुझे पिताजी ने बुलाया। उन्होंने मुझ समझाया। उन्होंने अपनी प्रगति का प्रश्न बताया।

मैंने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा आपन क्या कहा था कर

किया ?' दिनेश ने कहना शुरू किया, पिताजी वाताही बातों में मडी ले गण । अपने से पहले कोई जिक्र नहीं किया । मुझे जीप में बैठने का आदेश दिया । पुलिस का कामटेवल हमारे साथ जबर था । जब हमने मडी में प्रवेश किया पिताजी ने डाइवर से थाने चलने को कहा । हम थाने में पहुंच गए । थानेदार बैठा था । उसने मेरे बयान लिखकर तैयार कर रखे थे । मैंने आमाकानी की । पिताजी ने अपनी प्रतिष्ठा की बात फिर दोहराई । थानेदार ने अपनी बबसी जाहिर की । मैंने हस्ताक्षर कर दिए ।

मुझे दिनेश के व्यक्तित्व पर आश्चर्य हुआ । मैंने कहा जहां तक तुम्हारे और इशोलाल के झगड़े का प्रश्न है मुझे कुछ भी नहीं कहना चाहिए । मुझे दोनों ही घरों में समान रूप से आदर मिलता है किंतु मैं जानता ही पूछना चाहता हूँ कि जो कुछ हुआ तुम्हारी अनिच्छा से हुआ ?

मैं तो ऐसा ही मानता हूँ ।' दिनेश बोला ।

दिनेश कुछ देर चुप रहकर फिर बोला मैं आने समय रामसिंह से भी मिल आया । रामसिंह बहुत कमजोर हो रहा है । वह पीला पड़ गया है । चेहरे पर मुदनिगी छापी हुई है । रामसिंह ने मुझसे कहा, भाई दिनेश जो कुछ हुआ उससे लिए मैं ही दोषी हूँ । मेरा भाग्य मुझे यहाँ ल आया । मैं सबका क्षमा प्रार्थी हूँ । मुझे आशा नहीं कि मैं कभी आप लोग से दूर हो सकूँगा । रामसिंह फूट फूट कर रोने लगा । वह गंदी काठरी में बैठा है । उससे बेगान के लिए काठरी में ही व्यवस्था है । उसका भाग्य ताना लगा रहता है । पहरदार चौबीस घंटे उसके आगे खड़ा रहता है । मुझे तो तरस आ गया उस पर ।'

मैं दिनेश को किसी प्रकार की सम्मति नहीं दे सका । मैं असमज

य या कि पुलिस ने ऐसी जायजाही क्यों की ? पुलिस इयोताल मे भी पमे मांग चुकी थी । इधर मे पतराम को भी राजी कर लिया ।

ग्निन ने आगे की बातों के दौरान यह भी बना दिया कि पुलिस न आज रामगिह का शासन पेन कर लिया । यह सब जुड़िया के हुवाने हो जायगा । नाम को जब मैं पतराम मे मिला तो यह बहुत प्रसन था वह पिस्नोल टागे बाहर गया था । मुझे आश्चर्य हुआ कि य समाकपिन गाधीबादी अहिंसा के पुजारी क्या हिंसा मे विश्वास करने लगे या आत्मरक्षा के विचार से सत्य और अहिंसा को ताक मे रख बैठे । मैंने पहला प्रश्न किया— पिस्नोल अभी माल लिया है क्या ?

पतराम ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, हम ससर मे क्या नहीं करना पड़ता ?

गाधीबादी तो हिंसा मे विश्वास ही नहीं करते । मैंन मजाक मे कहा ।

पतराम ने मुझे अपने साथ खींचते हुए कहा, यह तो गाधी जी का ही आशयल था कि वे बिना किसी सूरना साधना के धाग मे बंद पड़त थे और उसका शांत कर देते थे । आज के गाधीबादी तो नाममात्र के है ।'

'आपको इसका क्या आवश्यकता पड़ गई ?' मने पूछा, 'इस तहर के चाले पर यहसाआममान नहीं हो रहा ।

'भाई, उसने कहा यह तो दुश्मना का बचाव है । इयोताल की पार्टी मुझे मारना चाहता है । बबल मे ही उनका दुश्मन बचा हूँ ।'

मने कहा 'गाधीजी तो मन की हिंसा को भी दूर हटाते थे ।

उनका मत था कि मन की हिंसा दूर करने पर दुश्मन के दिल से भी हिंसा दूर हो जाती है। आप अपना हृदय कलुषित रखो ही क्या ? दुश्मन अपने आप पिघल जायेगा।

आज इस व्यावहारिक जगत में सम्भव है क्या ?" पतराम बोला।

मैंने कहा, 'गांधीजी की अहिंसा से कौनसी अहिंसा अधिक व्यावहारिक हो सकती है। उन्होंने समार की सबसे बड़ी सत्ता अहिंसा से कैद की। आप यह साधारण सा काम नहीं कर सकते ?'

उनके पीछे उनका तप और साधना थी' पतराम बोला।

मैंने कहा उनका स्वप्न था कि ऐसा पचायती राज बने जो सत्य और अहिंसा पर आधारित हो जिससे याद की समानता मिले और पारस्परिक सहयोग बढ़े जिससे ऐसे समाज का निर्माण हो कि राज्य की आवश्यकता ही नहीं रहे और देख हम यह रहे हैं कि याद इतना विकृत हो गया है कि जो कुछ हमारे पास था वह भी हम खो बैठे।'

पतराम मेरी बात पर गम्भीर होकर मौन हो गया। थोड़ी देर चुप रहने पर वह बोला, प्रश्न यहाँ गांधीजी और गांधीवाद का नहीं। प्रश्न प्रतिष्ठा का है। आज मैं अपनी बात छोड़ दूँ तो समाज की दृष्टि में यह मेरी पराजय होगी। मैं अपनी हार स्वीकार करना नहीं चाहता। मैं जानता हूँ कि मेरा कोई मुत्सान नहीं हुआ। मुत्सान तो दयोलाल का हुआ है। किंतु प्रश्न हार और जीत का है। मैं अपनी बात कैसे छोड़ दूँ ?'

इसका तात्पर्य यह हुआ कि हम अपने पूवजा की कमाई खो बैठे और साथ में गांधीजी का भा। मैंने कहा।

म था कि पुलिस ने ऐसी कायवाही क्यों की ? पुलिस इयोलाक से भी पैसे माग चुकी थी । इधर से पतराम को भी राजी कर लिया ।

निनेश ने आगे की बातों के दौरान यह भी बता दिया कि पुलिस ने आज रामसिंह का चालान पेश कर दिया । वह अब जुडिशल के हवाले हो जायेगा । "गाम को जब म पतराम से मिला तो वह बहुत प्रसन्न था वह पिस्तोल टांगे बाहर खड़ा था । मुझे आश्चर्य हुआ कि ये तथ्यांकित गांधीवादी अहिंसा के पुजारी क्यों हिंसा में विश्वास करने लगे या आत्मरक्षा के विचार से सत्य और अहिंसा को ताक में रख बैठे । मैंने पहला प्रश्न किया— पिस्तोल अभी मोल लिया है क्या ?

पतराम ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, इस सप्ताह में क्या नहीं करना पड़ता ?

गांधीवादी तो हिंसा में विश्वास ही नहीं करते । मैंने मजाक में कहा ।

पतराम ने मुझे अपना साथ खींचते हुए कहा यह तो गांधी जी का ही आत्मबल था कि वे बिना किसी सुरक्षा साधना के घाग में दूक पड़ते थे और हमको सान कर देते थे । आज के गांधीवादी तो नाममात्र हैं ।

'आपको हमकी क्या आवश्यकता पड़ गई ? मैंने पूछा 'इस सहर के चोन पर यह गांधीमान नहीं दे रहा ।

भाई हमने कहा 'यह तो दुश्मनी का बचाव है । इयोलाक को पागो मुझे मारना चाहती है । वरना म ही उनका दुश्मन बचा हूँ ।' मैंने कहा गांधीजी तो मन की हिंसा को भी दूर दूर करने थे ।

उनका मत था कि मन की हिंसा दूर करने पर दुश्मन के दिल से भी हिंसा दूर हो जाती है। आप अपना हृदय क्लुपित रखो ही क्यों ? दुश्मन अपने आप पिघल जायगा।'

आज इस 'यावहारिक जगत में सम्भव है क्या ?' पतराम बोला।

मैंने कहा, 'गांधीजी की अहिंसा से कौनसी अहिंसा अधिक व्यावहारिक हो सकती है। उन्होंने सत्ता की सबसे बड़ी सत्ता अहिंसा से फँक दी। आप यह साधारण काम नहीं कर सकते ?'

उनके पीछे उनका तप और साधना थी।' पतराम बोला।

मैंने कहा उनका स्वप्न था कि ऐसा पचापती राज बने जो सत्य और अहिंसा पर आधारित हो जिससे माय की समानता मिले और पारस्परिक सहयोग बढ़े जिससे ऐसे समाज का निर्माण हो कि राज्य की आवश्यकता ही नहीं रहे और देख हम यह रहे हैं कि माय इतना विकृत हो गया है कि जो कुछ हमारे पास था वह भी हम खो बैठे।'

पतराम मेरी बात पर गम्भीर होकर मौन हो गया। थोड़ी देर चुन रहने पर वह बोला प्रश्न यहाँ गांधीजी और गांधीवाद का नहीं। प्रश्न प्रतिष्ठा का है। आज मैं अपनी बात छोड़ दूँ तो समाज की दृष्टि में यह मेरी पराजय होगी। मैं अपनी हार स्वीकार करना नहीं चाहता। मैं जानता हूँ कि मेरा कोई नुस्खान नहीं हुआ। नुस्खान तो दसोसाल का हुआ है। किंतु प्रश्न हार और जीत का है। मैं अपनी बात क्या छोड़ दूँ ?'

इसका तात्पर्य यह हुआ कि हम अपने पूवजा की कमाई खो बैठे और साथ में गांधीजी का भा। मैंने कहा।

‘फसल तो बड़ी अच्छी खड़ी है। माजी बोली। दयालाल न प्रसन्नमुद्रा में कहा मेहनत भी तो लगी है। सारी रात खेत में ही लगाता हूँ। किसी भी पशु को नहीं घुसने देता। चन के कितने बढ़िया फल है देवा माँ। माजी ने प्रसन्न को नीरते हुए कहा बेटा, मेहनत का फल तो मीठा होता है। परमात्मा करे, रामसिंह भी आ जाये। उनको ओर से अभी कोई गवाह नहीं गया न ?

नहीं मा अब तक तो नहीं लेकिन एक खतरा है। वह तो पूरा होगा ही। दयालाल बोला।

माजी बोली वह तो देखा जायगा। उस कमहीन थानेदार ने खराब किया। तू तो कहता था न वह मरा दोस्त है। पसा भी खा गया और मुकद्मा भी बिगाड़ दिया।

दयालाल ने कहा माँ आजकल दुनिया की स्थिति भी बड़ी विविध है। पहले जमाने में अपनायत होती थी। अपनायत क आये पसा कोई चीज नहीं थी। अपनायत से बढ़कर पसा हो गया और जमाने की खराबी में क्या कसर रह गई कि पसा भी हजम और काम भी पूरा नहीं। खर। देखा जायगा।

माजी ने एक लम्बी सास ली और बोली, 'वेग, सब कुछ परमात्मा पर है। वह चुग है तो सब खुग हैं। उसी का ध्यान रखना चाहिए। घुरे दिन भी एक साथ आते हैं। तरे बाप का यही घर था क्या ? यही पतराम तर बाप के आगे नाकर गइता था पञ्चानवें छयानवें क मकाला म उमकी मा ओहो वे भी जिन थ, सब कहती हूँ, अपने घर की हालत पर रोती थी और दुनिया भर की बातें बनाकर सर बाजरी ल जाया करती थी। आज वही भादयो नुश्मन बन गया। वह एक बार यहाँ आए तो उमकी सुनाळ। मीयो की जमीन लेकर बना फिरा है। खैर ! भगवान सा देखना है। इस हरीसिंह को क्या सूझी ? घर का बेटा भी अपना नहीं दूसरा को क्या कह ? यह कह कर माजी ने एक लम्बी सास ली और भैम का दूध दूहन बली गई।

घोडा ही देर बाद माजी लौट आई और खाला बाल्टी रखने हुए बोली, 'शोलाल भैस तो बीमार है। बेटा दूध नहा लिया।'।

क्या बात हो गई मा ? शोलाल बोला।

किमी खेत म गई है बने खाये है आफरा है बापा हो गई। माजी एक ही सास म कह गई।

तू मिट्टी का तेल तो मुधा शोलाल बोला मैं मोतीराम को लाता हूँ। वह कुछ बतायगा।

शोलाल यह कहकर बाहर निकल गया। माजी ने मिट्टी के तेल का फोआ लिया और उसे मुधाने लगी।

माजी की यह भैस तीजाण (तीसरी बार च्याई हुई) थी। इनके पहले दो भैस और थी। एक भैस हरीसिंह को दे दी गई। अब इनका पास प्रेमलता

दो भरो रह गई। भगें दोगा ही मच्छी थी। दम भग का दूध मधिर था।
दमने दम घर का गुजारा चलता था। बेचने पर ८००-६०० र० तो कम
की नहीं थी।

मांजी के मिट्टी व तेल का भम के राग पर कोई समर नहीं था।
तब हरीराम की सलाह से बान्ने की हटाने का काड़ा तयार किया गया
किन्तु भंस ठीक स्थिति में नहीं आ पाई।

वायुमंडल में अचानक अचानक की आगा जातलता मधिर थी।
आकाश में आकाश भी उतर आ रहा थे। मांजी की कुछ बूदा बूदा की भी
आकाश हुई। हवा से गर्मी भी बढ़ने की सम्भावना थी। मांजी ने भंस
ऊपर बोरी का पान डाल दिया और अन्दर ऐसे स्थान पर उसका
बाध दिया जहाँ हवा का समर न हो।

दोस्ताल की यह और बच्चा ने ता आगती मवि व अनुमार
लिचड़ी ला ली। दूध नहीं था इसलिए कुछ भी और देखकर बाहर गुजारा
कर लिया। मांजी ने एक घास मुह में लिया और उसे पानी में निगल कर
खड़ी हो गई। भंस का दम उसने गल में घटक गया। वर फिर उसका
सम्हालने गई। भंस की स्थिति और खराब हो गई। आफरा बन्ता रहा।
भंस लेट गई।

हरीराम ने दूसरा काड़ा बतलाया। मांजी तयार करने लगी।
दोस्ताल की भी प्रतीक्षा थी किन्तु वह नहीं आया।

रात ने भयानक रूप धारण कर लिया। पश्चिम में बिजली
चमकने लगी। मांजी ने काड़ा दिया और भंस कुछ उगाली निकालने
लगी। मांजी की पोढ़ी शांति मिली। वह सर्प का पूरा इतजाम करके
घर में आ गई। भिने पूछा, मांजी, भंस कसी है ?

‘भैस तो ठीक मालूम हो रहो है किंतु श्योलाल नहीं भाया ।’
माजी बोली ।

माजी अपने बुढ़ापे के बख़्तानुसार ‘राम का नाम लेकर लेट गई । मुझे भी बैठने के लिए कहा । माजी को चन नहीं मिला । वह एक बार फिर भैस को सम्हालने खली गई । माजी ने आकर सतीप प्रकट किया ।

श्योलाल के बिल्म्ब की क्षणिक चिन्ता से माजी पहले तो कहती रही ‘श्योलाल नहीं भाया । किंतु श्योलाल की भ्रातृ के अनुसार वह फिर निश्चित हो गई और आराम से लेट गई । माजी ने कहा, बेटा जमाना कितना बदल गया है । मैं जब छोटी थी उस समय की दुनियाँ में और आज की दुनियाँ में बड़ा अंतर है । बागड में सब भी वही दग है । मेरी छाटी का ही विवाह हो गया था । मैं पहली बार ससुराल में आई तब मुझे कुछ भी पान नहीं था । न सास ससुर का ख्याल था न पति पत्नी का । भाला भाला जमाना होता था वह । न रेल थी, न माटर, न साइकिल । ऊँट में ही आने जाने का इन्तजाम था । मेरे पिता मेरे साथ आए थे । वापिस जब हम जान लगे तो बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी । तूने बागड देखा है बेटा ?’

मने कहा हा चलती गाड़ी स ।’

माजी ने अपनी कहानी ‘गुरु की, ‘हाँ तो हम खाना हो गए । भयंकर गर्मी थी । शाम को अलस दिन में गर्मी कम हो गई थी ’ खाना पीना हमने इसी घर में कर लिया था । कुछ ही समय बाद आकाश में हल्के हल्के बादल छाने लगे । सफर कम होने के कारण हमने पानी नहीं लिया था । यह हमारी गलती थी । मर स्वगुरु ने कहा भी किंतु मेरे

पिताजी ने कहा कि काई दूर तो है नही इतनी क्या जरूरत है । हम चलने रहे । मर पौहर के बीच में बड़े बड़े रेत के टाले आत है । हम कभी घोरो व ऊपर चढ़ते और कभी नाच उतरत । इस प्रकार हम चलने जा रह थे । हमारा ऊँट बड़ा सीधा और समझदार था । निन छिप चुका था । थोड़ा थोड़ा झेंधेरा होने लगा । मरे पिताजी ने अपना कोई पुराना गान गुन कर दिया जिसकी बड़िया मुझ अब याद नही । दतने में पिताजी को कुछ भ्रम हुआ कि ऊँट रास्ता छोड़ गया । इन प्रदेश में रेतीले रास्ते ऐसे होते हैं कि जब कुछ आत्मा या पशु चलत है तो बन जाते हैं और नही चलत तो हवा के तेज झाका से मिट जाते हैं ।

मने बीच में रोकते हुए कहा, माजी जीवन भी ऐसा ही है । बड़े बड़े आदमी हममें रास्त बना जाते हैं । उन पर जब तक आदमी चलत है तब तक ना वे रहते हैं और यदि काई हवा का तेज भाका आ गया तो वे उनको मिटा देते हैं । हा, माजी आगे चलो ।

माजी फिर आगे बनी 'पिताजी कहने लगे कि गायन ऊँट रास्ता भूल गया । वे नाचे उतरे और ऊँट की मोरी पकड़ कर ठाक रास्ता लेने की नियत से सँतोंने वह राह छोड़ दिया । वास्तव में ऊँट ठीक राह पर चल रहा था । अघरे में पिताजी ठीक अनुमान नहीं लगा सके । वे ऊँट सहित एक घोरे पर चढ़े । मैं ऊपर चढ़ी हुई थी । वे बम घोर पर चलते चलते फिर ऊँट सहित नाच उतर गए । मुनमान रात्रि थी । वही पक्षी तक की आवाज नहीं थी । पिताजी ऊँट को लिए ऊबड़ खावट धीरान जंगल में भटकने लगे । कहा रास्ता नही मिला । आकाश में बादलों के स्थान पर भाँपा चलने लगी और नभ का रूप विकराल बन गया । आस

पास के मोटे मोटे वृक्ष एक भयंकर आवाज करने लगे। मेरे पिताजी को तारा का नाम था किन्तु तारे भी बही दिखाई नहीं दे रहे थे। पिताजी निराश होकर एक धीरे पर फिर ठहर गए। ऊँट को बिठसा दिया। मुझे भी नीचे उतार दिया। पिताजी बोले, बेटी ध्यान से सुन, बही आवाज सुननी है ? हम दोनों थोड़ी देर के लिए चुप हो गए। दूर छिनिज में एक आवाज सुनी। वह कुत्तों के भोक्ने की आवाज थी। इसके प्रतिरिक्त आधी री मूसाट भरी आवाज इसके प्रतिरिक्त कुछ भी सुनने में नहीं आ रहा था। मैंने कहा, 'बहुत दूर कुत्तों के भोक्ने की धीमी धीमी आवाज आ रही है।' पिताजी ने भी कान लगाए। उनको भी कुछ आभास हुआ। पिताजी ने मुझे फिर ऊँट पर चढ़ने का आदेश दिया। हम उसी ओर चल पड़े जिधर से वह आवाज आई, किन्तु रास्ता नहीं था। मुझे प्यास लग चुकी थी। पिताजी ने बीच ही में कहा, 'क्यों बेटी, प्यास तो नहीं लगी ?'

'थोड़ी थोड़ी लगी है।' मैंने कहा।

उन्होंने कुछ फोग (मरुभूमि का एक छोटा वृक्ष) के हरे पत्ते तोड़े मुझे दिए और कुछ खुश ने चबा लिए। उनकी प्यास बड़ चुकी थी जैसा कि उन्होंने बाद में बतलाया। कुछ दूर चलने पर उनको रास्ता भी मिल गया। वे रास्ते पर चलने लगे। उनको कुछ धीरज मिला। आँधी की गति और तेज हो गई। किन्तु दुर्भाग्य से वह रास्ता भी आगे जाकर रुक गया। हम फिर निरुद्देश्य विचरने लगे। कुत्तों की आवाज भी मौन हो गई। पिताजी फिर निराश हो गए। मेरी प्यास तीव्र हो गई। पिताजी की हालत मेरे से भी गम्भीर थी। पिताजी बोले, रात जगल में

बितानी शायी । शायत आधी रात बीत गई है । उठाने फिर पूछा, तेरी
 प्यास का क्या हाल है ? मैंने कह दिया प्यास बहुत तेज लग रही है
 पिताजी ।' कितना महत्व था उस समय पानी का ! अभाव में ही किसी
 चीज की कीमत और जानी है । पिताजी ने फिर हिम्मत की । ऊँट पर
 मुझे उठाया और खुद भी चढ़ बैठे । एक छोटी सी डाँडी (रास्ता) पर
 ऊँट का छाड़ दिया । उनके निमाण में छाया कि ऊँट कभी रास्ता नहीं
 छोड़ता । आज सभी कुछ इसी पर छोड़ दिया जाय । रेगिस्तान में भीना
 तक गाव नहीं आते । रास्ता भूलने पर अनेकों प्यास से तड़फ कर मर जाते
 हैं । हमारी मौत में कोई सदेह नहीं था । प्यास का भ्रम होने पर प्यास
 अधिक मताती है और आदमी निराशा में तड़फ तड़फ कर मर जाता है ।
 यही स्थिति हमारी था पिताजी का घोड़ा सा आगा प्य रह गई था और
 यह उनकी अंतिम परीक्षण था । ऊँट धीरे धीरे चलने लगा । ईश्वर की
 तेजा अनुकम्पा हुई कि घोड़ा ही देर में हम कुछ भर्से नजर आई । रात को
 भस धीरे पाय में भर कर नहीं दिखाई देता । पिताजी नीचे उतर कर पाम
 गए तो भय ने पूछ लिया कर करने अस्तित्व का जायज कराया । हमें
 कुछ वात्सल्य बघा कि है तो गाव ही चाह कोई है । घोड़ा देर में कुछ
 गाँव की बाड़ नजर आई और एक कुत्ते के भाँकने की आवाज भी सुनाई
 दी । हम पूर्ण विश्वास हो गया । प्यास स्वयं ही मिटती नजर आई ।
 हम गाँव में चल गए । एक अनजान घर में घुसे । घर वाला को जगाया ।
 कहानी मुकाम में पहुँच कर भर कर पानी पिया । यह गाँव हमारा नहीं
 था किन्तु उस समय वह कितना हमारा था यह हमारी आत्मा ही
 जानती है ।

प्रेमलता

माजी ने एक गहरी साँस के साथ यह कहानी समाप्त की। मैं माजी की कहानी में मनुष्य की विवशता से अवश्य द्रवीभूत हुआ किंतु समय का प्रसंग समझ में नहीं आया। माजी ने थोड़ी देर बाद कहा, 'बेटा, मैंने यह कहानी इसलिए कहा कि आदमी कितना कमजोर है? वह अपने जीवन में रास्ता भूल जाता है और उसके परिणाम भयंकर होते हैं किंतु रास्ता भुलाने वाला भी परमात्मा और उसको रास्ता दिखाने वाला भी परमात्मा। जीवन में मन कभी दुःख नहीं देखा। मैंने या तो उस दिन दुःख देखा या अब देख रही हूँ। हम रास्ता भूले हुए हैं भटक हुए हैं। हम उबारने वाला ही परमात्मा है। हे ईश्वर! तरो हा माया है।

यह कहकर माजी अपने आसू पोंछने लगी। आसू दुःख को हटका कर देते हैं।

इयोत्ताल नहीं आया। यह कहकर माजी फिर भैरव का सम्हालने चली गई।

आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट शुरू हो गई। बकाचोंघ करने वाली बिजली तड़कने लगी। मोटी माटी बूँदें गिरने लगी। माजी भागती हुई आँदर आई। अफसोस से कहने लगी 'भैरव तो नहीं बचनी। आफरा क्या तकड़ा है। इयोत्ताल भी नहीं आया। इतनी देर कैसा हो गई?

बूँदें और तेज हो गई। छोटे छोटे आल पड़ने शुरू हो गए। बिजली की रोशनी में साफ दिखाई दे रहे थे। माजी बहू और बच्चे मक देखने लगे। फिर जोर-जोर से बरसने लगे। बरसने लगे। कुछ ही क्षण में आगन आली से सफेद हो गया। माजी ने तब के साथ कहा, भगवान् की क्या मर्जी है। फसल भरा खड़ा है। काटने वाली हो रहा है। सारा

प्रेमलता

नष्ट हो गई होगी।' किंतु मोला की वर्षा बाद नहीं हुई। मोले और बड़े बड़े मोले। 'हाथ राम वह कर बहू लेट गई। बच्चे प्रसन्न थे। उनकी इससे उत्पन्न होने वाला नुकसान का आभास नहीं था।

मैं अपने कमरे में चला गया था। बच्चे सो चुके थे। बहू भी खरटि लेने लग गई। हरीराम को हरी के नाम के अतिरिक्त चिन्ता ही क्या थी, किंतु माजी रात भर भस के चारों ओर घूँककर जाटती रही। मोले मिरने के बाद तेज तीखी ठंडी हवा चलने लगी। माजी बोरी आड़े हुई थी और घूम रही थी। वर्षा पानी हो चुकी थी। माजी के दिन की दुनिया को पढ़ने वाला माजी के अलावा कोई नहीं था। दयोलाल रात भर नहीं आया।

सुबह जब मैं उठा मालूम हुआ कि भस मर चुकी थी। दयोलाल सुबह जब आया तब भस को मरी हुई देखकर तो दुःख हुआ ही किंतु माजी को छाट पर पड़ी देखकर और भी अधिक चिन्ता बढ़ी। दद की चोंगा से दयोलाल का कलेजा अधिक कठार बनता जा रहा था और घम कठारता का घोटक था उसका लाह की तरह का सिक्कता हुआ जाना शरीर तथा मधुहीन धँसती हुई वाली आँखें। पुरुष के पुस्तक का यही रूप होता है।

माजी ने भस की मौत की खबर सुनाई तो दयोलाल ने भाला में लती के बिनाग की बात बताई। इस प्रतिश्रिया स्वल्प दाना के चेहरे देगन लायक थे। ईश्वर के सहारे की बात कहकर दयोलाल ने माजी के हाथ की मज्ज देती। शरीर गरम सब की तरह जल रहा था। दयोलाल ने कहा, रात भर घूमती रही होगी। तेरी आत्मा है न। भस को मरना था तू बसे रोक सकती थी? भानीराम का दूढ़ने के लिए मुझे दूमरे सब जाना

पड़ा । मौसम खराब होने से रकना पड़ा, आ नहीं सका । वह क्या कर लेता ? मौत के आगे कौनसे चक्के होते हैं ? टूटी की बूटो नहीं ।' माजी को चाय पिलाने का आदेश देकर स्वयं चक्के के पास चला गया ।

इशोलाल की परिस्थितियों के साथ समझौता नहीं हो सका । समय के विकराल दात इशोलाल के परिवार को निगलने को तुने हुए थे । इशोलाल के पास ऐसी कोई शक्ति नहीं थी जो इस विवशता से निकाल सके । जहाँ भी हाथ डालना था वहाँ सोना मिट्टी हो जानी थी । बहते हैं कि पाप का परिणाम बुरा होता है । समाज की निगाह में इशोलाल ने कोई ऐसा दुष्कर्म नहीं किया, परमात्मा का माप-दण्ड कोई दूसरा हो तो बात दूसरी है । किन्तु समाज के नियम अपने होने हैं और परमात्मा के अपने । समाज अपने नियमों के उल्लंघन करने पर दण्डित करता है और ईश्वर अपने । ईश्वर के नियम विशेष देह रूप तक सीमित नहीं रहते होंगे । उनका सम्बन्ध आत्मा से होता है जो विभिन्न रूप धारण करती रहती है । सम्भवतः ईश्वर अपना विधान इसी प्रकार का रखता है । इस विधान के अनुसार ही इशोलाल किसी दण्ड का भागी हो सकता है ।

बाल म आपसे (मधुप जी) सम्पर्क रहा । किन्तु मधुपजी ने एक रहस्योदघाटन किया है जो मुझे दहलाने वाला है । उन्होंने मुझे बताया कि वे आपसे तिलो मे मिले और उन्होंने मेरे बारे म कुछ बतलाया । उनका मत है कि आपने मेरे पति को उन बातों का विवरण दिया होगा और स्थिति म इनका बिगाड आया ।

प्रकाशजः आप नारी हृदय को समझने का प्रयत्न करें । नारी का स्वभाव उसका पति होता है । मैंने भूल की है । मेरी वह भूल नारी के पूरा विकसित रूप का भूल नहीं है । जब मैंने भूल की वह मेरा कुमारी रूप था । प्रेम क्या है ? उसकी कितनी महत्ता है ? इस सम्बन्ध मे म पूरा अनजान थी । वह मेरे भालेपन का आवेग था और म उसम वह गई । मेरे विचारा के अपरिपक्व रूप ने अनजाने म ऊबड़ खाबड़ राह पकड ली तो मेरी उम भूल के इतने परिणाम नहीं होने चाहिए वे जितने हो रहे हैं । म मधुपजी को भी इसलिए दोष नहीं देना चाहती, क्योंकि भूल मेरी ओर से थी । पुरुष नारी को उपभोग की वस्तु मानता है । म जब उनके उपभोग के लिए अपने आपको प्रस्तुत कर रही थी तब वे चुकते ही क्या ? उनकी स्त्री म निश्चित रूप से नारी धम निभाया ।

मै अपने पति को प्यार करती हूँ । केवल नारी धम के नाते नहीं, किन्तु वास्तव म मुझे उनसे प्रेम है । यदि वे मुझे छोड रहे हैं तो मै अपने सवप्रिय की सींगध लाकर कहती हूँ कि मै उनका मूर्ति की पूजा करके अपना जीवनयापन करूँगी ।

आपने यदि उनको कुछ बतला दिया है तो यह आपका ही कर्तव्य हो जाता है कि आप मुझे इस मक्काठ से उबारें । यदि आपने

जब मैं लिकाफा खीसा तो सुया का पत्र देखकर आश्चर्यह्वित
मैंने पत्र पढ़ना शुरू किया —

श्रीगुरु प्रकाश जी,

आप गायद मेरा पत्र देसकर आश्चर्य चकित हुये। मुझे विवश
होकर पत्र खानना पड़ा। मेरे पति तथा आपके मित्र का पत्र मुझे मिला।
मैंने इससे पूछा कि पत्र उनको जाने और मुझे आज उनका पत्र मिला। पत्र
पढ़कर मुझे निराशा हुई।

आपको गायद पता होगा कि मैंने अपनी पुस्तक प्रमत्ता
प्रकाशनाथ भेज रखी है। आपको यह मानना होगा ही कि मधुप जी मुझे
इस कार्य में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। मेरे पास मधुप जी के पत्र भी आते
रहते हैं। अभी अभी मुझे एक पत्र मिला। मैंने अपनी स्थिति का पूर्ण
विवरण देकर उनको अवगत कराया। मैंने यह भी बतला दिया कि मेरे
पति को आपसे (मधुप जी) बड़ी चिड़ है। इसका कारण मैंने उनको केवल
यही बतलाया कि मैं कविता करती हूँ और मेरा आने योग्य के प्रारम्भिक

काल में आपसे (मधुष जी) सम्पर्क रहा । किन्तु मधुषजी ने एक रहस्योद्घाटन किया है जो मुझे दहलाने वाला है । उन्होंने मुझे बताया कि वे आपसे मिली भ मिले और उन्होंने मेरे बारे में कुछ बतलाया । उनका मत है कि आपने मेरे पति को उन बातों का विवरण दिया होगा और स्थिति में इतना बिगाड़ छाया ।

प्रकाशजी आप नारी हृदय को समझने का प्रयत्न करें । नारी का सर्वस्व उसका पति होता है । मैंने भूल की है । मेरी वह भूल नारी के पूर्ण विकसित रूप का भूल नहीं है । जब मैंने भूल की वह मेरा कुमारी रूप था । प्रेम क्या है ? उसकी कितनी महत्ता है ? इस सम्बन्ध में मैं पूर्ण अनजान थी । वह मेरे भोलेपन का आवेग था और मैं उसमें बह गई । मेरे विचारों के अपरिपक्व रूप ने अनजाने में ऊबड़ खाबड़ राह पकड़ ली तो मेरी उस भूल के इतने दुष्परिणाम नहीं होने चाहिए थे जितने हो रहे हैं । मैं मधुषजी को भी इसलिए क्षीण नहीं देना चाहती, क्योंकि भूल मेरी धोर से थी । पुरुष नारी को उपभोग की वस्तु मानता है । मैं जब उनके उपभोग के लिए अपने आपको प्रस्तुत कर रही थी तब वे झुकते ही क्या ? उनकी स्त्री न निश्चित रूप से नारी धर्म निभाया ।

मैं अपने पति को प्यार करती हूँ । केवल नारी धर्म के नाते नहीं, किन्तु वास्तव में मुझे उनसे प्रेम है । यदि वे मुझे छोड़ रहे हैं तो मैं अपने सवप्रिय की सींग-ध लाकर कहती हूँ कि मैं उनका भूति की पूजा करके अपना जीवनयापन करूँगी ।

आपने यदि उनको कुछ बनला लिया है तो यह आपका ही कृत्य हो जाता है कि आप मुझे इस गहनकाल से उबारें । यदि आपने

प्रेमलता

शुद्ध नहीं बतलाया तो भापको नारी हित को ध्यान में रखकर बात नहीं बनलानी होगी। इसके परिणाम मेरे लिए क्या हो सकते हैं यह भाप जानने हो है। मेरा यह धम नहीं था कि भापको पत्र डालूँ किन्तु परिस्थितियाँ ने मुझे विवश कर लिया।

भाप मुझे उपरोक्त पत्रों से पत्र लिखें और मेरे पत्र को धमो जलाकर राख कर दें। भापको नारी की योग्यता है।

भापको एक विवश बहन,

सुधा

पत्र को धूर धूर करके मने उसी समय अग्नि के हवाले कर दिया। मैंने नारी के प्रति अपना कृत्य निभा दिया। मुझे सुधा की विवशता पर सहानुभूति थी ही वह भी अधिक बड़ गई। मैंने अपनी विग्न घटनाओं पर सिंहावलोकन किया। मुझे कहीं भी त्रुटि नहीं दिखाई दी।

मैंने तुरन्त अपनी कलम उठाई और सुधा को एक पत्र लिख दिया -

विवश नारी,

मैंने ऐसी कोई त्रुटि नहीं की है और न ही कभी किसीसे तुम्हारे भविष्य पर कुप्रभाव पड़े। धन्यवाद।

तुम्हारा गुमास्ता,

प्रकाश

पत्र डालने के विचार से जब मैं सोढी से नाचे उतरा तो मुझे जो समाचार मिला वह गुम नहीं था। माजी की हालत खराब है' श्योन्गल ने कहा। मैंने मन में सोचा कि पत्र - माजी

दूंगा। मैं अविलम्ब पत्र डालकर वापिस आया तो समाचार मिल गया। माजी ने अपना जीवन त्याग दिया। माजी का शव बाहर भागन में टा दिया गया। श्योलाल फूट फूट कर रोने लगा। बच्चे विलबिलाने लगे। पुष्पा के बाद माजी भी गई और इस घर का सबसे बड़ा प्रकाश बुझ गया। श्योलाल भी मन्त्रणा का एक मात्र सहारा चला गया। घर का भागदशान लुप्त हो गया।

मुझे पुष्पा याद आ गई। एकदिन इस भागन में वह भी इसी प्रकार लिटाई गई थी और सभी से हम घर के दुर्भाग्य का सूत्रपात हुआ था। आज माजी भी गई। यह मौत है जो सभी को ले जाती है। हम जीवन के क्रम में एकमात्र भयावहो घटना घमीर और गरीब सबके लिए समान, प्रकृति का एकमात्र आधिपत्य इस वैभव और ऐश्वर्य पर करारा व्यग्य असाध्य दर्दों का अन्तिम आश्रय दासनिष्ठ के लिए नवजीवन का जागरण, प्राणवाना के लिए एक क्षणिक वैराग्य और फिर वही जीवन की भागदोड़, पट भरने के प्रयत्न, अथ एकत्रित करने के प्रयास झूठ सच, छल, कपट बेईमानी, धोखा, निरन्तर बेचनी से दिन रात, केवल जीवन के लिए और अन्त में यह मौत सब कुछ यही इमा धरातल पर। लोग कुछ दिन बात करत हैं अच्छे की अच्छाई और बुरे की बुराई और फिर भुलावट। अपनी बिल्ला से भी मुक्त नहीं होता इमान। किसको फुमत है गये हमों को याद करने की ? बड़े से बड़े चले गए और जा रहे हैं और यही सृष्टि का क्रम है और इसी प्रकार चलता रहेगा। पृथ्वी गोल है ये ग्रह भी गाल हैं और यह जीवन भी गोल है। यहाँ किसी का आदि नहीं, किसी का अन्त नहीं।

माजी का धूमधाम से अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ। वृद्ध की

मीन गुणी की बात मानी जाती है। गाँव के लगभग सभी लोग सम्मिलित थे। इमरान में अच्छी गायी भीड़ थी। मरने के बाद माँजी के गुण घोषित रूप में सामने आए। उसी दिन महमानों की भीड़ लग गई। मृत्यु भोज का व्यय हरीमिह और इयोनाल में बट गया। इस सब के भुगतान में 'योनाल' की बहू बिना मन्ना के हो गई।

घर गृहस्थी में विचार विमर्श के लिए माँजी का स्थान इयोनाल की बहू ने ले लिया। इयोनाल और उसकी बहू के सामने भविष्य की सारी तस्वीर थी। मोल सारी बेगी नष्ट कर ही चुके थे बसल बीम मन अनाज पल पड़ा। 'योनाल' सोच रहा था कि मैं अनाज का बसल दो बार महीने खसगा। अच्छा के लिए दूध की समस्या की पूर्ति माँजी की मृत्यु के तुरन्त बाद करना पड़ी। महमानों की आवश्यकता मोल के दूध से पार पड़ने वाली नहीं थी। हमारे लिए इयोनाल का बहू राति रात करनी पड़ी जा मुकद्दम के लिए छाड़ी थी। मुकद्दमा चल ही रहा था। बहील की बीम आने जाने का मर्चा, राममिह की रानी, जय-बाग की सिनाना निपाना आदि इनका था कि इयोनाल को मोचने के लिए बाध्य होना पड़ा। इयोनाल का बहू बिना मन्ना जा रही थी।

मरम्मे की स्थिति भी बड़ी बिगड़ था। प्रणिता की बहील इन

देगा और अपने मुकद्दम को ठीक राह देने के लिए पैसे के अलावा कोई साधन नहीं था। पतराम के आदमी तो अड़िग थे किन्तु वे भी दयालाल को सताते ही थे। उनका सामने दयालाल को झुकना पड़ता था और वे भी इस अवसर का लाभ उठाते थे। इससे भी दयालाल का आर्थिक हानि ही होती थी। इस प्रकार कुछ मिला कर दयालाल का ढाँचा बुरी तरह टग मगा गया।

एक दिन दयालाल ने घर वाली से कहा 'घरने मोहरे में एक कोठा बना लवें।

इस तगी में मकान कैसे बनेगा ?' घर वाली बोली। 'कोठा तो बनाना होगा और अपनी सारी तगी दूर हो जायगी।' दयालाल बोला।

'कोठा बनाने से तगी कैसे दूर होगी ?' घर वाली ने ना समझी के भाव में कहा।

दयालाल बोला, 'यह मकान बेचना हागा।'

दयालाल की बहू ने सलाह दी 'अच्छा है आप अपने पिताजी से पूछ लीजिए।

'दयालाल का अपनी बहू की बात अनुकूल लगी। वह अपने पिता हरीराम के पास गया। उसने अपने पिता से कहा, पिताजी आपने राय लेने आया हूँ।

हरीराम ने 'राम भज राम भज की अपनी सदा की रट के साथ कहा, 'हां बेटा, बोल।

घर में पसा नहीं रहा। दयालाल बोला 'उधार नहीं मिलता नहीं।

प्रेमलता

हरीराम बोला, 'तदमी बड़ी चपल होती है बेटा । वह किसी के पास स्थिर नहीं रहती । घर का काम चलना चाहिए ।

'घर का काम मुस्किल हो रहा है पिताजी ।' इमोलान बोला और उसने सारी स्थिति का पूरा विवरण दे दिया ।

सारी बात को हरीराम ध्यान से सुन गया और फिर माला फेरत हुआ बोला, 'तो इसका मतलब यह हुआ कि तू अपना घर बेचना चाहता है ।'

'और कोई चारा नहीं है पिताजी ।' इमोलान बोला ।

हरीराम का पारा चढ़ गया । वह बोला 'तुझे मालूम नहीं है कि यह जमीन और घर कैसे बने हैं ? तू इनको बेचना चाहता है । जमीन किसान की जिंदगी है । जमीन गई तो किसान की जिंदगी गई । घर आदमी की इज्जत है । तूने जमीन बेच दी तो जिंदगी बेच दी और अब घर बेच रहा है तो अपनी इज्जत बेच रहा है । तूने जिंदगी बेची मैं खुप रहा । अब इज्जत बेचना चाहता है । मैं खुप नहीं रहूँगा । घर मेरा है तारा नहीं । तू चाहता है कि मैं उसको छोड़कर चला जाऊँगा । तेरे साथ मारा मारा घूमूँगा । तू मेरी मिट्टी पत्तीत करना चाहता है । मैं यह नहीं होने दूँगा ।'

इमोलान के बात समझ में नहीं आई । वह बोला, 'पिताजी, इज्जत रहेगी कैसे ? वह तो वैसे ही जा रही है । पैसा नहीं होगा तो मुकद्दमा बिगड़ जायगा । राममिह को बँट हा जायगी । वकील को फीस देनी है । पुलिस वालों को राजी रखना है । मोता स खनी नष्ट हो ही गई । जो नुस्खा बचा था वह सारा लग चुका है ।

हरीराम शांत नहीं रह सका । वह अपनी बात पर अटल रहते हुए बोला, मन समझा कि ये छोकरे घर बसा लगे सकिन घर तो उमड़ रहा है । तुम्हें क्या जरूरत थी यह झगड़ करने की । इज्जत से रोटी मिल रही थी । फिर चला तू मुझमें बाजी म । अरे, एक हैवाने के साथ सभी हैवान हो जाते हैं क्या ? वह पतराम जो दाने दान के लिए तरस रहा था मैंने उस भूखे को रोटी दी थी । वह मेरी बान् नही मानता क्या । वह पुराने दिन नहीं भूल सकता । आदमी नमक खाकर नीचे देखता है और छूत खाकर ऊपर । मैंने उसको अपना नमक खिलाया है । मैं नही समझता कि वह तेरा विरोध कैसे करता है ?

इमोलाल अपनी विवशता को कैसे प्रकट करता ? वह अपने पिता की सामर्थ्य को समझता था कि तु वह सामर्थ्य इन बदलती परिस्थितियों में मूल्य हीन हो चुकी थी । इमोलाल ने अपनी प्रतिष्ठा अपने क्षेत्र में बनाई थी उसका रूप कुछ और था और हरीराम ने अपनी प्रतिष्ठा जिन परिस्थितियों में बनाई थी वह समय अब बदल चुका था । इमीलिए इमोलाल ने अपने पिता की बात का उचित मूल्यांकन नही किया था । अपने बाप के केवल अस्तित्व की इज्जत रखने के लिए ही उसने अपने बाप से बात की थी । उसे यह पता नहीं था कि इस शांत जल में भी बबडर भा सकता था । यह विरोध ही नहीं था कि तु एक ऐसी अदृक् थी जिसका समाधान नहीं मिल रहा था । बाप का खुले आम विरोध करना और उसकी बात को महत्व न देना भी इमोलाल नहीं चाहता था । वह चाहता था कि बाप केवल हा कहें । कि तु यह ही पिता के मुँह से कस निकाली जाय यह उसकी समझ से बाहर थी । अतः वह इतना ही बोला 'तो पिताजी, क्या कहें ?'

हरीराम ने उसी स्वर में कहा, क्या करे ? यह भी कोई समस्या है । नेतागिरी करते हैं । मोटी मोटी बातें करते हैं । सरपंच बन गए बम बादगाह बन गए । न घर की आन न परिवार की आन और न अपने माता पिता की आन । ऊपर का एक थोड़ा दिखावा । यह दुनिया सब जानती है । इंसान हैवान हो गया है । वह सम्यता की धमक धमक से अपनी कासिमा को ढकना चाहता है । लेकिन यह रग बच्चा है, जल्दी उतर आयेगा । तू अपने आपको इंसान मानता है और इंसानियत पर चलना चाहता है तो हैवान से डरता क्या है ? तू उससे डरता है तो तू अभी पक्का इंसान नहीं है । असली इंसान वह है जिसको देखकर हैवान अपने हथियार डाल दे । वह तुम्हारा बांधी नोछायाची म गया तो हैवान भाग खड़ा हुआ । कौनसा हथियार था उसके पास ? दुनिया ने आज तक वसा नमान नहीं दिया । बर पनराम, क्या कर रहा है वह ? मेरे बेटे राममिह ने क्या बिगाड़ा उसका ? बरबाद हुआ तो हमारा घर हुआ । बेगुनाह बहन मरी तो उसकी मरी और बदला ले रहा है पाराम । वह ऊत्राडना चाहता है तुम्हें ?

बूटा का गरीर कापने लगा । उसके कमजोर हाथ हिलने लगे और उसकी माला डगमगाने लगी ।

बूटा खाट से खड़ा हो गया और दयालाल का हाथ पकड़ कर बोला, 'जब मैं चलता हूँ तेरे साथ । क्या करता है वह ?'

दयालाल पिता के त्राघ का सामना करने में अपने आपको असमर्थ अनुभव कर रहा था । वह विराघ नहीं करना चाहता था कि तु वह दृढ़ भी बड़ा विचित्र था । स्कूल के बच्चों की सी बात यादी हो थी कि सामना सामना हुआ और निगारा हा गया । वह बटा बटा हा वाला

भाव चाहते हो कि मैं वहीं जाकर अपनी नाक रगड़ूँ।'

हरीराम का क्रोध कुछ गान्त हुआ कि तु भावनाओं में परिवर्तन के भाव उसके चेहरे पर नहीं आए। उसने कुछ धमपूरा शब्दों में कहा, 'बेटा, इंसान इंसानियत का साम्राज्य चाहता है और हैवान हैवानियत का। इंसान अपना राज कायम करने के लिए हैवान को बदलता है। उसकी प्रतिष्ठा यही है कि इंसानियत जीते। वह अधिक से अधिक इंसान बनायेगा। पतराम बुरा नहीं है। कोई भी आदमी बुरा नहीं होता। उसका शतान जागता है तो वह शतान बन जाता है और यदि शतान दब जाता है तो इंसान जागता है। मने दुनियाँ देखी है। एक का शतान जागता है तो दूसरे का भी इंसान दब जाता है। उसने शतान ने तेरे शतान को जगा दिया है। तू अपना इंसान जगा। उसका इंसान जहर जायेगा और फिर इंसान ही जीतेगा। तुझे वहाँ जाने में शय भाती है। तेरी प्रतिष्ठा घटती है। यही तेरा शतान है। तू इसको मार और मेरे साथ चल।

×

×

×

इयोलास और हरीराम पतराम की कोठी के समीप पहुँच गए। जब वे काठी के अहाते में घुसे, एक जोर का धमाका सुनाई दिया। यह धायद पिस्तौल या बंदूक के चलने की आवाज थी। इयोलास थोड़ा किभक्ता किंतु हरीराम ने उसे रुकने नहीं दिया। 'इंसान इन धमाकों से नहीं डरता, इयोलास। इंसान का शरीर मिटने से इंसान नहीं मिटता यह कहकर हरीराम इयोलास के साथ आगे चल पड़ा। भीतर प्रवेश करने से पहले भीतर से बोलाहल की भी आवाज आई। यह आवाज स्त्री की थी। इयोलास और हरीराम दोनों ने एक साथ कोठी में प्रवेश किया।

झहोने वहा एक विचित्र दृश्य देखा । पतराम नीचे मुह किए कुर्सी पर बैठा था । पतराम के बहू के हाथ में पिस्तौल था । सामने था दिनेश और उसके सामने थी सुधा जिसके गाद में बच्ची थी । हरीराम और द्योतलाल को देखकर भी पतराम का मुँह ऊँचा नहीं हुआ । वातावरण एकदम शांत हो गया । दोनों इस रहस्य को नहीं समझ सके । आखिर पतराम की बहू ने मौन भंग किया 'भाइये, देखिए इनका दिमाग खराब हो गया है । ईश्वर ने मुझे कुछ नहीं दिया । केवल यह दिनेश है जिसकी मैं अपना बेटा मानती हूँ । यह मेरा बेटा ही है । यह नाराज हुआ । फिर भी मेरे दिल में कोई फरक नहीं था । अपनी बहू को भी इसने निकाल दिया । खैर ! आज सुबह से ये इसके पीछे लगे थे । बयान दे दे, बयान दे दे ।' क्या बयान है इसके ? मैं नहीं समझी । एक महीने से झहोने नाक में दम कर रक्खा है । मैं बीमार रहती ही हूँ । इनकी मेरी परवाह थोड़ी ही थी । मैं भाई गई करती रही । आज ये दोनों जोर जोर से बोलने लगे । आखिर झहोने अपनी पिस्तौल सम्भाल ली । जब ये कमरे में लेने गए तब ही मुझे शक हो गया । मैं भी इसके पीछे पीछे आ गई । झहोने एकदम इसमें कारतूस डाल लिया । इतने में यह सुधा भी आ गई और दिनेश के आगे खड़ी हो गई । मैंने झटके से पिस्तौल इनके हाथ से छीन लिया और गोली चल पड़ी । ईश्वर की कृपा ऐसी हुई कि गाली छत पर लगी । देखिए, इनकी बरतून । मेरे जीवन में यही दो मूर्ख और चालू हैं । इनको सदा के लिए मिटा रहे थे ये । इतना कहकर पतराम की बहू फूट फूट कर रोने लगी ।

पतराम ने अपनी भाँखें ऊँची की और हरीराम के परा पर गिर

या। पतराम की आँखा से आँसू की दो बूँदें गिर पड़ी। 'माफ़ कर दा मुझे' पतराम की आवाज़ थी। इयालाल ने पतराम का उठाकर अपने गले लगा दिया।

निगा ने जब यह कहानी समाप्त की, सुधा भी वहाँ आ पहुँची। उनकी गोद में बच्ची थी और हाथ में थी एक पुस्तक। बच्ची को नेश की गोद में भेते हुए कहा दिनेश अब यह सुधा ही नहीं जननी है नेश, जननी के इस पुष्प का अंगीकार करो।

हवा ने सुधा की पुस्तक 'प्रेमलता के लो पत्ते उलट दिए। तीसरे पृष्ठ पर लिखा था—

भेंट, पुष्पा को।

दिनेश की आँखें डबडबा जाइ। ये स्नेहसिक्त आँसू पिता के थे। नों की आँखें मिली और मुस्कराने लगी।

कुछ दिनों के बाद ही मरा स्थानांतरण हो गया। मेरी पिनाई के समय इयालाल और पतराम पुष्पा प्रतिधि गृह से एक साथ मुझे बिगाई ले आए थे। रामसिंह का उसी दिन समाचार आया था कि वह कश्मीर नेफा मोर्चे पर चला गया।

वर्षों से इन प्रणिया से सम्पर्क छूट गया है। समाचार मिलते हैं कि वह बगीचा आज फूला में मुरझा है। उस समय भेंट का प्रान्त प्रेमलता अब भी मरे पाम पड़ी है। उसमें एक कविता मुझ बड़ी प्यारी मिली है 'नारी, तुम पूजनीय हो क्योंकि तुम जननी हो। प्रामिर। ● ● ●

